ॐ

ज्योतिष्-विज्ञान

(अथवा त्रिकालज्ञ ज्योतिषी)

—लेखक—

पं० विशुद्धानन्द गौड़ ज्योतिषाचार्य

प्रधान ज्योतिष् शास्त्राध्यापक श्रीराम संस्कृत विद्यालय

चटाई मुहाल, कानपुर

पण्डितों के लिये अत्यन्त उपयोगी पुस्तक

जिसमें विवाह आदि स...रों तथा अन्य

शुभ कार्यों के मुहूर्त देख...

आदि विचारने आ...

के सभी विषयों क...

स...

प्रकाशक—
देहाती पुस्तक भण्डार,
थोक पुस्तकालय,
चावड़ी बाजार, देहली।

❀ समर्पण ❀

प्रातःस्मरणीय, पूज्यचरण, विज्ञानवारिधि, काशीस्थ-गवर्नमेन्ट संस्कृत कालेज सरस्वती भवन पुस्तकालय के प्राचीन एवं अर्वाचीन ग्रन्थों के अनुसन्धान द्वारा वैज्ञानिक विषयों के अन्वेषणकर्ता—त्रिस्कन्ध ज्योतिष् शास्त्र के अपूर्व विशेषज्ञ तथा अनेक ग्रन्थों के निर्माणकर्ता मु० वनगांव पो० वरिआही जि० भागलपुर निवासी मैथिल-वंशावतंस श्री १०८ परम माननीय गुरुवर्य पं० श्री बलदेव मिश्र जी ज्योतिषाचार्य महोदय के पवित्र कर कमलों में अत्यन्त श्रद्धा के साथ सादर समर्पित—

पूज्य गुरुदेव !

आपके पवित्र चरणों में रह कर बनारस की अपनी अध्ययनावस्था में जो वस्तु प्राप्त की है, वास्तव में वह मेरे जीवन के स्तर को बराबर समुन्नत बना रही है और वह ज्ञान प्रदीप्त बराबर मुझे प्रकाश में ला रहा है और भविष्य में लावेगा। प्रस्तुत में उपस्थित "ज्योतिर्विज्ञान" नामक पुस्तक श्री करकमलों में समर्पित करते हुए यह लिखना सर्वथा उपयुक्त होगा कि—

"त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये"

यह आप ही की वस्तु आपके पवित्र कर कमलों में समर्पित करता हूँ। आशा है सेवक की अकिंचन कृति को स्वीकार करके और भी अन्यान्य सेवाओं के लिये मुझे आशीर्वाद देकर अनुगृहीत करेंगे।

आपका शिष्य

विशुद्धानन्द गौड़ ज्योतिषाचार्य
प्रधान ज्योतिष्-शास्त्राध्यापक श्रीराम संस्कृत विद्यालय
चटाई मुहाल कानपुर।

प्रारम्भिकं निवेदनम्

यः पञ्चभूतरचिते रहितः शरीरे,
छिन्नो यथेन्द्रियगुणार्थचिदात्मकोऽहम् ।
तेनाविकुण्ठमहिमानमृषिं तमेनम्,
वन्दे परं प्रकृतिपुरुषयोः पुमांसम् ॥१॥
"यस्य निश्वसितं वेदाः यो वेदेभ्योऽखिलं जगत्,
निर्ममे तमहं वन्दे विद्यातीर्थमहेश्वरं ॥

अर्थ—भारतवर्ष के ही लिये नहीं किन्तु संसार भर के लिये संसार की स्थिति एवं सत्ता में मुख्य कारण वेद श्री ब्रह्माजी का एक प्रधान स्वरूप माना जाता है-शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष् ये छः शास्त्र उसी वेद के अंगभूत माने जाते हैं वेद के छः अंगों में ही "वेदचक्षुः किलेदं स्मृतं ज्योतिषम्" ज्योतिष् शास्त्र वेद का नेत्र कहलाता है। प्राचीन महर्षियों ने इस ज्योतिष् शास्त्र को भी तीन भागों में विभक्त किया है (१) होरा अथवा जातक ज्योतिष् (२) सिद्धान्त ज्योतिष् (३) संहिता ज्योतिष् इन्हीं तीनों भेदों से ज्योतिष् शास्त्र को त्रिस्कंध ज्योतिष् के नाम से संकेतित किया जाता है—इसको काल-विधानशास्त्र भी कहा जाता है।

वेदा हि यः [illegible] भिप्रवृत्ताः, कालानुपूर्वा विहिताश्च यज्ञाः ।
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिष वेद स वेद यज्ञान् ॥

इससे यह बात स्पष्ट है कि भारतीय आर्यों के सम्पूर् संस्कार एवं यज्ञदान आदि धर्मानुष्ठान एवं व्रत आदि समर

कार्य कलाप ज्योतिष शास्त्र के शुद्ध तिथ्यादि तथा शुद्ध पर्व ग्रहण लग्नादिकों पर ही अवलम्बित है। ज्योतिष् शास्त्र की विशेषता यही है कि —

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि स्थितम ॥
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्र मुच्यते।

अर्थ—जैसी मोर की चोटी नागों की जैसी मणि वैसा ही वेदों का अंग शास्त्र उसमें भी ज्योतिष् शास्त्र शिर है शिर में प्रधान आँख हैं ज्योतिष आँख है निरुक्त कान है—जिस प्रकार न्यायाधीश गवाह देख सुनकर मुकदमे का न्याय करते हैं और जिस भाँति बिना गवाह के न्याय ठीक २ नहीं हो पाता, यदि होता भी है तो एकतर्फा इसी भाँति वर्ष कुण्डली के बिना वर्षफल कहा जाय तो गलत होगा। वर्ष पत्री के ग्रह गवाह के समान हैं। अतः कौन २ ग्रह जन्म ग्रहों से कैसा २ सम्बन्ध रखते हैं, बलाबल कैसा है, जन्म दशादि शुभाशुभ फल की पुष्टि करते हैं अथवा काटते हैं यह पूर्ण विचार कर तब फल निकालना चाहिए।

यास्काचार्य ने निरुक्त में लिखा है—

"कर्मणो मुख्यं फलमनुभूय तस्य संक्षये पुनरिमं लोकं प्रतिपद्यते"

अर्थात्—पुण्य क्षीण होने पर मनुष्य इस लोक में जन्म लेता है—और गीता में भी भगवान् कृष्ण ने कहा है—

—क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशंति—

पूर्वजन्म में अच्छा या बुरा जो कर्म किया जाता है वह ही

इस जन्म में भोगा जाता है यही कारण है कि ग्रह दो प्रकार के हैं एक शुभ और दूसरे अशुभ। सुकृत शुभ तथा दुष्कृत पाप ग्रहों के योग से भोगा जाता है। शुभ ग्रहों में सत्वांश अधिक होने से आजकल इस युग में उनका फल कम मिलता है। युग के समान जो ग्रह चलेगा व जिसकी कुण्डली में वह ग्रह कारक होगा उसे सुख देगा यदि धन का योग पड़ा है तो चाहे न्याय से मिले या अन्याय से पर मिलेगा अवश्य। जिसके ग्रह सत्वांशी पड़े हैं वह चाहे जितना जाड़ा पड़े परन्तु नहा धोकर शुद्धता से भोजन करेगा और ठीक इससे विपरीत, जिसके राजसी व तामसी पड़े हैं वह जूता पहने ही भोजन करेगा, वह धर्म कैसे कर सकता है। इन दोनों मनुष्यों के सुख में कितना बलाबल है। सत्वांश ग्रहों के योग से आजकल धनादिक सुख अतिन्यून होते हैं। पराशर ऋषि ने कहा है—आजकल तामसी ग्रह युग के सदृश फल अवश्य करते हैं अतः पण्डितजन बहुत सोच विचार कर इनके योग से फलों को कहें।

ललाटपट्टे लिखितं विधात्रा षष्ठे दिने साक्षरमालिका च।
तां जन्मपत्रीं प्रकटीं करोमि दीपो यथा वस्तुघनान्धकारः॥

अर्थात् जिस प्रकार अन्धकार में दीपक जला कर देखा जाता है उसी प्रकार भाग्य का लिखा कुण्डली द्वारा जाना जा सकता है। उत्पन्न हुए बालक को षष्ठी के दिन ब्रह्मा ने उसके भाग्य में जो कुछ लिख दिया है उसे जन्म पत्री उसी प्रकार प्रकट कर देती है जिस प्रकार अन्धकार में रक्खी हुई वस्तु को दीपक खुलासा दिखा देता है।

शास्त्र ने युगधर्म कालधर्म भी अति सूक्ष्म रीति से बताये हैं, जो केवल शास्त्र रटने से नहीं आता अपितु गुरु की कृपा से अपने प्राकृतन जन्मसंस्कार से भगवत् कृपा से ही प्राप्त होता है।

प्रस्तुत पुस्तक में पाठकों के लिए ज्योतिष् शास्त्र सम्बन्धी विज्ञान साररूप में सरल भाषा में इस प्रकार लाया गया है जिस प्रकार सागर को गागर में लाना एक प्रकार से कहा जा सकता है।

यह पुस्तक वास्तव में प्रत्येक भारतीय को ज्योतिष् शास्त्र के आवश्यक ज्ञान के हेतु पास में रखनी चाहिए और पूरा परिशील करके इस से लाभ उठाना चाहिए।

पण्डित विशुद्धानन्द जी गौड़ ज्योतिषाचार्य करीब ११ वर्ष तक मेरे साथ श्रीराधाकृष्णसंस्कृतविद्यालय खुरजा, में ज्योतिष्-शास्त्र के प्रधानाध्यापक रह चुके हैं। मैं इन की योग्यता विद्वत्ता एवं अपने विषय की पूर्ण प्रौढ़ता से पूर्ण परिचित हूं। आशा है, पाठक प्रस्तुत पुस्तक को भली भाँति परिशीलन करके लाभ उठा कर लेखक के परिश्रम को सफल बनायेंगे और "गच्छतस्स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः। हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः" इस न्याय से लाभ उठाते हुए सम्पादक की और भी बहुत सी कृतियों को मंगाकर ज्योतिष्-शास्त्र के आनन्द का अनुभव करेंगे।

पं० ब्रह्मानंन्द शुक्ल साहित्याचार्य, कविरत्न,
साहित्यविभागाध्यक्ष श्रीराधाकृष्णसंस्कृत कालेज खुरजा, यू०पी०

———

आभार-प्रदर्शनम्

प्रिय पाठकवृन्द !

आप लोगों की सेवा में अपने "ज्योर्तिविज्ञान" नामक ग्रन्थ को भेंट करते हुए मुझे यह लिखने की आवश्यकता नहीं है कि इस में क्या २ विषय किस २ हृदय से दिया गया है। क्यों कि प्रत्यक्ष में उपस्थित विषय का विवेचन अनावश्यक है। पाठक स्वयं अनुभव करेंगे कि उन्हें किस वस्तु की आवश्यकता थी और उसकी प्राप्ति किस अंश में उन्हें मिली है। वस्तुतः मुझे यह लिखते हुए प्रसन्नता है कि उक्त प्रस्तुत ज्योतिर्विज्ञान को आप लोगों के हाथों में पहुंचाना और उसको प्रकाश में लाने के लिए मेरे पास दो ही साधन हैं।

(१) विद्यारसिक, गुणग्राही एवं विद्वानों के प्रियपात्र, प्रोप्राइटर देहाती पुस्तक भण्डार ला० मूलचन्दजी उनमें एक हैं, जिन्होंने बड़ी सहृदयता के साथ और बड़ी उत्सुकता से परिश्रम एवं मनोनियोग से पुस्तक के प्रकाशन में हाथ बटाया है।

(२) दूसरे मेरे प्रिय शिष्य पण्डित विश्वेश्वर शर्मा मिश्र ज्योतिष-शास्त्री व्यवस्थापक तथा प्रबन्धक श्री विशुद्धपंचांग ज्योतिष कार्यालय, सिरकी मुहाल ५६/१३ कानपुर हैं जिन्होंने मुझे

पूरा सहयोग सहायता देकर पुस्तक को साधु एवं सर्वाङ्ग सुन्दर बनाने में पूरा हाथ बंटाया है। इसके लिए मैं प्रकाशक महोदय का एवं अपने प्रिय शिष्य पं० विश्वेश्वर शर्मा के लिए हृदय से कृतज्ञता प्रकाशित करता हूं और विश्वास रखता हूं कि उक्त दोनों सहयोगियों के सहयोग से मैं शीघ्र ही श्री जनता जनार्दन की अन्यान्य बहुत सी सेवाओं के लिए भी बराबर अपने हृदय में पूर्ण उत्साह रखता हूं तथा यह भी प्रकाशित करते हुए मुझे प्रसन्नता है कि निकट भविष्य में और भी विशेष कृतियां आप लोगों की सेवा में शीघ्र उपस्थित होंगी। आशा है प्रस्तुत में उपस्थित पुस्तक को पाठकगण साङ्गोपाङ्ग परिशीलन करके लाभ उठावेंगे।

निवेदक

पं० विशुद्धानन्द गौड़ ज्योतिषाचार्य
प्रधान ज्योतिष् शास्त्राध्यापक
श्रीराम संस्कृत विद्यालय
चटाई मुहाल, कानपुर।

ज्योतिष्-विज्ञान

विषय-सूची

प्रथमोऽध्यायः

द्वितीयोऽध्यायः

मुहूर्त प्रकरण

तृतीयोऽध्यायः (यात्रा प्रकरणम्)

मेषादि बारह लग्नों के कारक मारक योग

ताजिक प्रकरणम्

जातकाऽध्यायः

* श्री *

ज्योतिष-विज्ञान

मङ्गलाचरणम्

विघ्ननाशकं तोषकं सज्जनानां सुखंदर्शयन्तं सुधा मंजनानाम् ।
सदा दुःख सन्दोह्वायमानाः जनाः यं भजन्ते भजे तं गणेशम् ॥१॥

पंचाङ्ग बोध नाम प्रथमोऽध्याय

पञ्चांग देखने और जानने की सरल विधि—

तिथिवारं च नक्षत्रं योगः करणमेवच ।
यत्रैत्तत्पंचकं मिश्रं पंचागं तदुदीरितम् ॥

(१) प्रतिपदा आदि १५ तिथियां (२) रविवार आदि सात वार (३) अश्विनी आदि नक्षत्र (४) विष्कुम्भ आदि योगो (५) व व आदि करणों के सम्बन्ध में ग्रहों के द्वारा विशेष ज्ञान जिसमें मिला हुआ हो उसे पंचांग कहते हैं। सूर्य, चन्द्रमा, मङ्गल, बुद्ध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु, इन्द्र, (नेपच्यून) वरुण (हर्षल) ये ११ ग्रह नवीन तथा प्राचीन मतानुसार माने गये हैं। जिनका प्रभाव समस्त भूमण्डल पर पड़ता है। इनग्रहों की गति विद्या का समस्त विज्ञान पंचाङ्ग विधि द्वारा (त्रिस्कन्ध ज्योतिष शास्त्र) से ही होता है। जिसका संक्षिप्त

परिचय प्रत्येक भारतीय को होना परमावश्यक है। आकाश मण्डल के इस सौर जगत में "तेजसां गोलकः सूर्योग्रहर्क्षाण्यम्बुगोलकाः। प्रभावन्तोहि दृश्यन्ते सूर्य रश्मि प्रदीपिताः" सूर्य तेज का एक समूह है जो प्रधान ग्रह माना गया है। और चन्द्रमा आदि उपग्रह जल के गोलक हैं जो सूर्य की रश्मियों द्वारा प्रकाशित होते हैं। उनमें स्वतः अपना कोई प्रकाश नहीं है। आकाशमण्डल में सूर्य देव जिस मार्ग से नित्यप्रति अपनी चाल से चलते हुए परिक्रमा करते हैं, उस मार्ग को क्रान्ति वृत कहते हैं। सूर्य मध्यम चाल से १ दिन में १ अंश से कुछ कम (५६ कला ८ विकला १० प्रति विकला २१ पर विकला) चलकर क्रान्ति वृत के ३६० अंशों को ३६५ दिन १५ घड़ी में अपनी एक परिक्रमा से पूरा करते हैं। यही सौर वर्ष का मान है अतएव ४ वर्ष के उपरान्त ३६६ दिन का सौर वर्ष होता है। भूमेः समन्ताद्‌अण्डस्थ भूगोलो व्योम्नि तिष्ठति-बिभ्राणः परमां शक्ति ब्रह्मणो धारणात्मिकाम्" सूर्य सिद्धान्त के इस कथन से भूमि ब्रह्मा की धारणात्मिका शक्ति द्वारा आकाश के बीच में स्थित है। और सूर्य देव भूमि के चारों ओर अपनी कक्षा में परिक्रमा करते रहते हैं।

उस कक्षा के १२ भाग किये गये हैं। और उन १२ भागों को यन्त्रों द्वारा देखा भी गया है। जैसा स्वरूप तथा आकार उनका देखने में आया उसी आकार तथा स्वरूप के आधार पर उनका नाम वैसा ही रख दिया गया। जो मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मीन, इन नामों से उनकी सारी संज्ञा प्रचलित हुई है। इन्हीं बारह राशियों के नाम से बारह मास भी संज्ञा में आये हैं। जब मेषराशी में सूर्य का प्रवेश हुआ तो वह मेष की संक्रान्ति कहलाई और उसी प्रवेश काल से सौर वर्ष का आरम्भ हुआ। इस प्रकार बारह राशियों के सूर्य के सम्पूर्ण भोग मान से सौर वर्ष की पूर्ति होती है। एक रशि ३० अंशों की होती है।

मास तथा दिन व्यवस्था

भारतीय हिन्दु गणितशास्त्रों के मतानुसार भारत में तीन प्रकार के दिन तथा मासों की गणना प्रचलित है। (१) सौर दिन एवं सौर मास (२) चान्द्रदिन एवं चान्द्रमास (३) सावन दिन एवं सावनमास। इन तीनों प्रकार के दिन एवं मासों की परिभाषा इस प्रकार से है। सूर्य की किसी एक राशि के संक्रान्तिकाल से दूसरी राशि के संक्रान्ति काल तक जो एक मास होता है उसे सौरमास कहते हैं। सूर्य की एक राशि अथवा ३० अंशों की पूर्ति का यह काल है। इसी के अनुसार सूर्य की एक अंश की पूर्ति काल को सौर दिन कहते हैं। सौरमास एवं सौरदिन सूर्य की गति के अनुसार न्यूनाधिक होते हैं। कोई सौर मास २९ सौर दिन का कोई ३० कोई ३१ तथा कभी कभी ३२ तक के भी होते हैं। इस प्रकार के सामान्य विचार से एक सौर वर्ष का मान ३६५ दिन १५ घड़ी ३० पल २२ विपल का होता है।

चान्द्र दिन तथा चान्द्र मास

चान्द्र मास चन्द्रमा की गति के आधार से बनता है। "दर्शः सूर्येन्दुसंगमः" इस नियम से अमावस्या में सूर्य चन्द्रमा एक राशि में होते हैं।

महत्वान्मण्डलस्यार्कः स्वल्पमेवापकृष्यते।
मण्डलाल्पतयाचन्द्रस्ततो बह्वपकृष्यते ॥१॥

सूर्य सिद्धान्त के इस मतानुसार चन्द्रमा का मण्डल बहुत छोटा है और बहुत हलका है। वह अधिक खिंच जाता है, इस वास्ते चन्द्रमा की गति बहुत तेज है। सूर्य का मण्डल बहुत अधिक और बहुत भारी है इस वास्ते वह कम खिंचता है। इस वास्ते चन्द्रमा की अपेक्षा सूर्य की गति मन्द है। चन्द्रमा अमावस्या में सूर्य से योग

करके अपनी तेज गति द्वारा सूर्य के साथ सम्बन्धित हो कर फिर गत्यन्तर से भ्रमण करता हुआ जितने समय में आकर पुनः मिलता है उस समय को चान्द्रमास कहते हैं। यह चान्द्रमास इस प्रकार से २६ दिन ३१ घड़ी ५० पल का होता है। इस वास्ते यह चान्द्रमास अमावस्या तक का ही होता है तिथ्यन्त से अगली तिथि के अन्ततक एक चान्द्रदिन होता है। अतः

कालेन येनैति 'पुनः शशीनं क्रामन्भचक्रं विवरेणगत्योः।
मासः सचान्द्रोऽकं यमाः कुरामा. पूर्णोषवस्तत्कुदिन प्रमाणम् ॥

ऐसा माना है। आधुनिक यूरोपियन उसे २६ दिन का ही चान्द्रमास मानते हैं। अधिक सूक्ष्म गणना से वह २६ दशमलव ४३०५८८७ दिन का होता है। तिथ्ययन्त से तिथ्यन्त तक जो चान्द्रदिन का प्रमाण होता है, वह चान्द्रमास के अपने तीसवें भाग अथवा अपने मास की अपनी १ राशि के ३०वें भाग अथवा अंश की पूर्ति के भाग को चान्द्रदिन कहते हैं।

सावन दिन तथा सावन मास

"त्रिंशद्दिनः सावन मास एवं" इस वचन से सावन मास ३० दिन का ही होता है। सावन मास के तीसवें अंश अथवा भाग को सावन दिन कहते हैं। सूर्योदय से लेकर अगले दिन सूर्योदय तक के काल की सावन दिन संज्ञा है।

सावन दिन बड़ा होता है चान्द्र दिन छोटा होता है। गणित द्वारा आये हुए तिथि के प्रमाण से मान होता है। चान्द्र दिन के प्रमाण को सावन दिन के प्रमाण में घटा देने से जो काल बचता है उसे अवम शेष कहते हैं।

तिथ्यन्त सूर्योदययोस्तुमध्ये सदैव तिष्ठत्यवमावशेषम्

अवम एक दिन के चान्द्र सावन के अन्तर से बनता है। इसी

व्यवस्था से एक मास तक प्रत्येक दिन का अवम शेष जुड़ते २ एक मास में एक दिन के लगभग अन्तर पड़ जाता है जिसको अधिशेष कहते हैं। यही मान अमान्त से संक्रान्ति के बीच में भी रहता है जिसकी अधिमास शेष संज्ञा है।

दर्शाग्रत संक्रम कालतः प्राक् सदं वतिष्ठत्यधिमास शेषम्

यह अधिमास शेष जुडते२ करीब तीन वर्षों में जाकर एक मास बन जाता है जिसको मल मास कहते हैं।

द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासैः दिनैः षोड्षभिस्तथा।
घटिकानां चतुष्केण पततिह्यधिमासकः ॥

इस वास्ते ३२ मास १६ दिन ४ घड़ी पूरा होने पर १ मास बढ़ जाया करता है जिसको अधिक मास अथवा मल मास कहते हैं।

अयन

मेष राशि के संक्रमण काल से लेकर सूर्यदेव अपने सौर वर्ष के आधे समय तक भूमध्य रेखा के उत्तर भाग में और आधे समय तक मध्य रेखा के दक्षिण भाग में रहते हैं। इसलिये सूर्य के मेष राशि से क२४ 'राशि के अन्त के कुछ मासों तक चलने के मार्ग को उत्तर-गोल कहते हैं। इसी प्रकार तुला राशि की संक्रान्ति के आरम्भ काल से मीन के छः मासों तक के मार्ग को दक्षिण गोल कहते हैं। एवं मकरराशि के आरम्भ काल से मिथुनराशि के अन्त तक छः मासों तक सूर्य के भोग काल को उत्तरायण और कर्क संक्रान्ति के आरम्भ से धन राशि के अन्त तक के छः मासों के सूर्य के भोग काल को दक्षिणायन कहते हैं। उत्तरायण के छः मासों का देवताओं का एक दिन और दैत्यों की एक रात्रि तथा दक्षिणायन के छः मासों की देवताओं की रात्रि और दैत्यों का एक दिन होता है। इस प्रकार हमारा समस्त सौर वर्ष देवताओं का एक अहोरात्र होता है। सूर्य के उत्तरायण होने

से दिन बढ़ता है और रात्रि का मान कम हो जाया करता है और दक्षिणायन में ठीक इसके विपरीत हुआ करता है। उत्तरायण में सभी माङ्गलिक कार्य प्रशस्त माने गये हैं। दक्षिणायन में केवल पितृ-कार्य ही प्रशस्त माने गए हैं।

ऋतु

मृगादि राशि द्वयभानुभोगात् षट्कं ऋतूनां शिशिरो वसन्तः।
ग्रीष्मश्च वर्षा शरदश्च तद्वद्धेमन्तनामा कथितोऽत्रषष्ठ ॥१॥

संक्रान्ति से लेकर दो दो मास की छः ऋतुएं होती हैं। मकर कुम्भ की सन्क्रान्ति के दो मासों में शिशिर ऋतु, मीन मेष में बसन्त, वृष मिथुन में ग्रीष्म, कर्क सिंह में वर्षा, कन्या तुला में शरदऋतु, वृश्चिक तथा धन में हेमन्त, ऋतु होती है। इसलिए सूर्य की संक्रान्ति के मास का अच्छी प्रकार ध्यान रखना परमावश्यक है। इसका बहुत उपयोग होता है।

सोलह तिथियों के भेद तथा संज्ञाएं

१ प्रतिपदा, २ द्वितीया, ३ तृतीया, ४ चौथ (चतुर्थी), ५ पंचमी, ६ षष्ठी, ७ सप्तमी, ८ अष्टमी, ९ नवमी, १० दशमी, ११ एकादशी, १२ द्वादशी, १३ त्रयोदशी, १४ चतुर्दशी, १५ पूर्णि-मासी, ३० अमावस्या। इन तिथियों में १ पड़वा, ६ षष्टि, ११ एका-दशी, ये नन्दा तिथि हैं। २ दोयज, ७ सातें, १२ द्वादशी ये भद्रा तिथि हैं। ३ तीज, ८ आठें, १३ त्रयोदशी ये जया तिथि हैं। ४ चौथ, ९ नवमी, १४ चौदश ये रिक्ता तिथि हैं। ५ पंचमी, १० दशमी, १५ पूर्णिमासी ये पूर्ण तिथि हैं।

सात वारों के नाम

१ रविवार, २ चन्द्रवार, ३ भौमवार, ४ बुधवार, ५ गुरुवार, ६ शुक्रवार. ७ शनिवार। ये सात वार होते हैं। सृष्टि का आरम्भ रविवार से बना है इस वास्ते रविवार से गणना चलती है।

पक्ष

एक महीने के दो पक्ष हुआ करते हैं। १ कृष्णपक्ष, २ शुक्ल पक्ष। अंधेरी रात के पक्ष को कृष्ण पक्ष और चान्दनी रात के पक्ष को शुक्ल पक्ष कहते हैं। अन्धेरे पक्ष को बदी और उजाले पक्ष को शुदी का पक्ष कहते हैं।

२८ अट्ठाईस नक्षत्रों की संज्ञा

जिस प्रकार ग्रहों की परिभाषा ग्रह्णातीति ग्रहः ग्राहकता शक्ति होने के कारण तथा गतिशील होने के कारण ग्रह नाम पड़ा है इसी प्रकार जिन तेज पुंजों का आकाश में अपने स्थान से तनिक भी संचलन उपलब्ध नहीं होता है। नक्षरतीति नक्षत्र नाम से संकेतित किये गए हैं जिन की संख्या २८ है। इन नक्षत्रों के नाम निम्नलिखित हैं। १ अश्विनी २ भरणी ३ कृतिका ४ रोहणी ५ मृगशिरा ६ आर्द्रा ७ पुनर्वसु ८ पुष्य ९ श्लेषा १० मघा ११ पूर्वाफाल्गुनी १२ उतरा फाल्गुनी १३ हस्त १४ चित्रा १५ स्वाति १६ विशाखा १७ अनुराधा १८ ज्येष्ठा १९ मूल २० पूर्वाषाढ २१ उत्तराषाढा २२ अभिजित २३ श्रवण २४ धनिष्ठा २५ शतभिषा २६ पूर्वा भाद्रपदा २७ उतराभाद्रपदा २८ रेवती।

नोटः—हमारे भारतवर्ष में १२ मासों के नाम महर्षियों ने उपरोक्त नक्षत्रों के नाम से चालू किये हैं। पूर्णमासी में जो नक्षत्र सम्बन्ध रखता है उसी नाम से यह संज्ञा बनी है। चैत्र की पूर्णमासी में चित्रा नक्षत्र होने से इसका नाम चैत्र रखा गया है। विशाखा नक्षत्र पूर्णिमासी में रहने से वैशाख नाम पड़ा है। ज्येष्ठा से ज्येष्ठ, पूर्वाषाढ से आषाढ, श्रवण से श्रावण, पूर्वाभाद्रपदा से भादों, अश्विनी से आश्विन, कृतिका से कार्तिक, मृगशिरा से मार्गशीर्ष, पुष्य से पौष, मघा से माघ, पूर्वाफाल्गुनी से फाल्गुन रखा गया है।

पंचक संज्ञा

अन्त के पांच नक्षत्र जिनकी गणना धनिष्ठा से होती है (१) धनिष्ठा (२) शतभिषा (३) पूर्वाभाद्रपदा (४) उत्तराभाद्रपदा (५) रेवती ये पंचक कहलाते हैं।

२७ योग तथा उनकी संज्ञा

विष्कुम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा।
अतिगण्डः सुकर्मा च धृतिशूलस्तथैव च ॥ १ ॥

गण्डोवृद्धिध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा।
वज्रं सिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान 'परिघः शिवः ॥२॥

सिद्धिःसाध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्म चैन्द्रोऽथ वैधृतिः।
सप्तविंशतिराख्याता नामतुल्यफलप्रदाः ॥३॥

१ विष्कुम्भ २ प्रीति ३ आयुष्मान ४ सौभाग्य ५ शोभन ६ अतिगण्ड ७ सुकर्मा ८ धृति ९ शूल १० गंड ११ वृद्धि १२ ध्रुव १३ व्याघात १४ हर्षण १५ वज्र १६ सिद्धि १७ व्यतीपात १८ वरीयान १९ परिघ २० शिव २१ सिद्धि २२ साध्य २३ शुभ २४ शुक्ल २५ ब्रह्म २६ ऐन्द्र १७ वैधृति

नोट—योग-सूर्य चन्द्रमा की युति के आधार पर बनते हैं वास्ते इनका नाम योग रखा गया है।

एकादश करणानि तथा उनकी संज्ञाएं

१ बव २ बालव ३ कौलव ४ तैतिल ५ गर ६ वणिज ७ विष्टि ये सात चर संज्ञा वाले करण होते हैं। ८ शकुनि ९ चतुष्पद १० नाग ११ किंस्तुघ्न ये चार करण स्थिर संज्ञा वाले होते हैं।

नोट—वव आदि उपरोक्त ११ करणों में से विष्टिकरण का नाम भद्रा है एक बार देवता और दैत्यों में बड़ा भारी युद्ध हुआ—देवताओं

के हारने लगने पर शिवजी ने क्रोध करके गर्दभमुखी एक भयंकर स्त्री प्रेत पर चढ़ी हुई प्रकट की उसने तब दैत्यों का वध करके देवताओं का (भद्र) कल्याण किया इस वास्ते उसका नाम भद्रा हुआ। यात्रा तथा शुभ कर्मों में भद्रा का विचार किया जाता है इसका वास कृष्णपक्ष की तृतीया और दशमी को परदल में (आधी तिथि बीतने पर) और कृष्णपक्ष की सप्तमी १४ चौदश को पूर्वदल में शुक्लपक्ष की ११ एकादशी चतुर्थी को परदल में और अष्टमी पूर्णिमा को पूर्वदल में भद्रा रहती है इस भद्रा के समय में भी कोई शुभ कार्य नहीं करना चाहिए। "भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा इस नियम से उपाकर्म तथा होलिका दहन में तो भद्रा का सर्वथा निषेध है।

भद्रा का श्लोक

दशाम्यांच तृतीयायां कृष्णपक्षे परे दले।
सप्तम्यां च चतुर्दश्यां विष्टिः पूर्वदले स्मृता॥
एकादश्यां चतुर्थ्याञ्च शुक्लपक्षे परे दले।
अष्टम्यां पूर्णिमायांच विष्टिः पूर्वदले स्मृता॥

नोट—इसका अर्थ ऊपर आ गया है।

भद्रावास ज्ञानम्

मेष मकर वृष कर्कट स्वर्गे कन्या मिथुन तुलाधन नागे।
कुम्भ मीन अलि केसरि मृत्यौ विचरति भद्रा त्रिभुवन मध्ये॥

अर्थ—मेष मकर वृष कर्क इन राशियों के चन्द्रमा में स्वर्गलोक में। कन्या मिथुन तुला धन इन राशियों के चन्द्रमा में पाताल लोक में और कुम्भ मीन वृश्चिक सिंह इन राशियों के चन्द्रमा में मृत्युलोक में भद्रा वास करती है।

भद्रावास फलम्

स्वर्गे भद्रा शुभं कार्यम् पाताले च धनागमः।
मृत्युलोके यदा विष्टिः सर्वं कार्यं विनाशिनी॥

अर्थ—यदि भद्रा स्वर्गलोक में हो तो सब कार्य शुभ होते हैं पाताल में हो तो द्रव्य लाभ होय यदि मृत्युलोक में हो तो सब कार्यों का विनाश होवे।

भद्रा मुख ज्ञानं तथा फलम्

सम्मुखे मृत्युलोकस्था पातालेच अधोमुखी।
उर्ध्वस्था स्वर्गगा भद्रा सम्मुखे मरणप्रदा॥

अर्थ—मृत्यु लोक में भद्रा होय तो सम्मुख-पाताल में अधोमुखी स्वर्ग में ऊर्ध्वमुखी होती है। सम्मुख भद्रा का मुख होवे तो मृत्यु को देने वाली होती है।

दिन रात्रि भेद से भद्रा का परिहार

दिवा भद्रा यदा रात्रौरात्रि भद्रा यदा दिने।
तदाविष्टिकृतोदोषो न भवेसर्वसख्यदा॥

अर्थ—यदि कृष्ण पक्ष में सप्तमी-चतुर्दशी की भद्रा और शुक्ल में अष्टमी पूर्णिमासी की पूर्वदल की भद्रा रात्रि में आवे और शुक्ल पक्ष में ४।११ कृष्ण पक्ष में ३।१० परदल की भद्रा (रात्रि संज्ञक) यदि दिन में आवे तो भद्रा का दोष नहीं होता है ऐसी भद्रा सुख को देने वाली होती है।

ग्रहों की गतिः

भिन्न भिन्न ग्रह भिन्न २ समय में अपनी प्रगति द्वारा १२ राशियों में भ्रमण करते हैं। यह ग्रहों का राशि में रहना कहलाता है। सूर्य चन्द्र कभी वक्री नहीं होते हैं। राहु केतु सदा वक्री रहते हैं। सूर्य एक राशि में अपनी गति द्वारा १ मास में और चन्द्रमा २। सवा दो दिन में मङ्गल १॥ मास में बुध १ मास में गुरु १ वर्ष में शुक्र १ मास में शनि २॥ वर्ष में राहु १॥ वर्ष में भोग करता है।

सूर्य,·चन्द्रमा-मंगल-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनि-राहु-केतु ये नौ ग्रह होते हैं। नेपच्यून तथा हर्षल दो नवीन ग्रह जिनको पुराने महर्षि लोग वरुण तथा प्रजापति के नाम से पुकारते थे, माने जाते हैं।

ग्रहों की शुभ तथा अशुभ संज्ञा

सूर्य तथा क्षीण चन्द्रमा-मङ्गल-शनि राहु-केतु ये अशुभ ग्रह अर्थात् पाप ग्रह होते हैं। पूर्ण चन्द्रमा-बृहस्पति-शुक्र ये शुभ ग्रह होते हैं, बुध यदि पाप ग्रहों के साथ रहता है तो पाप ग्रह कहलाता है यदि शुभ ग्रहों के साथ योग करता है तो शुभग्रह कहलाता है।

बारह राशियों के नाम तथा संज्ञा

१ मेष २ वृष ३ मिथुन ४ कर्क ५ सिंह ६ कन्या ७ तुला ८ वृश्चिक ९ धन १० मकर ११ कुम्भ १२ मीन।

नोट—आकाश में बारह राशियों का चक्र वृत्ताकार में है। वेध से राशियों को यन्त्रों द्वारा जो देखा गया है तो जिसका जैसा आकार दिखाई दिया उसका वैसा ही नाम रख दिया गया है। ये बारह राशियां नक्षत्रों के हिसाब में घड़ी की भान्ति सम्बन्ध रखती हैं जैसे १ घण्टे में ६० मिनट हैं १ घण्टे में मिनट सैकिण्ड के निशान बने हैं इसी प्रकार सवा दो नक्षत्रों की १ एक राशि बनी है। और यह भी साथ ध्यान रखना चाहिये कि चार २ अक्षरों का एक २ नक्षत्र होता है सुलभ ज्ञान के वास्ते प्रिय पाठकों के सामने राशि ज्ञान के वास्ते इनका नकशा देते हैं।

चार २ अक्षरों का नक्षत्रों में निवेश

चू	चे	चो	ला	अश्विनी	रु	रे	रो	ता	स्वाति
ली	लू	ले	लो	भरणी	ति	तू	ते	तो	विशाखा
आ	इ	उ	ए	कृतिका	ना	नी	नू	ने	अनुराधा
ओ	वा	वि		रोहिणी	नो	या	यी	यू	ज्येष्ठा
वे	वो	का	की	मृगशिरा	ये	यो	भा	भी	मूल
कु	घ	ङ	छ	आर्द्रा	भू	ध	फा	ढा	पूर्वाषाढा
के	को	हा	ही	पुनर्वसु	भे	भो	जा	जी	उत्तराषाढा
हु	हे	हो	डा	पुष्य	जू	जे	जो	खा	अभिजित
डि	डू	डे	डो	श्लेषा	ख	खी	खू	खे	श्रवण
मा	मी	मू	मे	मघा	ग	गी	गू	गे	धनिष्ठा

मो	टा	टी	टू	पू-फा	गो	शा	शि	शू	शत भिषा
टे	टो	पा	पी	उ-फा	से	सो	दा	पी	पू-भा पदा
पू	ष	ण	ठ	हस्त	दू	थ	झ	ञ	उ-भा पदा
पे	पो	रा	री	चित्रा	दे	दो	चा	ची	रेवती

नोट—जिस प्रकार चार उपरोक्त अक्षरों का एक नक्षत्र होता है उसी हिसाब से सवा दो नक्षत्रों की अर्थात् नौ ९ अक्षरों की एक राशि होती है उसका नकशा आगे देखिए।

९ नौ अक्षरों की सवा दो नक्षत्रों की तथा दो संक्षिप्त अक्षरों की राशिः

चू चे चो ला ली लू ले लो अा	मेष	अाला	मेष
इ उ ए ओ वा वी वु वे वो	वृष	ओ वा	वृषा
क की कु घ ङ छ के को हा	मिथुन	का छा	मिथुन
हि हू हे हो डा डि डू डे डो	कर्क	डा हा	कर्क

म मी मू मे मो टा टी टू टे	सिंह	मो टा	सिंह
टो प पी पू ष ण ठ पे पो	कन्या	पाठ	कन्या
र री रु रे रो ता ती तू ते	तुला	रा ता	तुला
तो न नी नू ने नो या यू	वृश्चिक	नो या	वृश्चिक
ये यो भा भी भू धा फा ढा भे	धन	भू धा	धन
भो ज जी ख खी खू खे ग गी	मकर	खा गा	मकर
गु गे गो शा सि सू से सो द	कुम्भ	गो शा	कुम्भ
दी दु थ झ भ दे दो च ची	मीन	दा चा	[illegible]

नोट—चन्द्रमा का संचार भी इन्हीं नक्षत्रों के आधार से चलता है। सवा दो नक्षत्रों का १ राशि का चन्द्रमा होता है। जैसे कि अश्विनी भरणी कृतिका का १ चरण तक मेष राशि का चन्द्रमा रहता है। जिसका विवेचन यह है।

राशियों के स्वामी ग्रहः

मेष वृश्चिकयोर्भौमः शुक्रोवृष तुलाधिपः
जीवो मीनधनु स्वामिः कर्कस्य पति चन्द्रमाः
सिंहस्याधिपतिः सूर्यः शनि मकर कुम्भयोः
बुधः कन्या मिथुनयोः भवन्तीह च स्वामिनः

अर्थ—१–८ का स्वामी भौम, २–७ का शुक्र, ३–६ का बुध, ६–१२ का गुरु, १०–११ का शनि, ४ का चन्द्रमा ५ का सूर्य होते हैं।

चन्द्रराशि संचारः

अश्विनी भरणी कृतिका याद मेषः। कृतिकायास्त्रयः पादाः रोहिणी मृगशिरार्धवृषः। मृगशिरः अर्धं आद्रा पुनर्वसुपादत्रयं मिथुनम् पुनर्वसुपादमेकं पुष्यश्लेषान्तं कर्कः। मघा च पूर्वाफाल्गुनी उत्तरापदे-सिंहः। उतराणां त्रयःपादाः हस्तचित्रार्धं कन्या। चित्रार्धस्वातिविशाखा पादत्रयंतुला। विशाखा पादमेकमनुराधा ज्येष्ठान्तं वृश्चिकः मूलं च पूर्वाषाढा उतरापादे धनुः। उत्तराणां त्रयः पादाः श्रवण धनिष्ठार्धं मकरः॥ धनिष्ठार्धं शतभिषा पूर्वा भाद्रपदा पादत्रयं कुम्भः॥ पूर्वा-भाद्रपदापादमेकं उतरा रेवत्यन्तं मीनः॥

अर्थ—अश्विनी नक्षत्र के चार चरण, भरणी के चार चरण कृतिका का १ चरण तक मेष राशि के चन्द्रमा रहते हैं। कृतिका ३ चरण रोहणी चार चरण मृगशिरा २ चरण तक वृष के चन्द्रमा रहते हैं। मृगशिरा २ चरणआद्रा ४ चरण पुनर्वसु तीन चरण तक मिथुन के चन्द्रमा रहते हैं। पुनर्वसु १ चरण पुष्य ४ चरण श्लेषा ४ चरण तक कर्क के चन्द्रमा रहते हैं। मघा ४ चरण पूर्वफाल्गुनी ४ उत्तरा फाल्गुनी के १ तक सिंह के चन्द्रमा रहते हैं। उत्तरा फाल्गुनी ३ चरण हस्त ४ चरण चित्रा २ चरण तक कन्या के चन्द्रमा रहते हैं। चित्रा २ चरण स्वाति चार विशाखा ३ चरण तक तुला है

चन्द्रमा रहते हैं विशाखा १ अनुराधा ४ ज्येष्ठा ४ तक वृश्चिक के चन्द्रमा रहते हैं। मू. ४ पूर्वाषाढा ४ उत्तरा षाढा १ तक धन का चन्द्रमा। उत्तराषाढा ३ श्रवण ४ धनिष्ठा २ तक मकर के चन्द्रमा रहते हैं। धनिष्ठा २ शत्तभिषा ४ पूर्वा भाद्रपदा ३ तक कुम्भ के चन्द्रमा पूर्वाभाद्रपदा १ उत्तराभाद्रपदा ४ रेवती ४ तक मीनराशि के चन्द्रमा रहते हैं।

नोट—जब भी किसी बालक का जन्म हो उस समय जो इष्ट आवे जिसकी विधि आगे मिलेगी। उस इष्ट में जिस नक्षत्र का जो चरण हो उस नक्षत्र के उस चरण के उसी अक्षर पर बालक का नाक्षत्रिक नाम कहलाता है।

बालक का बोलता हुआ नाम साहित्यिक और भी रखा जा सकता है। यदि बालक नक्षत्रगण्डान्त तिथिगण्डान्त या मूल नक्षत्र में हुआ हो तो उसका विचार करते हैं।

तिथि गण्डे भगण्डे च लग्न गण्डे च जातकः।
नजीवति यदा जातो जीवेच्चधनवान भावेत् ॥

अर्थ—तिथि नक्षत्र लग्न के गण्डान्त में बालक का जन्म हो तो नहीं जीता है जो जीवे तो धनी हो। नक्षत्रों में छः नक्षत्र गण्ड होते हैं। मूल, ज्येष्ठा, श्लेषा, आर्द्रा, रेवती, मघा। ज्येष्ठा, मूल, श्लेषा इन तीन नक्षत्रों का प्रधान विचार होता है, बाकी गौण हैं।

तिथि गण्डांत कहते हैं

नन्दातिथेश्च नामादौ पूर्णायाश्च तथान्तिके।
घटिकैकाशुभे त्याज्याः तिथिगण्ड घटिका द्वयम् ॥१॥

अर्थ—नन्दा १-६-११ तिथि के आद की पूर्णिका अर्थात् पूर्णा ५-१०-१५ के अन्त की एक १ घड़ी अशुभ होती है।

नक्षत्र गण्डान्त कहते हैं

ज्येष्ठांश्लेषा रेवतीनां नक्षत्रान्ते घटिका द्वयम् ।
आदौ मूल मघाश्विन्यां भगण्डं घटिका द्वयम् ॥२॥

अर्थ—ज्येष्ठा, श्लेषा रेवती के अन्त की २ घड़ी मूल मघा, अश्विनी के आदि की २ घड़ी शुभ कार्य में अशुभ हैं।

लग्न गण्डान्त कहते हैं

मीन, वृश्चिक, कर्कान्ते घटिकार्धं परित्यजेत् ।
आदौ मेषस्य चापस्य सिंहस्य घटिकार्धकम् ॥

अर्थ—मीन, वृश्चिक, कर्क के अन्त की आधी घड़ी मेष, धन, सिंह के आदि की आधी घड़ी में शुभ काम नहीं करना चाहिये।

ज्येष्ठा नक्षत्र फलम्

ज्येष्ठादौ मातरं हन्ति द्वितीये पितरं तथा ।
तृतीये भ्रातरंचैव मातरंचव चतुर्थके ॥
आत्मानं पञ्चमे हन्ति षष्ठे गोत्रक्षयो भवेत् ।
सप्तमे चोभयकुलं ज्येष्ठं भ्रातरमष्टमे ॥
नवमे श्वसुरं हन्ति सर्वं हन्ति दशांशके ।

अर्थ—ज्येष्ठ नक्षत्र की ६० घड़ी के दस भाग के छः छः घड़ी का एक एक फल निश्चित करे। यदि ज्येष्ठा नक्षत्र की पहली ६ घड़ी में बालक का जन्म हो तो नानी के लिए अशुभ होता है। दूसरी ६ घड़ी में नाना को अशुभ होता है। तीसरी ६ घड़ी में मामा को। चौथी ६ घड़ी में माता को कष्ट करे। पांचवीं ६ घड़ी में बालक को स्वयं कष्टकारक हो। छठी ६ घड़ी में गोत्र वालों को। सातवीं ६ घड़ी में नाना के परिवार को और अपने परिवार को। आठवीं ६ घड़ी में भ्राता को। नवीं ६ घड़ी में श्वसुर को और दसवीं ६ घड़ी में कुटुम्ब को नष्टकारक होता है।

मूल वृक्ष का न्यास तथा फल

मूलेष्टा मूल वृक्षस्य घटिका परिकीर्तिता। स्तम्भेषुघटिका षष्ठं त्वचि चैकादशस्मृता। शाखायां च नवप्रोक्ताः पत्रे प्रोक्ताश्चतुर्दशः॥ पुष्पे पंच फले वेदाः शिखायां चत्रयः स्मृता। मूले नाशोहि मूलस्य स्तम्भे हानिर्धनक्षयः। त्वचि भ्रातुविनाशश्च शिखायां मातृ पीडनम्। परिवारक्षयः पत्रे पुष्पे मन्त्रीच भूपतेः फले राज्यं शिखायां स्यादल्प जीवीच बालकः॥

अर्थ—मूलवृक्ष की ८ घड़ी जड़ में न्यास करे, ६ स्तम्भ में, ११ त्वचा में, ९ शाखा में, ११ पत्र में, ५ पुष्प में, ४ फल में, ३ शाखा में, न्यास करके फल जानना चाहिये। जो मूल की ८ घड़ियों में बालक का जन्म हो तो मूल नाश होवे। स्तम्भ की ६ घड़ी में जन्म हो तो धन का नाश हो, त्वचा की ११ घड़ी में भाई का नाश हो। शाखा की ९ घड़ी में माता को कष्टकारक होगा। पत्तों की १४ घड़ियों में हो तो परिवार का नाश हो। पुष्प की ५ घड़ी में हो तो राजा का मन्त्री नष्ट होवे। फलों की ४ घड़ी में जन्म हो तो राजा हो अथवा वंश में देश में श्रेष्ठ होवे। शिखा की तीन घड़ी में जन्म हो तो अल्पायु होवे।

मूल वृक्ष फलम्

शिखा	फल	फूल	पत्र	शाखा	त्वचा	स्तम्भ	मूल
३	४	५	१४	९	११	६	८
अल्पा.	राजा	राज-मन्त्री	परिवार क्षयः	मातृ कष्ट	भ्रातृ नाश	धन हानि	मूल नाशः

श्लेषा नक्षत्र फलम्

मूर्धास्य नेत्रगल कांसयुगञ्चबाहू, हृज्जानु गुह्यपदमित्यदि देह भागः। बाणाद्रिनेत्र हुतभुक् श्रु ि नाग रुद्रं षडनन्द पंचशिरसः क्रमशस्तु नाड्यः॥ राज्य पितृक्षयेया मातृ नाशः कामक्रियारतिः। पितृभक्तोवली स्वघ्नस्त्यागी भोगी धनी क्रमात्॥

अर्थ—श्लेषा नक्षत्र की पांच घड़ी के अन्दर जन्म होने से राज्य प्राप्ति। दूसरे भाग की सात घड़ी में पिता को कष्ट। तीसरे भाग की २ घड़ी में माता को कष्ट। चौथे भाग की ३ घड़ी में परस्त्रीरत। पांचवें भाग की ४ घड़ी में पिता का भक्त होवे। षष्ठ भाग की ८ घड़ी में बलवान होवे। सातवें भाग की ११ घड़ी में आत्मघाती होवे। आठवें भाग की ६ घड़ी में त्यागी। नवें भाग की ९ घड़ी में भोगी तथा दसवें भाग की ५ घड़ी में धनवान होता है। इस प्रकार ६० घड़ी के दस भाग करके फल कहने चाहिये।

नोट—मूल, ज्येष्ठा, श्लेषा के जन्म की मूल शान्ति अगले २७वें दिन उसी नक्षत्र में करानी चाहिये। हवन, तर्पण, मार्जन, ब्राह्मण भोजन, मूल संज्ञक नक्षत्रों के मन्त्रों का जप आदि से शान्ति होगी। मूल शान्ति की स्वतन्त्र विधि होती है। पण्डित से करानी चाहिये।

इति पंचांग बोधोनाम प्रथमो अध्यायः

अथ विवाहबोधको नाम द्वितीयोऽध्यायः

१६ संस्कारों में विवाह संस्कार भारतीय आर्यों का एक मुख्य संस्कार माना जाता है। इस संस्कार के होने से ही मनुष्य धर्म, अर्थ काम और मोक्ष की सिद्धियां, प्राप्त कर सकता है। देव ऋण, ऋषि ऋण पितृ ऋण से भी मुक्त हो सकता है। इसी के द्वारा मनुष्य दाम्पत्य सुख तथा उत्तम सन्तति उपार्जन एवं ऐश्वर्य भोग करता है। अतएव प्राचीन आचार्यों ने विवाह संस्कार के सम्बन्ध में अत्यन्त सूक्ष्म निर्णय एवं सुन्दर विचार विनिमय किये हैं। वेदों में भी इस पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। अतएव ज्योतिष शास्त्र वेद का अंग है। ज्योतिष शास्त्र सम्बन्धी काल निर्णय से विवाह संस्कार के परमावश्यक विचारांश इस अध्याय में प्रकाशित करते हैं।

विवाह के नक्षत्र

रोहिण्युत्तर रेवत्यो मूलं स्वाति मृगो मघा।
अनुराधा च हस्तश्च विवाहे मङ्गलप्रदाः। शीघ्रबोध॥

अर्थ—रोहिणी, तीनों उत्तरा, रेवती, मूल, स्वाति, मृगशिरा, मघा, अनुराधा, हस्त। ये ११ नक्षत्र विवाह काल में श्रेष्ठ माने गये हैं।

विवाह में मासों का नियम

माघे धनवती कन्या फाल्गुने सुभगाभवेत्।
वैशाखे च तथा ज्येष्ठे पत्युरत्यन्तवल्लभा॥ १॥

आषाढे कुलवृद्धिःस्यादन्ये मासाश्च वर्जिताः ।
मार्गशीर्ष मपीछन्ति विवाहे केऽपिकोविदाः ।२। शीघ्रबोध॥

अर्थ—माघ मास में विवाह करने से कन्या धनवती होती है । फाल्गुण में सौभाग्यवती, वैशाख तथा ज्येष्ठ में विवाह करने से अपने पति को अत्यन्त प्यारी होती है । और आषाढ़ में विवाह करने से कुल की वृद्धि होती है । बाकी और मास (श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, और चैत्र) विवाह में वर्जित हैं । किसी आचार्य के मत से मार्गशीर्ष मास विवाह में शुभ माना गया है ।

जन्मभंजन्म धिष्ण्येन नाम धिष्ण्येन नामभम् ।
व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योः निधन प्रदम् ॥

अर्थ—वर का प्रसिद्ध नाम और कन्या का जन्मनाम अथवा कन्या का प्रसिद्ध नाम और वर का जन्म नाम कदापि नहीं विवाह मिलान में लेना चाहिये । ऐसा लेना वर कन्या दोनों के वास्ते हानि-कारक है । दोनों का जन्म नाम ही लेना चाहिये अथवा दोनों का प्रसिद्ध नाम ही लेवे ।

देशे-ग्रामे-गृहे युद्धे-सेवायां व्यवहारके ।
नामराशेःप्रधानत्वम् जन्मराशि न चिन्तयेत् ।
विवाहं घटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम् ।
नामभाच्चिन्तयेत्सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥

इस वास्ते यदि जन्म नाम ज्ञान न होवे तो प्रसिद्ध नाम से विवाह संस्कार कराया जा सकता है । विवाह में त्रिबल शुद्धि आवश्यक है ।

वर को सूर्यबल, कन्या को गुरुबल एव चन्द्रबल दोनों चाहिये ।

वरस्यभास्कर बलं कन्यायाश्च गुरोः बलम् ।
द्वयोश्चन्द्रबलं ग्राह्यं विवाहोनान्यथा भवेत् ॥

वरको सूर्य का बल विचार

अष्टमे च द्वादशे च चतुर्थेच दिवा करे।
विवाहितो वरो मृत्युं प्राप्नोत्यत्रन संशयः॥

जन्मन्यथ द्वितीये वा पंचमे सप्तमेऽपिवा।
नवमेचेद्दिवानाथः पूजया पाणिपीडनम्॥

एकादशे तृतीयेवा षष्टेवादशमेऽपिवा।
वरस्यशुभदोनित्यं विवाहे दिन नायकः॥शीघ्रबोध॥

अर्थ—वर को ४—८—१२ स्थान में सूर्य हो तो हानिकारक वर को होता है। जो वर की राशि से १—२—५—७—९ सूर्य हो तो पूजा दान, जपादि करने से शुभ होता है। और जो ११—३—६—१० वें सूर्य पड़े तो कल्याणकारक वर के वास्ते होता है।

कन्या को गुरुबल विचार

अष्टमेद्वादशेवाऽपि चतुर्थेच ।
पूजा तत्रन कर्तव्या विवाहे प्राणनाशकः॥ १॥

षष्टे जन्मनि देवेज्ये तृतीयेदशमेऽपिवा।
भूरि पूजापूजितः स्यात् शुभकारकः॥ २॥

एकादशे द्वितीयेवा पंचमे सप्तमेऽपिवा।
नवमे च सुराचार्यः कन्यायाः शुभकारकः॥३॥

अर्थ—जो कन्या को वृहस्पति ४—८—१२ में होवे तो पूजन करके भी विवाह नहीं करें, यदि कन्या का वृहस्पति ६—१—३—१० में होवे बड़ी पूजा वा दानादि देकर विवाह करें तो, शुभ होता है। जो कन्या की राशि से ११—२—४—९ में गुरु होय तो विशेष करके कन्या को शुभ होवे।

दोनों के वास्ते चन्द्रबल का विचार

आद्यश्चन्द्रः श्रिय कुर्यात् मनस्तोषं द्वितीयके।
तृतीयेधन सम्पत्तिश्चतुर्थे कलहागमः ॥ १ ॥

पंचमेज्ञान वृद्धिश्च षष्ठे सम्पतिरुत्तमा।
पंचमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्टे सम्पत्तिरुत्तमा।

सप्तमे राजसम्मानं मरणं चाष्टमेतथा।
नवमे धर्म लाभश्च, दशमे मानसेप्सितम्।
एकादशे सर्वलाभो द्वादशे हानिरेवच ॥३॥शीघ्रबोध॥

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्ट	सप्तम	अष्टम	नवम	दशम	एकादश	द्वादश
धन लाभ	मनः सन्तोष	धन संपत्ति	कलहागमः	ज्ञान वृद्धिः	उत्तम सम्पत्ति	राज संमान	मृत्यु	धर्म लाभ	इच्छित लाभ	सर्व लाभ	हानिः

ग्रहों का बल

जीवो जीव प्रदाता च द्रव्य दाता च चन्द्रमाः।
तेजोदाता भवेत्सूर्य भूमि दाता महीसुतः।
जीवहीना मृताकन्या सूर्य हीनो मृतोवरः।
चन्द्रहीनागतालक्ष्मिः स्थान हानि कुजं बिना ॥ २ ॥

अर्थ—बृहस्पति जीव को, चन्द्रमा धन को, सूर्यतेज को, मङ्गल भूमि को देता है बृहस्पति यदि हीन बलवाला हो तो कन्या को मृत्यु और सूर्य हीनवान वाला हो तो वर को मृत्यु और मंगल हीनबल वाला हो तो स्थान हानि करता है।

सर्पाकार नाडिचक्रज्ञानम्

आदि	अश्विनी	आर्द्रा	पुन	उ.फा	हस्त	ज्ये०	मूल	शतभिषा	पू.भा० द्रपदा	नक्षत्र
मध्य	भरणी	मृगशिरा	पुष्य	पू.फा	चित्रा	अनु	पू.षा	धनिष्ठा	उ.भा द्रपदा	नक्षत्र
अन्त	कृतिका	रोहिणी	आश्लेषा	मघ	स्वाति	विशाखा	उ.षाढ़ा	श्रवण	रेवती	नक्षत्र

नाडिफल विचार

एक नाडिस्थ नक्षत्रे दम्पत्योर्मरणं ध्रुवम् ।
विद्धायाञ्चभवेद्धानिर्विवाहे चाशुभं भवेत् ॥१॥

अर्थ—वर कन्या का जन्म यदि एक ही नाड़ि के नक्षत्रों में हो जावे तो दोनों की मृत्यु होवे नाडि के वेध में विवाह हानिकारक होता है ।

आद्या नाडिः वरं हन्ति मध्या नाडिश्च कन्यकाम् ।
अन्त्यनाड्यां द्वयोर्मृत्यु नाडीदोषं त्यजेद्बुधः ॥

अर्थ—यदि दोनों आद्य नाडि में हों तो वर को अरिष्ठ करें और मध्य नाडि दोनों की होवे तो कन्या को हानि करे अन्त्यनाडिः में दोनों की मृत्यु होती है ।

नाडि दोष का परिहार

एक नक्षत्रजातानां नाडिः दोषोनविद्यते ।
अन्यर्क्षपति वेधेसु विवाहोवर्जितः सदा ॥१॥

अर्थ—वर कन्या का एक ही नक्षत्र में जन्म होने से एक नाडि का दोष नही होता है अन्य नक्षत्रों में जन्म होवे तो विवाह में सर्वथा वर्जित है।

विवाह में दश दोष विचार

लत्ता पातो युतिर्वेधो जामित्रं बुधपंचकम्। एकार्गलोपग्रहौचक्रान्तिसाम्यं निगद्यते दग्धा तिथश्चविज्ञेयाः दश दोषाः महाबलाः। एतान्दोषान्परित्यज्य लग्न संशोधयेद्बुधः ॥२॥

अर्थ—लता पात, युति, बेध, जामित्र; बुधपचक, एकगिल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि ये दश दोश महाबली हैं इनको छोड़ कर विद्वान लग्न संशोधन करें और विवाह का मुहूर्त निश्चित करें।

(१) लता दोष का ज्ञान कहते हैं

नक्षत्रं द्वादशं भानुस्तृतीयंलतया कुजः। षष्ठंजीवोऽष्टमं मन्दोहन्ति दक्षिणतः सदा। वामेनसप्त मश्चान्द्रिर्नवमेसिंहिकासुतः। हति भंपञ्चमंशुक्र द्वाविंशं पूर्णा चन्द्रमाः ॥२॥

अर्थ - जिस नक्षत्र पर जो ग्रह हों उसी नक्षत्र के दाहिने ओर गिने। सूर्य; भौम, गुरु, शनि ये चार ग्रह इस प्रकार लात मारते हैं १२ वें नक्षत्र को रविः। ३ तीसरे नक्षत्र को भौम ६ वें को गुरु आठवें को शनिः लात मारता है। और वाम भाग से सातवें नक्षत्र को बुध लात मारता है। नवमे को राहु पांचवे को शुक्र, २२ वें नक्षत्र को चन्द्रमा लात मारता है।

लता दोष का फल

रवेर्लता हरेद्वित्तं कुजस्यकुरुते मृतिम्। वृहस्पतेर्बन्धु नाशंशनेः कुर्यात् कुलक्षयम् ॥१॥ बुधस्य कुरुते त्रासं लता राहोर्विनाशयेत्। शुक्रस्य दुःखदानित्यंत्रासदा तु कलानिधेः ॥२॥

अर्थ—सूर्य की लता सम्पत्ति को हरण करती है, भौम की लता

मृत्युकारक है वृहस्पति की लता बन्धु का नाश करती है। शनि की लता कुल का क्षय करती है। बुध की लता भय देने वाली है, राहु की लता से सर्वनाश होता है, शुक्र की लता दुःखदायिक है, चन्द्रमा की लता भयदायिनी है।

२ पात का विचार है

सूर्ययुक्ताच्चनक्षत्राद्दोषः पातो विधीयते।
मघाऽऽश्लेषाचचित्राचसानु राधाच रेवती ॥ १ ॥

श्रवणोऽपि च षट्कोऽयं पातदोषो निगद्यते।
अश्विनीमवधिं कृत्वा गणयेल्लग्नभावधि ॥

अर्थ—जिस नक्षत्र में सूर्य हो उसी नक्षत्र से पात दोष कहना चाहिये। मघा, श्लेषा, चित्रा, अनुराधा, रेवती, श्रवण, इन नक्षत्रों के संयोग मे ६ प्रकार के पात कहलाते हैं। प्रथम सूर्य के नक्षत्र से सत्ताईस रेखा खींच अश्विनी से लग्नतक गिनकर जो उक्त नक्षत्र तक गिनती पूरी हो जाय तो पात दोष होता है।

पात के ६ भेद

पावकः पवमानश्च विकारः कलहोऽपरः।
मृत्युः क्षयश्च विज्ञेयम् पात षट्कस्य लक्षणम् ॥ १ ॥

पात का फल

पातेनपतितो ब्रह्मा पातेन पतितो हरिः।
पातेन पतितः शम्भुस्तस्मात्पातं विवर्जयेत् ॥ १ ॥

अर्थ—पात ने ब्रह्मा-विष्णु-तथा शिव को गिराया अतएव पात दोष विवाह में वर्जित है।

देश विशेष के लिहाज से पात का परिहार

चित्रांगते पात विचित्रदेशे मैत्रेमघा मालवके निषिद्धः।
पौष्णाश्रुती चोतर देश जातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंग पातः ॥२॥

अर्थ—चित्र नक्षत्र का पात विचित्र देश मे वर्जित है। अनुराधा तथा मघा का पात मालव देश में निषिद्ध है। रेवती तथा श्रवण का पात उत्तर में श्लेषा का पात सर्व देशों में वर्जित है।

युति दोष का विचार

यत्रगृहे भवेच्चन्द्रः ग्रहस्तत्रजदा भवेत्।
युति दोषस्तदा ज्ञेयो विनाशुक्रं शुभा शुभम्॥

अर्थ—जिस नक्षत्र का चन्द्रमा हो उसी नक्षत्र में अन्य कोई ग्रह हों तो युति दोष जानना परन्तु शुक्र के बिना शुभ संयुक्त भी हो तो भी अशुभ है।

युतिफल

रविणा संयुतो हानिं भौमेन निधनंशशी।
करोति मूलनाशंच राहु केतु शनैश्चरै॥

अर्थ—यदि सूर्य के साथ चन्द्रमा युक्त हो तो हानि करे भौम हो तो मृत्यु करे। राहु केतु शनैश्चर हो तो मूल नाश करे।

युति का मार्जन

वर्गोतमगतश्चन्द्र स्वोच्चं वामित्र राशिगः।
युति दोषश्च नभवेद्दम्पत्यो श्रेयसी सदा॥

अर्थ—जो चन्द्रमा वर्गोत्तम में गया हो अथवा उच्च का हो अथवा मित्र की राशि का हो तो युति दोष का नाश करता है और पुरुष स्त्री दोनों के वास्ते शुभ फलदायक रहता है।

वेध के ज्ञान में पंचशलाका विचार

पञ्चोर्ध्वाः स्थापयेद्रेखा पञ्चतिर्यङ् मुखास्तथा।
द्वयोश्च कोणयोर्द्वन्द्वे चक्रं पञ्च शलाककम्॥ १॥

ईशाने कृतिका देया क्रमादन्यानीनि भानिच ।
तेग्रहास्तु प्रदातव्याः ये चा प्रतिष्ठिताः ।।
लग्नस्य निकटे या चगता भवति पूर्णिमा ।
तन्नक्षत्रस्थितश्चन्द्रो दातव्यो गणकोत्तमैः ।। ३ ।।

अर्थ—पांच रेखा उर्ध्वाकार और पांच रेखा तिर्यक्‌ तथा दो रेखाएं कोणों में रखे, बाद में ईशान कोण से कृतिका आदि नक्षत्र क्रम से धरे । एक रेखा में चन्द्रमा और ग्रह के रहने पर वेध होता है जो लग्न के निकट स्थित पूर्णिमा हो तो उस नक्षत्र स्थित चन्द्रमा में ज्योतिषियों को मुहूर्त देना चाहिए ।

वेध के नक्षत्रों का क्रम

अश्विनी पूर्वफाल्गुन्याभरणी चानुराधया।
अभिजिच्चापि रोहिण्या कृतिकाचविशाखया ॥१॥
मृगश्चोत्तराषाढेन पूर्वाषाढा तथार्द्रया।
पुनर्वसुश्चमूलेन तथा पुष्यश्चज्येष्ठया ॥२॥
धनिष्ठया तथाश्लेषा मघ्याऽपिश्रवणेनच।
रेवत्युत्तर फाल्गुन्या हस्तेनोत्तरभाद्रपात् ।३॥
स्वात्या शतभिषाविद्धा चित्रयापूर्णभाद्रपात्।
विद्धान्येतानिवर्ज्यानि विवाहेभानि कोविदैः ॥४।

अर्थ—अश्विनी से और पूर्वाफाल्गुनि से वेध में एक रेखा पड़ती है सो ही वेध होता है।

वेध का फल

रविवेधेचवैधव्यं कुजवेधेकुलक्षयः। बुधवेधेभवेद्विन्ध्या प्रव्रज्यागुरुवेधतः। अपुत्रा शुक्रवेधेच सौरचन्द्रेचन्दुःखिता। पुरुषान्यरताराहौ केतौस्वच्छन्दचारिणी।

अर्थ— रवि वेध में विवाह होने से विधवा, मंगल का वेध होने से कुल का क्षय, बुध का वेध होने से वन्ध्या, गुरु का वेध होने पर संन्यासिनी, तपस्विनी होती है, शुक्र के वेध होने से पुत्र रहित होती है, शनि तथा चन्द्रमा का वेध होने से दुःखी, राहु का वेध होने से पर पुरुषगामिनी होती है और केतु के वेध में स्वच्छन्दचारिणी होती है।

युति दोष

शनि राहु कुजादित्या यदाजन्मर्क्ष संस्थिताः। विवाहितायदाकन्या सा कन्या विधवाभवेत् ॥ शीघ्रबोध ॥

अर्थ—शनि, राहु, भौम, सूर्य इन पाप ग्रहों में से कोई भी ग्रह विवाह में जन्म नक्षत्र पर स्थित हों तो वह कन्या विधवा होती है।

जामित्र दोष

चतुर्दशंचनक्षत्रं जामित्रे लग्नभात्स्मृतम्। शुभयुक्तं तदिच्छन्ति पाप युक्तंच वर्जयेत। चन्द्रश्चान्द्रिभृगुर्जीवो जामित्रे शुभकारकाः। स्वर्भानुर्भानुमन्दरा जामित्रेन शुभप्रदाः॥

अर्थ—लग्न के नक्षत्र से चौदहवें नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो जामित्र दोष होता है। जामित्र दोष शुभ युक्त तो ग्राह्य है। पाप युक्त वर्जित है। जो चन्द्रमा, बुध बृहस्पति और शुक्र इन ग्रहों का जामित्र होवे तो शुभ होता है और शनि, राहु, केतु तथा भौम का जामित्र हो तो अशुभ होता है।

बुध पंचक योग

धार्यातिथि मसिदशाष्टवेदाः। संक्रान्तितोयात दिनैश्चयोज्याः ग्रहैर्विभक्ताः यदिपंचशेषाः रोगस्थाऽग्निनृप चौरमृत्युः॥शीघ्रबोध॥

अर्थ—तिथि १५, मास १२, दश १० अष्ट ८, वेध ४, इन संख्याओं को संक्रान्ति से जितने दिन दिये गये हैं उनमें युक्त करके ६ का भाग देवें। यदि पांच शेष बचे तो पंचक हो क्रम से—१५ में रोग पंचक, १२ में अग्नि पंचक, १० में राज्य, ८ में चोर और चार में मृत्यु पंचक।

वार सम्बन्ध में वाण परिहार

यद्यर्कवारे किलरोग पंचकं सोमेऽराज्यं क्षितिजेचवह्निः।
सौरौच मृत्युर्धिषणे च चौरो।
विवाहकाले परिवर्जनीयः॥

अर्थ—रविवार को रोग पचक, सोम का राज पंचक, मगल को अग्नि पंचक, शनि को मृत्यु और शुक्र को चौर पचक में विवाह सर्वथा वर्जनीय होता है।

दिन तथा रात्रि से पंचक का विचार

रोगं चौरंत्यजेद्रात्रौ दिवा राजयाग्नि पंचकम् ।
उभयोः सन्ध्ययोर्मृत्युमन्यकालमनिन्दिता: ॥

अर्थ--रोग पंचक, चौर पंचक रात्रि में अशुभ हैं और राज पंचक अग्नि पंचक दिन में । मृत्यु पंचक दिन और रात्र दोनों की सन्धियों में निन्दित हैं और समय में वर्जित नहीं ।

उपग्रह दोष विचार

सूर्यभात्पञ्चमे विद्युन्नक्षत्रे शूलमष्टमे ।
चतुर्दशे शनेः पातः केतुरष्टादशेतथा ॥
ऊनविंशे भवेदुल्का निर्घातश्च द्विविशंके ।
त्रयोविंशतिके कम्पः पञ्चविंशेतुवज्रकः ॥

अर्थ--सूर्य के नक्षत्र से पांचवें नक्षत्र पर विद्युतदोष होता है और इसी प्रकार ८ वें नक्षत्र पर शूल दोष होता है १४वें शनिपात दोष १८ वें पर केतुपात दोष १९ वें पर उलका, २२वें पर निर्घात, २३ वें पर कम्प, २५ वें पर वज्र दोष होता है ।

उपग्रहदोष का फल

पुत्र नाश करी विद्युत पत्युः शूलो विनाशकः ।
शनेःपातो वंशघातीकेतुर्देवर नाशकः ॥
द्रव्यनाश करी चोल्का निर्घातो बन्धु नाशकः ।
कम्पः कम्पयते नित्यं वज्रस्त्री व्यभिचारणी ॥

स्पष्टार्थः--

एकागर्ल योगमाह

योगांके विषमे चैको देयोऽष्टाविंशतिः समे ।
अर्द्ध कृत्वाऽश्विनी पूर्वमङ्क मूर्ध्न प्रदीयते ॥

अर्थ—यदि योग का अङ्क विषम हो तो एक जोड़ना और सम अङ्क हों तो अठाईस जोड़ना उसका आधा करके, अश्विनी पूर्वक जो नक्षत्र हों सो मस्तक पर लिखिए।

एकार्गल दोष का उदाहरण

व्यतीपाते भमाश्लेषा व्याघातेतुपुनर्वसु अतिगण्डेऽनुराधाच मूर्ध्निभ परिघेमघा ।।१।। विष्कंम्भंचाश्विनीपुष्यौ वज्रे चित्रातु वैधृतौ । तथा शूले मृगोधृगंड मूलभं मर्ध्निविन्यसेत् ।।२।। योगेष्वेतेषु संभूत नान्येष्वेऽकोर्गलस्तथा ।।३।।

अर्थ यदि व्यतिपात योग हो तो अश्लेषा नक्षत्र एकार्गलचक्र की मूर्धा नाम की रेखा पर स्थापित करे और जो व्याघात योग होय तो पुनर्वसु नक्षत्र मूर्धा पर लिखें, अतिगंड योग होय तो अनुराधा नक्षत्र लिखे परिघयोग होय तो मूर्धा पर मघा नक्षत्र स्थापित करे। विष्कुंभ योग होय तो अश्विनी नक्षत्र मूर्धा पर लिखे, वज्र योग होय तो पुष्य लिखे, और वैधृति योग होय तो चित्रा लिखे और शूल योग होय तो मृगशिर धृगंड योग होय तो मूलनक्षत्र मूर्धा पर लिखे, ये उक्त योग होय तो एकार्गल दोष की उत्पत्ति होती है और अन्य होय तो एकार्गल दोष की उत्पत्ति नहीं होती।

।। एकार्गल चक्रम् ।।

एकाचोर्ध्वगता रेखातिर्यक्कार्या स्त्रयोदश । मूर्ध्निभं मूर्ध्नि विन्यस्य साभिजिच्च ततोऽन्यसेत् ।। एकार्गलो मिथश्चैक रेखागश्चे द्विधू रविः । विवाहादिशुभे कार्येनेष्टस्त्वेकार्गलाभिधः ।।

एक रेखा ऊंची और तेरह रेखा तिरछी खैंचे, ऊंची रेखा के मूर्धा का नक्षत्र लिखकर अभिजित्सहित अट्ठाइस नक्षत्र क्रम से रेखाओं पर स्थापित करे तो एकार्गल चक्र बनता है। एक रेखा पर आमने सामने चन्द्रमा सूर्य होय तो एकार्गल नाम दोष विवाहादि शुभ कार्यों में नेष्ट होता है।

क्रान्ति साम्य फल

क्रान्ति साम्ये च कन्यायाः यदि पाणिग्रहो भवेत। कन्या वैधव्यमाँ याति ईशस्य दुहिता यदि ॥शीघ्रबोध॥

अर्थ—यदि क्रांति साम्य में विवाह किया जाय तो ईश (शंकर) की भी कन्या विधवा हो।

कंटकादि दोष

मर्मवेधः कष्टकश्च शल्यश्छिद्रं चतुर्थकम्, एतद्भ भचतुष्कंतु परित्याज्यं प्रयन्नतः॥ लग्न पापे मर्मवेधः कष्टको नवपञ्चके चतुर्थे दशमे शल्यं छिद्रं भवति सप्तमे। मर्मवेध १ कष्टक २ शल्य ३ छिद्र ४ इन चारों चतुष्टयको त्यागना चाहिए। लग्न में पाप ग्रह हो तो मर्मवेध पञ्चम नवम स्थान में पाप ग्रह हों तो कंटक दोष जानना, चतुर्थ दशम स्थान में हो तो शल्य दोष होता है। सप्तम स्थान में पाप ग्रह हो तो छिद्र दोष जानना इन्हें त्यागना चाहिए।

कष्टकादि फल

मरणं मर्मवेधे स्यात् कष्टके च कुलक्षयं॥
शल्ये च नृपतेर्भीतिः पुत्र नाशश्च छिद्रके॥

मर्मदोष में विवाह हो तो मरण समझना कष्टक में हो तो कुल का क्षय शल्य में राजा से भय होता है। छिद्र दोष में पुत्र नाशक जानना।

ज्येष्ठ विचार

जन्म मासे जन्मभेचनैव जन्मदिनेऽपिच।
ज्येष्ठगर्भस्य विवाह कार्येत्कचित्॥

जन्म मास जन्म नक्षत्र जन्मदिन में विवाह न करे ज्येष्ठ मास में ज्येष्ठ पुत्र का विवाह न करना चाहिए।

न कन्या वरयोर्ज्येष्ठे ज्येष्ठयोः पाणि पीडनम्। द्वयोरेकतरे ज्येष्ठे न ज्यष्ठो दोषमावहेत्। यदि वर कन्या दोनों प्रथम गर्भ के हों तो ज्येष्ठ मास त्याज्य होता है। विवाह में और दोनों में एक ज्येष्ठ होय तब पाणिग्रहण में दोष नहीं जानना।

वर कन्या कुण्डली मिलान

जन्मपत्री मिलान में तथा विवाह तिथि एवं विवाह लग्न की व्यवस्था के निर्णय में अपवाद वचनों पर भी विद्वानों का ध्यान अवश्य होना चाहिए। मेरे पास प्रायः ऐसी जन्मपत्रियां बहुतसी फैसले के लिए आती हैं जिनमें एकदेशीय विचार पर जोर देकर संशय डाल दिया जाता है इसलिए विद्वानों को चाहिए कि—

दोषाणां च गुणानां च तारतम्यं विचार्यते।
गुणो वा यदि वा दोषो दुर्बलो नष्टतां व्रजेत्॥

स एव पुनरुत्कृष्टः वीर्यवान सफलप्रद.।
दोषाश्च गदितासर्वे गुणेभ्यो वहवः कलौ॥

तथापि दोषाः नश्यन्ति स्वपवादैः गुणैरपि।
इति वृहस्पति वचनम्॥

अर्थ—कन्या वर के टीप मिलान में अपवाद वचनों का भी विचार करने की आवश्यकता पड़ती है वर्ण नहीं मिले तो ग्रह मैत्री और ग्रह मैत्री नहीं मिले तो अंश मैत्री से योग मेल का ठीक बन जाता है। भकूट का परिहार भी ग्रह मैत्री तथा अंश मैत्री ही है गण नाडी आदि नहीं मिलने पर अंश भेद तथा समर्थ भेद होवे तो भी विध मिल जाती है इस वास्ते साधक बाधक वचनों की संगति पर पूर्ण विचार करके व्यवस्था देनी चाहिए। ठीक यही बात मंगली योग के विचार में भी है केवल 'लग्ने व्यये च पाताले' से ही कार्य नहीं बनेगा अष्टमेश पाप ग्रहों के नवांश में पड़ा होगा तो भी

खराब फल देगा और शुभ ग्रहों के नवांश में पड़ा होगा तो उत्तम फल देगा। इन सभी बातों में मुख्य यही है कि जन्मपत्रियों का शुद्ध होना इस वास्ते उपरोक्त सभी अपवाद व्यवस्था पर विचार विनिमय करके विद्वानों को विमर्श देना चाहिए।

वर वधू मेलापक व्यवस्थायां वर्णादि

भारतवर्ष में विवाह के मिलान में आठ बातें प्रधान हैं। वर्ण १ वश्य २ तारा ३ योनि ४ ग्रह मैत्री ५ गण ६ भकूट ७ और नाड़ी ८, किन्तु कुछ लोग ब्राह्मण के लिये नाड़ी एवं ग्रह मैत्री क्षत्रिय के लिये गण तथा वर्ण और वैश्य के लिये तारा तथा भकूट और शूद्र के लिये नाड़ी और वर्ण का विचार प्रधान मानते हैं।

वर्ण विचार

झषालि कर्कटा विप्रास्तूर्ध्वे क्षत्रियादयः।
पुंस्त्रीराशौसमे श्रेष्ठः पुंसोहीनस्तथा शुभः॥

अर्थ—

मीन वृश्चिक कर्क का विप्र वर्ण

मेष धन सिंह का क्षत्रिय वर्ण

वृषभ मकर कन्या का वैश्य वर्ण

मिथुन कुम्भ तुला का शूद्र वर्ण

वर

	ब्रा.	क्ष	वै	शू
ब्रा.	१	०	०	०
क्ष	१	१	०	०
वै	१	१	१	०
शू	१	१	१	१

यदि कन्या श्रेष्ठ वर्ण वाली हो और वर हीन वर्ण का हो तो विवाह नहीं करना चाहिये। दोनों का एक वर्ण श्रेष्ठ होता है।

विप्र वर्ण कन्या का क्षत्रियवर्ण वर के साथ मध्यम और वैश्य वर्ण वर के साथ अधम और शूद्र वर्ण वर के साथ अधमतर होता है।

समान वर्ण तथा श्रेष्ठ वर का श्रेष्ठ वर्ण होने से १ गुण और वर यदि हीन वर्ण हुआ तो शून्य गुण कहते हैं।

वर्ण दोष परिहार

हीन वर्णों यदाराशि तदीशोऽधिक वर्णकः।
तदाराशीश्वरो ग्राह्यस्तद्राशिं नैव चिन्तयेत् ॥

विवाह में वर्ण न मिलता हो और राशि में मिलता हो तो विवाह करने में कोई अशुभता नहीं होती।

वश्य विचार

हित्वा मृगेन्द्रं नरराशि वश्याः सर्वे तथैषां जलजाश्चभक्ष्याः।
सर्वेऽपिसिंहस्य वशोविजालिं ज्ञेयं नराणां व्यवहारतोऽन्यत् ॥

अर्थ—सिंह को छोड़कर शेष सब राशियां मनुष्य राशि, (मिथुन कन्या तुला धनु का पूर्वार्ध तथा कुम्भ) के वश में रहते हैं। और जलचर राशियां (कर्क मीन मकर का, उत्तरार्ध) मनुष्यराशि के भक्ष्य हैं। वृश्चक को छोड़ शेष सब राशियां सिंह के वश में हैं।

द्विपद (मनुष्य) राशयः	मिथुन कन्या तुला धनु का पूर्वार्ध कुम्भ		
जलचर राशि	कर्क मीन मकर का उत्तरार्ध		
चतुष्पद राशि	वृषभ मेष धनु का उत्तरार्ध मकर का पूर्वार्ध		
वनचर राशि	सिंह	कीट राशि	वृश्चिक

कन्या की राशि वर की राशि से भक्ष्य हो तो आधा गुण और मित्र या दोनों १ एक हों तो दो गुण और वर भक्ष्य हो तो शून्य। शत्रु और वश्य हों तो एक गुण होता है। वश्य का विचार लोक विचार से भी समझना चाहिये।

	चतुष्पद	मानव	जलचर	बनचर	कीट
चतुष्पद	२	१	१	॥	२
मानव	१	२	१	०	१
जलचर	१	॥	२	१	१
बनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

तारा विचार

कन्यर्क्षाद्वरभं यावत्कन्याभं वरभादपि।
गणयेन्नवभिः शेषेत्रि पंचाद्रिमसत्स्मृतम्॥

अर्थः—कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक तथा वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गणना कर नव का भाग देने से यदि ।३।५।७। बचें तो अशुभ तारा अन्यथा शुभ होती है—

तारा कुल ९ नव होती हैं जन्म १ सम्पत २ विपत ३ क्षेम ४ प्रत्यरि ५ साधक ६ वध ७ मैत्र ८ अतिमैत्र ९ इनमें दोनों की शुभ तारा हों तो ३ गुण एक की शुभ दूसरे की अशुभ हो तो १॥ गुण तारा में शून्य गुण नहीं होता है।

योनि ज्ञान

अश्विनी वारुणश्चाश्वोरेवती भरणीगजः पुष्यश्च कृतिका छागो नागश्च रोहिणी मृगः आर्द्रा मूलमपिश्वा च मूषकः फल्गुनी मघा, मार्जारोऽदितिराश्लेषा गोजातिरुत्तराद्वयम् महिषौ स्वाति हस्तौ च मृगो ज्येष्ठाऽनुराधिका व्याघ्रश्चित्रा विशाखा श्रुत्याषाढौ च मर्कटौ वसु भाद्रपदौ सिंहो नकुलोऽभिजिद्विश्वयोः। एतेषां कथितं भानां वैर मैत्र विचार्यताम्।

अर्थ—अश्विनी शतभिष को अश्वयोनिः रेवती भरणी की गज योनिः पुष्य कृतिका की मेष योनिः रोहिणी मृग शिर की नागयोनिः आर्द्रामूल की श्वान योनिः पूर्वा फाल्गुनी मघा की मूषक योनि पुनर्वसु आश्लेषा की मार्जार योनि उत्तरा भाद्रपद उत्तरा फाल्गुनी की गो योनि,, स्वाति हस्त की महिष योनि ज्येष्ठा अनुराधा की मृग योनि चित्रा विशाखा की व्याघ्र योनि श्रवण पूर्वाषाढ़ा की मर्कट (वानर) योनि धनिष्ठा पूर्वा भाद्रपद की सिंह योनि और अभिजित उत्तराषाढ़ की नकुल योनि है—

योगि वैर चक्रम्

भानि	योनयः	योनिवैर
अभिजित उत्तराषाढ़	नकुल	सर्प
धनिष्टा, पूर्वाभाद्र	सिंह	गज
पूर्वाषाढ़ा श्रवण	मर्कट	छाग
चित्रा विशाखा	व्याघ्र	गौ
ज्येष्ठा अनुराधा	मृग	श्वान
स्वाति हस्त	महिष	अश्व
उ०फाल्गुन उ०भाद्र	गौ	व्याघ्र
पुनर्वसु आश्लेषा	मार्जार	मूषक
पूर्वा फाल्गुनी मघा	मूषक	मार्जार
आर्द्रा मूल	श्वान	मृग
रोहिणी मृगशिरा	सर्प	नकुल
पुष्य कृतिका	छाग	मर्कट
रेवती भरणी	गज	सिंह
अश्विनी शतभिषा	अश्व	महिष

महद्वैर

अश्व महिष, मूषक मार्जार, गौ व्याघ्र, श्वान मृग मेष कर्कट, सर्प नकुल, गज सिंह इन योनियों में ४ भेद होते हैं अत्यन्त मित्र जैसे गौ महिष इस में ३ तीन गुण होते हैं और परस्पर शत्रु जैसे मृग व्याघ्र गौ सिंह इसमें १ एक गुण होता है और परस्पर में उदासीन जैसे गौ गज, और गौ मार्जार इनमें २ गुण होता हैं और महद्वैर में शून्य गुण होता है।

जैसे अश्व महिष और मूषक मार्जार में इस योनि के गुणों में थोड़ा सा मतभेद भी होता है कहीं किसी ने १ कहीं २ माने हैं।

ग्रहस्य　सुहृन्मध्यस्थ　शत्रूश्च—

शत्रू मन्द सितौ समश्च शशिनौ मित्राणि शेषाखे,
स्तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्च सुहृदौशेषाःसमाशीतगोः।
जीवेन्दूष्ण कराः कुजस्य सुहृज्ज्ञो ऽरिः सितार्की समौ
मित्रे सूर्य सितौ बुधस्याहिमगुः शत्रुः समाश्चापरे ॥
सूरे सौम्य सिताबरी रविसुतो मध्योऽपरे स्वन्यथा,
सौम्यार्की सुहृदौ समौ कुज गुरु शुक्रस्य शेषावरी,
शुक्रज्ञौ सुहृदौ समः सुर गुरुः सौरस्य चान्येऽरयो।
ये प्रोक्ताः स्वत्रिकोणभादिषु पुनस्तेऽमी मया कीर्तिताः ॥

गृह मैत्री चक्रम्

सू	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	गु.
चं. मं. गु.	सू. बु.	सू. चं. गु.	सू. शु.	सू.चं.मं.	श. बु.	शु. बु.	मित्र
बु.	चं. गु.शु.	शु. श.	गु.श.मं.	श.	गु. मं	गु.	सम
शु. श.	०	बु.	चं.	शु. बु.	सू. च.	सू.चं मं.	शत्रु

— राशि स्वामी —

मेष वृश्चिकयोर्भौमः, शुक्रो वृष तुलाधिपः
बुध कन्यामिथुनयोः, कर्कस्याधिपतिः चन्द्रमा
जीवोमीनधनु स्वामी शनि मकरकुम्भयोः
सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणकोत्तमैः ।

राशि स्वामी चक्र

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	गु.प.	
सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	मिथुन कन्या	धनु मीन	वृष तुला	मकर कुम्भ	राशयः	इत्यादि

वर्णभकूट वश्यतारा योनि का परिहार ग्रह मैत्री होती है।

यह ज्ञात होगा कि इसमें कुल ६ प्रकार हैं परस्पर में मित्र हों या दोनों का स्वामी एक ही ग्रह हो तो ५ गुण सम शत्रु हों तो आधा और सम मित्र हों तो ४ गुण शत्रु मित्र में १ एक गुण और परस्पर शत्रु होने से ० गुण शून्य और परस्पर सम हों तो ३ तीन गुण होते हैं।

गण मैत्री विचारमाह

अश्विनी मृगरेवत्योः हस्तः पुष्यः पुनर्वसुः
अनुराधा श्रुतिः स्वाती कथ्यते देवता गणः
तिस्रः पूर्वाश्चोत्तराश्च तिस्रोऽप्यार्द्रा च रोहिणी
भरणी च मनुष्याख्यो गणश्च कथितो बुधैः
कृतिकाच मघाऽश्लेषा विशाखा शततारका:
चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च मूल रक्षोगणः स्मृतः ॥

गण मैत्री फलमाह

स्वगणे परमा प्रीति र्मध्यमा देव मर्त्ययोः।
मर्त्य राक्षसयोर्मृत्युः कलहो देव राक्षसोः ॥

अर्थ—स्त्री पुरुष दोनों में अधिक प्रीति होय, देव मनुष्य गण दोनों हो तो सामान्यता प्रीति, मनुष्य राक्षस गण हो तो मृत्युः देव राक्षस गण हो तो हमेशा कलह बना रहे—

सत्य यह है कि वर देव गण कन्या मनुष्य हो तो ६ गुण मानते हैं पर मनुष्य गण कन्या देव गण हो तो ५ गुण होते हैं वर राक्षस कन्या मनुष्य हो तो ० शून्य गुण होता है कन्या राक्षस गण वर मनुष्य गण हो तो भी शून्य ० गुण होता है दोनों १ एक गण हों तो ६ गुण माने जाते हैं।

भकूट

परस्पर दोनों की एक राशि हो अथवा एक दूसरे से सप्तम हो तृतीय एकादश या चतुर्थ दशम राशि हो तो ७ गुण होते हैं तो द्वितीय द्वादश नवम पञ्चम राशि हो तो ७ गुण होते है–२ द्वितीय द्वादश नवम पञ्चम षडाष्टक में शून्य गुण होता है।

विषमात् कन्यकाराशेः षष्ट षष्ठाष्टकं न सत्।
समात षष्ठं शुभंज्ञेयं विपरीतं न शोभनम्॥

अर्थ—कन्या की राशि सम हो और वर की राशि से छठवीं पड़ती हो और वह विषम हो तो षडाष्टक का कोई दोष नहीं जैसे वृष से तुला कर्क से धन, कन्या से कुम्भ, वृश्चिक से मेष, मकर से मिथुन मीन से सिंह शुभ हैं और कन्या की विषम राशि से छठवी वर की राशि हो जैसे मेष से कन्या, तुला से मीन, धन से वृष, मिथुन से वृश्चिक, सिंह से मकर तथा कुम्भ से कर्क हो तो वह कन्या धनवती होती है, सारांश यह है कि राशि मैत्री प्रधान है।

द्विर्द्वादश—

मीन मेष, वृषभ मिथुन, इत्यादि द्विर्द्वादश शुभ होता है और मेष वृषभ तथा मिथुन कर्क आदि का द्विर्द्वादश अशुभ होता है।

वर की राशि से दूसरी राशि कन्या की हो तो धन का नाश और बारहवीं कन्या की राशि हो तो कन्या धनवती होती है।

नवम पञ्चक—

मीन कर्क का एवं वृश्चिक कर्क का और कुम्भ मिथुन का तथा

मकर कन्या का नवम पंचक शुभ नहीं होता परन्तु यह सर्वसम्मत नहीं। वर की राशि से पांचवीं राशि कन्या की हो तो सन्तान हानि और कन्या की नवमी राशि हो तो धन वाली कन्या होती है।

सम सप्तक--

मकर, कर्क, कुम्भ, सिंह, वृश्चक, वृष का सम सप्तम वैरप्रद होता है। इसी तरह वृषभ, सिंह, मेष, कर्क, मिथुन, मीन वृश्चिक, कुम्भ राशियों का दशम चतुर्थ अशुभ होता है।

दुष्टभकूटापवाद–

प्रोक्ते दुष्ट भकूटके परिणयस्त्वेकाधिपत्ये शुभो ।
अथो राशीश्वर राशीश्वर सौहृदेऽपि गदितोनाड्यर्क्ष शुद्धिर्यदिग ॥
अन्यर्क्षेशपयोर्बलित्व सहितेनाड्यर्क्ष शुद्धौतथा ।
ताराशुद्धिवशेन राशिवशता भावेनिरुक्तो बुधैः

अर्थ—दुष्ट भकूट में वर वधू की राशियों के स्वामी एक हैं। दोनों राशि राशियों में मित्रता और नाड़ी नक्षत्र की शुद्धि हो। दोनों राशि स्वामियों में यदि मित्रता न हो तो वर-वधु की राशि नवांश के स्वामियों में प्रबल मित्रता (जो उच्च स्वगृहादि वश होती हैं) हो तो और नाड़ी नक्षत्र की शुद्धि हो तथा तारा शुद्धि हो, राशि वशता हो, तो भी दुष्ट भकूट का दोष नहीं होता। उत्तम भकूट को वंगीय विद्वान राज जोटक कहते हैं। गृहमैत्री से, भकूट से गृहमैत्री का परिहार होता है।

नाड़ी विचार

मूलेन्द्राक भपाश्वंजैक चरणादित्यार्यमे शाश्विभै।
यामेन्द्वीज्य भमित्र भाग्यवसुभत्वाष्ट्राम्ब्वहिबुंध्न्यभैः॥
अन्यैर्नाड्य इहैक नाडिनवके स्यात्ताद्विगे चेन्मृतिः।
गौडा दाक्षिणातः कचिन्नृपमुखेपाश्वैक नाडीहिता॥

अर्थ—मूल, ज्येष्ठा, हस्त, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, पुनर्वसु,

उत्तरा फाल्गुनी, आर्द्रा, अश्विनी इन नव ९ नक्षत्रों की आदि नाड़ी भरणी, मृगशिर, पुष्य, अनुराधा, पूर्वा फाल्गुनी, धनिष्ठा, चित्रा, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा इन नव नक्षत्रों की मध्य नाड़ी और कृतिका रोहिणी, अश्विनीषा, मघा, स्वाति, विशाखा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण और रेवती। इन ९ नव नक्षत्रों की अन्त्य नाड़ी। एक नाड़ी में विवाह करने से मृत्यु होती है। किसी किसी आचार्य का मत है कि एक नाड़ी आदि अन्त्य की नाड़ी यदि एक होती है तो गोदावरी के दक्षिण में तथा क्षत्रिय वैश्यों के लिए अशुभ नहीं होती परन्तु मध्य नाड़ी सर्वत्र सर्व वर्णों को अशुभ होती है।

न धनं मध्यनाड्या दम्पत्योर्न वपार्श्वयो नाड्योः।

नाड़ी गण भकूटयोरपवादः

राश्यैके चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशि युग्मंतथैव।

नाड़ी दोषो नो गणानाञ्चदोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभंस्यात्॥

अर्थ--दोनों की राशि एक हो नक्षत्र भिन्न हो और नक्षत्र एक हो तो राशि भिन्न हो, तो नाड़ी गण का दोष नहीं होता। नक्षत्र एक हो परन्तु चरण चरण भेद अवश्य हो तो नाड़ी का कोई दोष नहीं परन्तु दोनों एक चरण नहीं होने चाहियें।

भयानक नाड़ी दोष पर विचार

आद्यांशेन चतुर्थांशं चतुर्थांशेन चादिमं, द्वितीयेन तृतीयंतु तृतीयेन द्वितीयकम् एवं भांशव्यधोयेषां जायते वरकन्ययो,र्तेषां मृत्युर्न संदेहः शेषांशाः स्वल्प दोषदाः,

अर्थ--यदि वर वधु के नक्षत्र एक नाड़ी के हों और वर का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण का तथा वधु का चतुर्थ चरण का हो अथवा एक का नक्षत्र के द्वितीय चरण का दूसरे का तृतीय चरण का जन्म होगा तो एक नाड़ी का दोष अवश्य रहेगा और फिर चाहे जितने भी गुण मिलें पर वे सब "अजागलस्तनायन्ते नाड्यैके वकलाः गुणाः" के अनुसार

अजागलस्तन के समान व्यर्थ ही होंगे—सारांश यह है कि एक का प्रथम चरण का जन्म हो और दूसरे का द्वितीय वा तृतीय चरण का जन्म हो वा एक का द्वितीय चरण का जन्म हो और दूसरे का प्रथम या चतुर्थ चरण का जन्म हो तो नाड़ी का दोष नहीं मानना चाहिये अर्थात सापवाद नाड़ी रही।

कन्यकर्क्षं त्रिपाच्चेत स्याद्गणयेत् कृतिकादिकम्।
चतुर्भिपर्वभिस्तद्वदभिजित्तारकान्वितम् ।
कन्यकर्क्षं द्विपाच्चेत्स्यात् गणयेत् सौम्यभादिकम्।
पचभिस्त्ववरोहेतु पंचमागुलिवर्जिते ॥

अर्थ—कन्या का नक्षत्र यदि त्रिपाद हो तो कृतिका से ४ अंगुलियों पर गणना करनी चाहिये और यदि कन्या का नक्षत्र द्विपाद होगा तो कनिष्टकादि ५ पांच अंगुलियों पर मृगशिरा से क्रम से और अंगुष्ठ छोड़कर उत्क्रम से चार अंगुली पर गणाना करने से यदि एक ही पर वर वधु के नक्षत्र आवें तो नाड़ी का दोष नहीं। कुल नक्षत्र तीन जातियों में विभक्त हैं द्विपाद, त्रिपाद, चतुष्पाद।

"चतुष्पात्कन्यका ऋक्षं गणयेदश्विभादिकम्"
त्रिभं सव्यापसव्येन भिन्नं पर्वदुःखावहम् ॥

अर्थ—कन्या का नक्षत्र यदि चतुष्पाद हो तो अश्विनी से आदि मध्य अंत्य के हिसाब से ही गणना करें।

द्विपाद	त्रिपाद	चतुष्पाद	अनु
मृग	कृतका	अ० आश्ले०	ज्ये
चित्रा	पुनर्वसु	भ० म०	मूल
धनिष्ठा	उत्तराफा०	रो० पू० फा०	पू० षा०
	विशाखा	आद्रा० हस्त	श्र०
	उ० षा०	पुष्य० स्वा०	शत
	पू० भा०		उ० भा०
			रेवती

सारांश यह हैकि कन्या का नक्षत्र द्विपाद होतो पंच पर्वात्मक रीति से त्रिपाद हो तो चतुःपर्व गणना से चतुष्पाद हो तो त्रिपर्व से गिने।

कन्या का चतुष्पाद नक्षत्र हो तो कनिष्टका, अनामिका मध्यमा पर से क्रमोत्क्रम से गिनता जाय जैसे प्रायः गिनते हैं। दोनों का नक्षत्र एक ही अंगुली पर आवें तो दोष लगेगा और यदि कन्या का नक्षत्र त्रिपाद होगा तो कनिष्टका अनामिका मध्यमा तथा तर्जनी तक चार अंगुलियों पर कृतिकादि क्रमोत्क्रम से साभिजित् गणना करे और दोनों की एक अंगुली पर आवें तो दोष लगेगा, यदि कन्या का द्विपाद नक्षत्र होगा तो मृगशिरा से कनिष्टका अनामिका मध्यमा तथा तर्जनी एवं अंगुष्ठ छोड़कर चार ही अंगुली पर गणना से यदि एक ही अंगुली पर दोनों के नक्षत्र आवें तो नाड़ी दोष लगा अन्यथा नहीं। देश भेद से पाञ्चाल में ५ नाड़ी अहिल्या देश में ४ नाड़ी का विचार लिखा है।

नाड़ी अंश भेदा भेद बोधक चक्र

१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
४	३	२	१	४	३	२	१	४	३	२	१
१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
४	३	२	१	४	३	२	१	४	३	२	१
१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
४	३	२	१	४	३	२	१	४	३	२	१

१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
४	३	२	१	४	३	२	१	४	३	२	१
१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	१

उदाहरण—

जैसे वर का जन्म अश्विनी के प्रथम चरण का है और वधु का जन्म पुनर्वसु के द्वितीयचरण का है, वा वर का जन्म उत्तरा भाद्रपद २ चरण का है और कन्या का जन्म चित्रा के ४ चतुर्थ चरण का है अतएव १ एक नाड़ी होने पर भी अंश भेद हैं, तथा वर का नक्षत्र चतुष्पाद है और कन्या का द्विपाद है अत एव सापवाद मिलान हुआ यह भी एक परिहार है।

रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नी पुष्य श्रवण पौष्णभं
अहि बुध्न्यर्क्ष मेतेषां नाड़ी दोषो न विद्यते ॥

अर्थ—रोहिणी आर्द्रामृगशिर ज्येष्ठा पुष्य श्रवणरेवती और उत्तरा भाद्रपद में एक नाड़ी का दोष नहीं।

नृदूर दोपमाह

भामिनी जन्म नक्षत्रात् द्वितीयं पति जन्मभम्।
न शुभं भर्तृ नाशाय कथितं ब्रह्मयामन्ये।

वधू के नक्षत्र से यदि दूसरा पति का नक्षत्र हो तो इसे नृदूर दोष कहते हैं यह पति का नाशक होता है, इसके अनेक परिहार हैं।

भिन्नर्क्षराश्यैककम् त्रिभिन्नांघ्र्यैकभमेतयो गणखगौ नाडी नृदूरञ्च न।

अर्थ—नक्षत्र भिन्न हो कर नाड़ी एक हो नक्षत्र चरण भेद हो दूसरा, "खेटोत्तमैभ्योः शुभम् ग्रहमैत्री हो तो नृदूर का दोष नहीं

लगता, तीसरा यह है कि यह दक्षिण देश में ही विचारणीय है अन्य देशों में नहीं कन्या के जन्म नक्षत्र से दूसरा शुभ नहीं माना परन्तु, शतभिषा, हस्त, स्वाती, अश्विनी, कृत्तिका, पूर्वाषाढ़ा, मृगशिरा, और मघा हो तो दोष नहीं।

गुण व्यवस्था

गुणैः षोडशभिर्निन्द्यं मध्यमाविंशतिस्तथा।
श्रेष्ठं त्रिशद्गुणं यावत्परतस्तूत्तमोत्तमम्॥

अर्थ—१६ गुणों तक निंद्य, १६ से २० तक मध्यम ३० तक श्रेष्ठ इसके ऊपर उत्तमोत्तम होता है, कुल गुण ३६ माने हैं, अत एव व १८ से उपर करना चाहिये, अर्द्धेन्दूर्ध्वे शुभम्, भकूट न बनता हो तो २० गुण से कम निकृष्ट २५ तक मध्यम आगे श्रेष्ठ, और भकूट बनता हो तो १६ तक निकृष्ट बीसतक मध्यम उपरान्त श्रेष्ठ, नाड़ी और गण बनता होतो १८ से उपर शुभ होता है।

विवाहे विचारणीय वार्तायें

असपिण्डा च या मातुरसगोत्रा च या पितुः।
सा प्रशस्ता द्विजातीनां दार कर्मणि मैथुने॥

अर्थ—माता की सपिंड (माता से, सात पीढ़ी के भीतर) नहो, और जो पिता के गोत्र की भी नहो ऐसी स्त्री से विवाह करना चाहिये।

अनन्य पूर्विं कान्तामकः सपिण्डांयवीयसीम्।
अरोगिणीं भ्रातृमतीमसमानार्षगोत्रजाम्॥

अर्थ—दूसरे ने जिसे ग्रहण न किया हो जो अपने सपिण्ड की न हो, अपने से जो छोटी हो शरीर से आरोग्य हो, और जिसके भाई हो, असमान प्रवरवाली कन्या से विवाह करना चाहिये।

नोद्वहेत् कपिलां कन्यां नधिकांगीं नरोगिणीम् ।
नालोमिकां नातिलोमां न वाचाटां पिंगलाम् ॥

अर्थ—जिसके पीलेकेशहों, अधिक अङ्ग हों, जो नित्य रोग वाली हो जिसके शरीर पर सर्वथा रोम न हो अथवा अधिक रोम हो जो कठोर बोलती हो और जिस कन्या के नेत्र पीले हों (वा) कंजे हों, ऐसी कन्या के साथ पाणी ग्रहण करना वर्जनीय है।

अव्यङ्गाङ्गीं सौम्य नाम्नीं हंस वारणगामिनीम् ।
तनुलोमां केशदशनां मृद्वङ्गीमुद्वहेत् स्त्रियम् ॥

अर्थ—जिसके अङ्ग विकल न हो जिसका नाम मधुर हो, जो हंस व हाथी के समान चलने वाली हो, जिसके छोटे, छोटे, रोम केश और दांत हो और जिसका अङ्ग कोमल हो ऐसी स्त्री से विवाह करे। आरोग्य कुलशील सम्पन्न जयी और कुष्ट से दूषित नहीं पतित नपुंसक अन्याय को कन्यानहीं देनी चाहिये।

अर्चितं वचनमुज्ञतं मनोर्निर्विशेष सुखदं वपुर्दशाम् ।
अस्तिचेद्धपराङ्मुखी मति लक्षणैः किमपरैं नृ योषिताम् ॥

अर्थ—उत्तम भाषण मन उदार देखने योग्य, रूप और पापसे भय, इतने लक्षण वर वधू में हो तो अधिक उत्तम होता है, और लक्षणों की देखने की कोई आवश्यकता नहीं।

यस्मिन्पंचजनेमनः सनयने, संतोषमृच्छेतथा ।
कन्यायामपियत्रतत्रसफला ऋद्धिर्भवेदित्यकः ॥

अर्थ—जिस वर और कन्या की आकृति देखकर नेत्र मनको प्रसन्नता हो, वहां समझिये सब सिद्धियां हैं, ब्रह्मचारी, धर्म को जानने वाले सदा चार से युक्त उच्च कुल वाले, वर को कन्या देना चाहिये।

विवाह सम्बन्धी ठीक विचार गृह्य सूत्रों से ही मिलाना उचित

है गोभिल ने तथा अन्य आचार्यों ने विवाह रजस्वला होने से कुछ पहिले कहा है, रजस्वला का समय भारत में प्रत्येक प्रान्त में अलग २ है अत एव विवाह की अवस्था बड़ी विचारणीय है, तो भी यह नियम हैं १२ वर्ष से पहिले ही करना उचित है।

सुश्रुत कारने कहा है कि—

तद्वर्षात् द्वादशात् काले वर्तमानमसृक पुनः
जरा पक्व शरीराणांयाति पंचाशतः क्षयम्।

अर्थ—अर्थात् १२ वर्ष से स्त्री को रज (रुधिर) आरम्भ होता है और पचास वर्ष के करीब बन्द होता है।

अथाऽस्मै पंचविंशति वर्षाय द्वादशवर्षां पत्नीमावहेत्।

अर्थात् २५ वर्षका पुरुष १२ वर्ष से उपरान्त वर्ष की लड़की के साथ विवाह करना उचित है, भारत की जल वायु-एवं गर्मी सरदी के अनुसार १४-१५-१६ वर्ष रजस्वला ग्रन्थकार मानते हैं १६ वर्ष से पहले गर्भाधान हानि कारक माना गया है।

ऊनषोडशवर्षायामप्राप्तः पंचविंशतिम्।
यद्याधत्ते पुमान् गर्भं कुक्षिस्थः स विपद्यते॥
जातो वा न चिरं जीवेत् जीवेद्वा दुर्बलेन्द्रियः।

वेदों में भी उसी तरह की आज्ञा मिलती है।

तावेव विवाहावहै सरेतो दधावहै प्रजां प्रजनयावहै।
अक्षारालवणाशिनौ ब्रह्मचारिणौ स्थलं कुर्वाणावथ॥
भूमिशायिनौ स्याताम् त्रिरात्रं द्वादश रात्रम्।

पाणिग्रहण के अनन्तर ३ तीन वा १२ द्वदश रात्री पर्यन्त ब्रह्मचर्य नरहसके तो ३ तीन रात्रि पर्यन्त ब्रह्मचर्य रखकर चतुर्थी कर्म करके पति पत्नि समागम करें।

संवत्परं नमिथुनमुपयाताम् ।
वा द्वादशरात्रं षडरात्रं त्रिरात्र मन्ततः ॥

लग्न शुद्धिः

व्ययेशनिः खेऽवनिजस्तृतीये, भृगुस्तनौ चन्द्रखलानशस्ताः ।
लग्नेट कविग्लौश्चरिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट शुभाराश्चमदेचसर्वे ॥

विवाह लग्न से बारहें शनि दसवें मंगल, तीसरे शुक्र लग्न में चन्द्रमा और पाप ग्रह शुभ नहीं होते । लग्नेश और शुक्र तथा चन्द्रमा छटवें स्थान में शुभ नहीं । आठवें लग्नेश और चन्द्रमा तथा मंगल और शुभ ग्रह तथा सप्तम में एक भी ग्रह शुभ नहीं होता ।

व्ययाष्ट षटसु रवि केतु तमोऽर्क पुत्रा ।
व्यायारिगःक्षितिसुतो द्विगुणायगोऽब्जः॥
सहव्ययाष्ट रहितोज्ञ गुरु सितोष्ट ।
त्रिघून षड्व्यय गृहान् परिहृत्य शस्तः ॥

अर्थ--तृतीय, एकादश, अष्टम और छटवें रवि केतु राहु और शनि तृतीय एकादश और षष्ट में मंगल । द्वितीय तृतीय और एकादश में चन्द्रमा सप्तम द्वादश और अष्टम को छोड़ शेष स्थानों में बुध और गुरु अष्टम तृतीय सप्तम षष्ठ और व्यय को छोड़ कर शेष स्थानों में शुक्र शुभ होता है ।

विवाह वृन्दावन के मतानुसार भी

त्याज्याः लग्नेऽब्धयोमन्दात्, षष्ठे शुक्रेन्दुलग्नपः ।
रन्ध्रे चन्द्रादयः पञ्च सर्वेऽस्तेऽत्र गुरु समौ ॥

अर्थ--लग्न में शनि से चारग्रह शनि, सूर्य, चन्द्र, भौम ये त्याज्य हैं षष्ट स्थान में शुक्र, चद्रमा और लग्नेश त्याज्य हैं, अष्टम स्थान में चन्द्रमासे पांच ग्रह, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र ये त्याज्य हैं । सप्तम स्थान में सभी ग्रह त्याज्य हैं ।

विवाह लग्न में किस ग्रह के कौन भाव में रहने से कितने २ विश्वेबल होता है।

विश्वे	ग्र	वि	वि	वि	वि	वि	वि	वि	वि	वि	चक्र
३॥	सूर्य	३	११	८	६	०	०	०	०	०	स्थान
५	चं	२	३	११	०	०	०	०	०	०	स्थान
११	भौ	३	११	६	०	०	०	१	०	०	स्थान
२	बु	१	२	३	४	५	६	९	१	१	स्थान
३	बृ	१	२	४	४	५	६	१	१०	११	स्थान
२	शु	१	२	८	५	०	९	०	०	०	स्थान
१॥	श	३	११	८	६	०	०	०	०	०	स्थान
१॥	रा	३	११	८	६	०	०	०	०	०	स्थान

११	के	३	११	८	६	०	०	०	०	०	स्थान
२०	मेष										स्थान

अथ विष कन्या योगः

सूर्य भौमार्कि वारेषु तिथि भद्राशताभिधम् ।
आश्लेषा कृतिका चेत्स्यात्तत्र जाताविषांगना ॥

अर्थ—रवि मङ्गल शनिश्चर इन वारों में भद्रा तिथि में आश्लेषा कृतिका इन नक्षत्रों में कन्या उत्पन्न होय तो वह विष कन्या कहाती है—

जनु लग्ने रिपु क्षेत्रे संस्थितः पाप खे चरः ।
द्वौ सौम्यात्रपि योगेऽस्मिन्संजाता विष कन्यका ॥

अर्थ—जन्म लग्न में शत्रु क्षेत्री पापग्रह स्थित होय तथा दो शुभ ग्रह भी वहीं लग्न में स्थित होय तो भी विष कन्या कहाती है:—

लग्ने शनैश्चरो यस्याः सुतेऽर्को नवमे कुजः ।
विषाख्या सापि नोद्वाह्याः विविधा विष कन्यकाः ॥

अर्थ—जिस कन्या के जन्म लग्न में शनिश्चर होय पांचवें स्थान में सूर्य नौवें स्थान में मंगल होय तो भी विष कन्या होती हैं इस प्रकार के अनेक योग विष कन्या होती हैं उनका विवाह निषेध है।

विष कन्या दोष परिहार

सावित्र्यादि व्रतं कृत्वा वैधव्य विनिवृत्तये ।
अश्वत्थादिभिरुद्वाह्यदद्यातां चिरजीवने ॥

अर्थ—वैधव्य दूर करने के लिए सावित्र्यादिक व्रत करके पीपल आदि वृक्षों के साथ विवाह करे फिर चिरजीवी वर को देवे।

जन्म कालिक दुष्ट नक्षत्र फलम्

आश्लेषाख्य समुत्पन्नौ श्वश्रू कन्या सुतौहतः ।
मूलजो श्वशुरं हन्ति ज्येष्ठोत्था स्वधवाग्रजाम् ॥
कन्यका तु विशाखोत्था निहन्ति देवरं स्वकम् ॥

अर्थ—यदि कन्या अथवा पुत्र आश्लेषा नक्षत्र में उत्पन्न होय तो दोनों सासों का नाश करते हैं, मूल नक्षत्र में उत्पन्न हुई कन्या श्वसुर का नाश करती है और विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न हुई कन्या देवर का नाश करे ।

अथास्यापवाद

आश्लेषा प्रथमः पादः पादो मूलान्तिमस्तथा ।
विशाखा ज्येष्ठयोराद्यास्त्रयः पादा शुभावहाः ॥

अर्थ—आश्लेषा का प्रथम चरण और मूल का अन्तिम चरण विशाखा ज्येष्ठा के पहिले ३ तीन चरण शुभ हैं ।

दिवान्धादि लग्न माह

दिने सदान्धाबृषमेष सिंहाः, रात्रौ च कन्या मिथुनं कुलीरः ।
मृगस्तुलालिर्बधिरो ऽपराह्ने, संध्यासु कुब्जा घट धन्वि मीनाः ॥

अर्थ—मेष बृष सिंह दिन में अन्ध लग्न हैं कन्या, मिथुन, कर्क, राशि में मकर तुला वृश्चिक अपराह्न में बधिर हैं, कुम्भ धनु मीन संध्या समय में कुबड़े हैं ।

फल माह

दिवान्धो वर हन्ता च, रात्र्यन्धो धननाशकः ।
दुःखदा बधिरः प्रोक्तः कुब्जो वंश विनाशकः ॥

अर्थ—दिवान्ध राशि के लग्न में विवाह हो तो वर को हानि होती है, रात्रि के अन्ध लग्न में विवाह हो तो धन का नाश होता है

और बधिर लग्न में पाणिग्रहण हो तो धन का नाश होता है दुःख और कुबड़े लग्न में विवाह हो तो वंश का नाश होता है।

॥ गोधूली विचार ॥

यत्र चैकादशश्चन्द्रो द्वितीयश्च तृतीयकः ।
गोधूलिकः सविज्ञेयः शेषाधूलिमुखाः स्मृताः ॥

अर्थ—ग्यारहवें अथवा दूसरे तीसरे स्थान में चन्द्रमा हो तो गोधूलिक हैं, अन्य स्थान में चन्द्रमा के होने से धूलि मुख जानना।

कुलिकः क्रान्ति साम्यश्च, लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी ।
तदा गोधूलिकस्त्याज्यः पञ्च दोषैश्च दूषितः ॥

कुलिक और क्रान्ति साम्य तथा, लग्न छठवें और आठवें स्थान में चन्द्रमा हो तो गोधूलिक लग्न में विवाह करना नहीं चाहिए, क्योंकि वह लग्न पांच दोषों से दूषित होता है।

गोधूली का समय

यदा नास्तं गतो भानु गोधूल्या पूरितं नभः ।
सर्व मंगल कार्येषु गोधूलिश्च प्रशस्यते ॥

अर्थ—सूर्य अस्त न होये और गोखुरन की धूर आकाश में पूरित हो रहा हो तो यह समय सम्पूर्ण उत्तम कार्यों में मंगलदायक है, इसको गोधूलि कहते हैं।

अष्टमे जीव भौमौ च बुधो वा भार्गवो ऽष्टमे ।
लग्ने षष्ठेऽष्टमे चन्द्रस्तदा गोधूलिनाशक ॥१४४॥

जो लग्न से आठवें स्थान में भौम गुरु बुध शुक्र ये ग्रह बैठे हो अथवा लग्न में वा छठवें चन्द्रमा हो तो गोधूलि नाशक दोष होता है ॥ १४४ ॥

गोधूलि नाशक योग

अष्टमे जीव भौमे च बुधाग भार्गवोऽष्टमें ।
लग्ने षष्ठमे चन्द्रस्तदा गोधूलि नाशकः ॥

अर्थ—जो लग्न से आठवें स्थान में भौम, गुरु बुध अथवा शुक्र ये ग्रह हों अथवा लग्न में १-६-८ वें स्थान में चन्द्रमा हो तो ये गोधूलि नाशक योग है इसमें सर्व कार्य वर्जित हैं ।

केन्द्र में बृहस्पति का शुभत्व

किं कुर्वंति ग्रहाः सर्वे यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः ॥
मत्त मातंग यूथानां शतं हन्ति च केशरी ॥

अर्थ—जो केन्द्र स्थान १-४-७।१० इनमें बृहस्पति अकेला भी हो और सब ग्रह अरिष्ट कर्ता हों तो भी वे क्या कर सकते हैं जैसे सिंह अकेला ही सैकड़ों हाथियों के झुण्ड को नाश कर देता है ।

लग्न में गुरु शुक्र तथा बुध का शुभत्व

शुक्रो दश सहस्राणि बुधो दश शतानिच ।
लक्षमेकं तुदोषाणां गुरु र्लग्ने व्यपोहति ।

अर्थ—यदि लग्न में शुक्र हो तो दस हजार दोषों को हरे और बुध हो तो हजार दोषों को हरता है और गुरु हो तो लाख दोषों को हरता है ।

विवाह में लग्न में वर्ज्य दोष

परिघार्धं व्यतीपातं वैधृतिं सकलं त्यजेत्
विष्कुंभे घटिकाः पंच शूलं सप्तप्रकीर्तिता

षड गण्डे चाति गंडे द नव व्याघात वज्रयोः
एतेतु नव योगाश्च वर्ज्या लग्ने सदा बुधैः

अर्थ—परिध की ३० घटी व्यतीपात और वैधृति का संपूर्ण त्याग

विष्कुंभ की ५ व शूलकी ७ घड़ी त्याज्य हैं और गंड तथा अतिगंड की ६ व्याघात की तथा वज्र की ८ घड़ी ये योग विद्वानों को विवाह लग्न में तथा शुभ कार्यों में त्याज्य हैं।

व्यतीपातादि योगों में विवाह का फल

व्यतीपाते भवेन्मृत्यु गंडान्ते मरणं ध्रुवम्
अग्निदग्धो भवेद्वज्रे रुजश्चैवापि गंडके
वैधव्यं वैधृतौ चैव विष्कुंभेकामचारिणी
वीर्यं हीनोऽतिगंडे च व्याघाते मृतवत्सका
परिघेच भवेद्दासी मद्य मांस रता सदा

अर्थ—व्यतीपात में विवाह करे तो मृत्यु हो, गंडांत में करे तो भी मृत्यु हो वज्र में विवाह करे तो आग लगे गंड में रोग हो। वैधृति में वैधव्य हो, विष्कुंभ में स्त्री स्वेच्छाचारिणी अतिगंड में धातु का क्षय हो व्याघात में मृत्वत्सा हो परिघ में पराई दासी हो, और मांस मदिरा का सेवन करे।

तैलाभ्यङ्ग

तैलाभ्यङ्गे रवौतापः सोमे शोभा कुजेमृतिः
बुधेधनं गुरौहानिः शुक्रे दुःखं शनौसुखम्
रवौपुष्पं गुरौदूर्वा भौमवारे च मृतिका
गोमयं शुक्रवारे च तैलाभ्यङ्गे न दोषभाक् इति

अर्थ—रविवार को तेल लगावे तो ताप होवे चन्द्रमा को शोभा, मंगल को मृत्यु बुध को धन गुरु को हानि शुक्र को दुःख शनि को सुख होता है और आवश्यक हो तो रवि को फूल डालकर गुरुवार को दूब डालकर भौमवार को मिट्टी डालकर और शुक्रवार को गोबर डालकर लगावे तो दोष नहीं होता है।

वधू प्रवेश

हस्तत्रये ब्रह्म युगे मघायां पुष्पे धनिष्ठा श्रवणोत्तरेषु
मूलानुराधा हय रेवतीषु स्थिरेषु लग्नेषु वधू प्रवेशः

अर्थ—हस्त, चित्रा, स्वाती, रोहणी मृगशिरा मघा पुष्य धनिष्ठा श्रवण तीनों उत्तरा मूल अनुराधा अश्विनी रेवती इन नक्षत्रों में और वृष सिंह वृश्चिक कुम्भ इन लग्नों में वधू प्रवेश शुभ होता है।

मुहुर्त प्रकरणम्

द्विरागमन मुहूर्त

धातृयुग्मंहयो मैत्रं श्रुति युग्मंकरत्रयम्
पुनर्वसुद्वयं पूषा मूलंचाप्युत्तरात्रयम्

अर्थ—रोहिणी, मृगशिरा, अश्विनी, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाति, पुनर्वसु, पुष्य, रेवती इतने नक्षत्र श्रेष्ट हैं।

विषमे वत्सरे माघे मार्गेमेषेच फाल्गुने
मकरे मिथुने मीनो लग्नः कन्या तुलाधनु

अर्थ—विषम, वर्ष, तथा मार्गशीर्ष, वैसाख, फाल्गुन इतने महीने तथा मकर, मिथुन, मीन, कन्या, तुला, धनुः इतने लग्न द्विरागमन श्रेष्ट हैं।

भौमार्क वर्जितावारा गृह्यन्ते चद्विरागमे
षष्ठीरिक्ता द्वादशी च अमावस्या च वर्जिताः

अर्थ—भौमवार, शनिवार, सूर्यवार इन वारों को छोड़कर तथा ६ षष्टी रिक्ता ४-९-१४ द्वादशी १२ अमावस को छोड़कर अन्य तिथि ग्राह्य हैं

सीमन्त का मुहूर्त

आर्द्रात्रयं भाद्रयुग्मं मृगः पूषा श्रुतिः करः
मूलत्रयं गुरौसूर्ये भौमेरिक्तं विनातिथि
आद्ये द्वयेत्रयेमासे लग्नेकन्या झषे स्थिरे
चापे पुंसवनं कुर्यात्सीमंतं चाष्टमेतथा

अर्थ—आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, मृगशिर, रेवती, श्रवण, हस्त, मूल, पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ इन नक्षत्रों में गुरु रवि भौमवार में और रिक्ता तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में तथा आठवें मास में सीमन्त करना चाहिये।

पुंसवन मुहूर्त

शुभे त्रिकोणे केन्द्रस्थे पापेषष्ठे त्रिलाभगे
पुत्रकामः स्त्रियं गच्छेत्वरो युग्मासुरात्रिषु

अर्थ—जब त्रिकोण ९-८ और केन्द्र १,४,७,१० इनमें शुभग्रह हों तो ३,६,११ में पाप ग्रह हों तो तब ऐसा लग्न में तथा मासिक धर्म के तीन ३ दिन त्याग कर और सम रात्रियों में पुत्र की इच्छा रखने वाला मनुष्य स्त्री के पास सन्तानोत्पत्ति के लिए जाय।

नामकरण मुहूर्त

पुनर्वसुद्वये हस्तत्रये मैत्रद्वये मृगे
मूलोत्तरा धनिष्ठाः स्युः द्वादशैकादशेदिने
अन्यत्रापि शुभेयोगे वारेबुध शशांकयो
भानोर्गुरोः स्थिरे लग्नेबालनामकृतं शुभम

अर्थ—पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, मृगशिर, मूल, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़, उत्तराफाल्गुनी और धनिष्ठा नक्षत्रों में ११-१२ दिन बुध, चन्द्र, रवि और गुरुवार में स्थिर लग्न में शुभयोग में बालक का नाम करण करें।

बाल निष्कासन मुहूर्त

मैत्रत्रये हरिद्वन्द्वे विधिद्वन्द्वे ऽदितिद्वये
स्वाति हस्तोत्तराषाढा पूषर्यमद्वयेषु च
सिंहत्रये घटेलग्ने मासयोस्त्रि चतुर्थयोः
यात्रातिथौच निष्कास्यः शिशुर्नैवार्कि भौमयोः

अर्थ—अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, रोहिणी, मृगशिर पुनर्वसु, पुष्य, स्वाति, हस्त, उत्तराषाढ़, रेवती, उत्तराफाल्गुनी, अश्विनी इन नक्षत्रों में सिंह, कन्या, तुला और कुम्भ इन लग्नों में तीसरे चौथे मास में यात्रा की तिथियां २,३,५,७,१०,११,१३ और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथियों में तथा शनिवार और मंगलवार को छोड़कर अन्य शुभ वारों में बालक को घर से बाहर निकालना चाहिये।

प्रसूतिस्नान मुहूर्त

रोहिण्युत्तर रेवत्यो मूलं स्वात्यऽनुराधयोः
धनिष्ठाचत्रयः पूर्वाज्येष्ठा च मृगशीर्षकम्
एतान्युक्तानि भानि प्रसूतिस्नान कोविदैः
वारे भौमार्कयोर्जीवे स्नानमुक्तं सदैवहि

अर्थ—रोहिणी तीनों उत्तरा, रेवती, मूल, स्वाति, अनुराधा, धनिष्ठा, तीनों पूर्वाः पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद, पूर्वाषाढ़, ज्येष्ठा, मृगशिरा ये चौदह नक्षत्र और मंगल रवि गुरु य वार प्रसूति स्नान में पंडितों ने सदैव श्रेष्ठ कहे हैं।

आद्यान्नप्राशन मुहूर्त

आद्यान्न प्राशने पूर्वा सर्पार्द्रा वरुणीयम्
नक्षत्राणि परित्यज्य भौमार्क नंदने
द्वादशी सप्तमी रिक्ता पर्वनंदास्तु वर्जिता

लग्नेषुच झषो ग्राह्यो वृषः कन्या च मन्मथः
शुक्ले पक्षे शुभेयोगे संग्राह्य शुभचन्द्रमाः
मासे षष्टाष्टमे पुंसां स्त्रियो मासेच पंचमे

अर्थ–पुत्र तथा कन्या के (आदि) प्रथम अन्न प्राशन में तीनों पूर्वा पूर्वाषाढ़, पूर्वाभाद्रपद पूर्वाफाल्गुनी श्लेषा आर्द्रा शतभिष भरणी यह सब नक्षत्र त्याज्य हैं तथा भौम मंगल शनिवार भी त्यागे हुए हैं। और द्वादशी सप्तमी ४,८,१४,३०,१, ६,११ इत्यादि तिथियां त्यागी हुई हैं।मीन वृष मिथुन कन्या यह लग्न ग्राह्य हैं। शुभयोग शुक्लपक्ष शुभ चन्द्रमा के दिन षष्ठे ६ तथा आठवें मास में पुत्र के लिए-पुत्री के लिए पंचम मास शुभ कहा है

चूड़ा कर्म मुहूर्त

पुनर्वसुद्वयं ज्येष्ठा मृगश्च श्रवणद्वयम्
हस्तत्रयेच रेवत्यां शुक्लपक्षोत्तरायणे
लग्नंगोस्त्री धनुः कुम्भौमकरौ मन्मथस्तथा
सौम्यवारे शुभेयोगे चूड़ाकर्म स्मृतंबुधैः

अर्थ—पुनर्वसु, पुष्य, ज्येष्ठा, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्टा, हस्त, चित्रा स्वाति रेवती इतने नक्षत्र ग्राह्य हैं तथा शुक्लपक्ष उत्तरायण सूर्य वृष कन्या धन कुम्भ मकर मिथुन यह लग्न ग्राह्य तथा चन्द्र बुध शुक्र गुरु ये सब ग्राह्य हैं, जन्म मास रिक्तातिथि अशुभ योग अशुभ वार चूड़ा कर्म में त्याज्य हैं।

विद्यारम्भ मुहूर्त

मृगात्कराच्छ्रुतिभये ऽश्विमूल पूर्विकात्रये
गुरु द्वयेऽर्क जीवविस्तिलेऽह्निषड शरात्रिके
शिवार्क दिग्द्विकेतिथौ ध्रुवान्त्यमित्रभे परैः
शुभै रधीतिरुत्तमा त्रिकोण केन्द्रगैः स्मृता

अर्थ—मृगशिरा आर्द्रा पुनर्वसु हस्त चित्रा स्वाति श्रवण धनिष्ठ शतभिषा अश्विनीसमूल तीनों पूर्वा, पुष्य श्लेषा, इन नक्षत्रों में विद्यारम्भ शुभ है, रविवार गुरुवार बुधवार शुक्रवार ये दिन शुभ हैं और छट ६ पञ्चमी ५ तीज ३ एकादशी ११ द्वादशी १२ दशमी १० द्वितीया ये तिथियां शुभ हैं अन्य आचार्यों के मतानुसार ध्रुव नक्षत्र तथा रेवती अनुराधा ये शुभ हैं शुभग्रह त्रिकोण ५.९ वा केन्द्र में १.४.७.१० उत्तम कहे हैं विद्यारंभ मुहूर्त में

रोगीस्नान मुहूर्त

आश्लेषा द्वितयं स्वाती रोहिणी च पुनर्वसुः
रोगिस्नाने रेवती च वर्जयेदुत्तरा त्रयम्
रिक्ता तिथौ चरे लग्ने वारे च रवि भौमयोः
स्नानं च रोगिणां प्रोक्तं द्विज भोजन संयुतम्

अर्थ—आश्लेषा, मघा, स्वाति, रोहिणी, पुनर्वसुः तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में रोगी को स्नान कराना वर्जित है, और ४-९-१४ रिक्ता तिथि मेष कर्क तुला मकर ये लग्न रवि मंगल ये वार और शुभ चन्द्रमा में ब्राह्मण भोजन मंगलीक कार्य करके रोगी को स्नान कराना शुभ है।

क्षौर मुहूर्त

पुनर्वसु द्वयं क्षौरं श्रुतियुग्मं करत्रयम्
रेवती द्वितयं ज्येष्ठा मृगशीर्ष च गृह्यते
क्षौरे प्राणहरास्त्याज्या मघामित्र चरोहिणी
उत्तरा कृतिका वाराभानु भौम शनैश्चरा
रिक्ता षष्ठाष्टमी हेयाः क्षौरे चन्द्रक्षयो निशा
संध्या विष्टिश्च गण्डान्तं भोजनान्तं चगोगृहम्

अर्थ—पुनर्वसु पुष्य श्रवण धनिष्ठा, हस्त चित्रा, स्वाति, रेवती अश्विनी ज्येष्ठ मृगशिरा, ये ग्रह हैं और मृत्यु बाण, मघा, अनुराधा

रोहिणी, तीनों उत्तरा, कृतिका ये नक्षत्र और भौम, शनि रवि येवार ४-६-१४ ६-८—ये तिथियां रात्रि और संध्या का समय और गण्डान्त मूल भद्रा भोजने बाद, गोशाला, ये सब चौर में निषेध हैं।

राज्ञाभिषेक

रेवती युगले पुष्ये रोहिण्यां मृग मैत्रयोः
श्रवणोत्तर शुक्रेषु राज्ञांस्यादभिषेचनम्

अर्थ—रेवती, अश्विनी, पुष्य रोहिणी, मृगशिरा, अनुराधा, तीनों उत्तरा और ज्येष्ठ इन नक्षत्रों में राज्याभिषेक करना चाहिये।

पूर्वाषाढ़ शिवनी हस्तत्रये च श्रवण त्रये
ज्येष्ठाभगे मृगे पुष्ये रेवत्यां चोत्तरायणे
द्वितीयायां तृतीयायां पञ्चम्यां दशमी त्रये
सूर्य शुक्र सुराचार्ये बारे पक्षे तथासिते
लग्ने वृषेधनुःसिंहे कन्यामिथुनयोरपि
व्रत बंधः शुभेयोगे ब्रह्मक्षत्रविशांपते

अर्थ—पूर्वाषाढ़, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण धनिष्ठा ज्येष्ठा, पूर्वा फाल्गुनी मृगशिरा, पुष्य, रेवती, इन नक्षत्रों में उत्तरायण सूर्य में २,३,५, १०,११,१२ इन तिथियों में, रवि, शुक्र, गुरुवार शुक्ल पक्ष में, वृषधन, सिंह, कन्या मिथुन लग्न मे, शुभ योगों में ब्रह्मण क्षत्रिय, वैश्य, को यज्ञोपवीत होना चाहिए।

कर्णवेध मुहूर्त

श्रुतित्रयेऽदिति द्वन्द मैत्रे हस्ते त्रयोत्तरे
भगेर्विध युगे मूले पूषाश्वे सौम्य वासरे
द्विस्वभावे घटे लग्ने कर्णवेधः प्रशस्यते
चैत्र पौषौ हरि स्वापं वर्षं चयुगलंत्यजेत्

अर्थ - धनिष्ठा शतभिषा, पुनर्वसु, पुष्य, अनुराधा, हस्त, श्रवण

तीनों उत्तरा, उत्तराभाद्रपद, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़, पूर्वाफाल्गुनी रोहिणी मृगशिरा, मूल, रेवती, अश्विनी, शुभवार, शुभतिथि द्विस्वभाव लग्न, घट लग्न ये सब शुभ हैं। चैत्र, तथा पौष मास तथा आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक सम वर्ष त्याज्य हैं

अथतिथि विषघटी ज्ञानम्

१५ ५ ८ ७ ६ ५ ४ ८ ७
तिथि बाणष्ट सप्ताङ्ग पञ्च वदाष्टभूधराः
१० ३ १२ १४ ७ ८
दिग्वन्ह्यर्का मनुशैलो बसवोघटितः क्रमात्

अर्थ—प्रतिपद् से पूर्ण मासी तथा अमावस पर्यन्त इन घटियों के उपरान्त चार घड़ी तक विषघटी होती है इसको चक्र से समझना।

तिथि विषघटी चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०	तिथय
१५	५	८	७	६	५	४	८	७	१०	३	१२	१४	७	८		विषघटी उपरान्त
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४		विषघटी यावत्

अभिजिन्मूहूर्त सकल कर्म सिध्यर्थ

अंगुल्याविंशति सूर्येशंकु सोमेच षोड़श
कुजे पञ्चदशाङ्गुल्यो बुधवारे चतुर्दश
त्रयोदश गुरोवारे द्वादशार्कज शुक्रयो
शंकु मूले यदाछाया मध्यान्हे च प्रजापते
तत्राभिजित्तदाख्यातो घटिकैका स्मृताबुधैः
अत्रकार्याणि सर्वाणि सिद्धि यान्ति, कृतानिच

अर्थ—रविवार के दिन बीस अंगुल का शंकु खड़ा करे; सोमवार को सोलह अंगुल का, मंगल को पन्द्रह अंगुल का, बुध को चौदह अंगुल का वृहस्पति को तेरह अंगुल का, शुक्र को बारह अंगुल का शनि को बारह अंगुल का, शंकु खड़ा करे, दुपहर को जब छाया शंकु मूल के बराबर हो, तब से १ घड़ी तक अभिजित्संज्ञक मुहूर्त होता है, इसमें कार्य के आरम्भ करने से वे सिद्ध होते हैं।

अथ सूतिका ग्रह प्रवेशः

श्रवणत्रयोत्तरा हस्त त्रये पुष्याऽनुराधयोः।
पुनर्भे रोहिणी युग्मे रेवती द्वितये तथा॥
शुभाहेऽप्रसवा युक्ता सूतिका मन्दिरं विशेत्।

अर्थ—श्रवणधनिष्ठा शतभिषा तीनों उत्तरा हस्त चित्रा स्वाति पुष्यअनुराधा पुनर्वसु रोहणी मृगशिरा रेवती अश्विनी, इन नक्षत्रों में शुभवारों मे प्रसव युक्ता स्त्री सूतिका ग्रह में प्रवेश करे।

जनन समये दुष्ट काल निर्णयः तत्राभुक्तमूलम्।
ज्येष्ठान्त्ये घटिकायुग्मं मूलादौ घटिका द्वयम्॥
अभुक्तमूलमेतत्स्यादित्येवं नारदोऽब्रवीत्।
वसिष्ठस्तुतयोरंत्याद्ययोरेकद्विनाडिकम् ॥
अङ्गिरा घटिका मेकामन्ये षट चाष्ट तत्रतु।
जातं शिशुं त्यजेत्तातो न पश्येद्वाष्टहायनम्॥

अर्थ ज्येष्ठ नक्षत्र के अन्तकी दो घड़ी और मूलके आदि की दो घड़ी अभुक्त मूल होते हैं ऐसा नारद जी ने कहा है. और ज्येष्ठा के अन्त की एक घड़ी और मूल के आदि की दो घड़ी अभुक्त मूल होते हैं ऐसा वशिष्ठ जी ने कहा है और अङ्गिरा महर्षि का का ऐसा मत है, कि ज्येष्ठा के अन्ति की एक घड़ी और मूल के आदि की १ घड़ी अभुक्त मूल होते हैं और अन्य आचार्यों का ऐसा मत है कि ज्येष्ठा

के अन्त की हर छह घड़ी और मूल के आदि की ८ घड़ी अभुक्त मूल होते हैं अभुक्त मूलोत्पन्न बालक को पिता त्याग देवे अथवा आठ वर्ष तक उस बालक को न देखे।

मूलाद्य चरणे तातो द्वितीये जननी तथा।
तृतीयेतुधनं नश्येच्चतुर्थोऽपि शुभावहः॥

अर्थ—मूल नक्षत्र प्रथम चरण में बालक का जन्म होय तो पिता का नाश हो जाता है, दूसरे चरण में माता का नाश करता है, तीसरे में धन का नाश, चौथा चरण शुभकारक है।

अथ मूलवास

माघाषाढ़ श्विने भाद्रपदे मूलं वसेद्दिवि।
कार्तिके श्रवणे चैत्रे पौष मासे तु भूतले॥
वैशाखे फाल्गुने ज्येष्ठे मार्गे पातालवर्तितत्।
भूतले वर्तमानेतु ज्ञेयो दोषोऽन्यथा नहि॥

अर्थ—माघ आषाढ़ अश्विन भाद्रपद इन महीनों में मूल नक्षत्र का वास स्वर्ग में होता है, और कार्तिक श्रावण चैत्र पौष इन महीनों में मूल का वास पृथ्वी पर होता है, वैशाख फाल्गुन ज्येष्ठ मार्गशीर्ष इन महीनों में मूल पाताल में रहता है, यदि मूल पृथ्वी पर वर्तमान होय तो दोष होता है, अन्यथा नहीं।

अथाऽश्लेषा ज्येष्ठा गंडांतयमल जननादौ नेष्ट फलम्।
यदुक्तं मूल पादेषुफलं तत्स्याद्विलोमकम्॥

आश्लेषायांतु विज्ञेयं शान्तिस्तामाद्विधीयते।
गंडात् त्रितये चापि ज्येष्ठायामशुभाजनिः॥
तथायमल जन्मादि विकृतिन शुभा वहा।

अर्थ—मूल नक्षत्र के चरणों का जो फल कहा है, वह ही फल आश्लेषा नक्षत्र में (विलोम) विपरीत जानना।

अर्थात्—पहिले चरण में जन्म हो तो शुभ दूसरे में धन का नाश तीसरे चरण में माता का नाश चौथे में पिता का नाश होता है इसी कारण शान्ति करना चाहिए, (गण्डात्त्रितय) तिथि गण्डान्त लग्न गण्डान्त नक्षत्र गण्डान्त में अथवा ज्येष्ठा नक्षत्र में बालक का जन्म अशुभ होता है तथा दो बालकों का एक साथ अथवा विकृति का जन्म शुभ नहीं है।

अथ नक्षत्र गण्डान्तम्

ज्येष्ठा मूलर्क्षयोः संधौ रेवत्यश्विभयोस्तथा।
आश्लेषा मघयोरन्तराले नाड़ी चतुष्टयम्॥

अर्थ—ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र की संधि में चार घड़ी गण्डान्त होती है अर्थात् ज्येष्ठा के अन्त्य की दो घड़ी और मूल के आदि की दो घड़ी इसी प्रकार रेवती के अन्त की और अश्विनी के आदि की दो घड़ी आश्लेषा के अन्त्य की दो दो घड़ी और मघा के आदि की दो घड़ी गण्डान्त होती है।

तिथि गण्डान्तम्

अन्तरे पंचमी षष्ठ्योः पूर्णिमाद्याह्वयो रपि।
दशम्येकादशी संधौ गण्डान्त घटिकाद्वयम्॥

अर्थ—५ पंचमी ६ षष्ठी की सन्धि में दो घड़ी गण्डान्त होती है, पंचमी के अन्त की १ घड़ी और षष्ठी के आदि की १ घड़ी तथा दशमी के अन्त की और एकादशी के आदि के एक २ घड़ी गण्डान्त होती है।

लग्न गण्डान्तम्

कर्क सिंहाख्ययोर्मीन मेषयोरंतरे तयोः।
वृश्चिकाख्य धनुः संधौ लग्न स्यैकं घटीमितम्॥

अर्थ—कर्क और सिंह लग्न के मध्य की एक एक घड़ी गण्डान्त

होती है इसी प्रकार मीन के अन्त की मेष के आदि की वृश्चिक के अन्त की धन के आदि की बड़ी गण्डान्त है।

भैषज्य कर्म मुहूर्तः

अर्काश्वि पुष्ये श्रवणत्रये च, मूलादिति स्वाति मृगे सपौष्णे।
चित्रा सुमित्रे च शुभेऽह्निसार्के भैषज्य कर्म प्रचरेद्विरिक्ते॥

अर्थ—हस्त अश्विनी पुष्य श्रवण धनिष्ठा शतभिषा मूल पुनर्वसु स्वाती मृगशिरा रेवती चित्रा अनुराधा, इन नक्षत्रों में और रविवार के सहित शुभ दिनों में भैषज्य कर्म अर्थात औषधखाना शुभ है।

अथ शुक्र परिहारः

एक ग्रामे चतुष्कोणे दुर्भिक्षेराजविग्रहे।
विवाहे तीर्थ यात्रायां प्रतिशुक्रो न विद्यते॥

अर्थ—एक ग्राम में चारों कोणों के तथा दुर्भिक्ष में राजा से बिगाड़ होने में और विवाह में अर्थात् वधूप्रवेशादि में तीर्थ यात्रा आदि में शुक्र के सन्मुख तथा दक्षिण का दोष नहीं होता है।

गोत्र भेदेन शुक्र परिहार

कश्यपेषु वशिष्ठेषु भृगावाङ्गिरसेषु च।
भरद्वाजेषु वत्सेषु प्रति शुक्रो न विद्यते॥

अर्थ—कश्यप गोत्र वशिष्ठ गोत्र भृगु गोत्र आङ्गिरस गोत्र भरद्वाज गोत्र वा वत्सगोत्र इन गोत्रों में शुक्र के संमुख तथा दक्षिण का दोष नहीं।

शुक्रान्धमतेन परिहार

रेवत्यादि मृगान्त्ये च यावत्तिष्ठति चन्द्रमा।
तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभः॥

अर्थ—रेवती से मृगशिरा तक नक्षत्रों में चन्द्रमा हो तो शुक्र अन्ध होता है, वह सम्मुख और दक्षिण शुभ दायक होता है।

द्वितीय प्रकारेण शुक्रान्धज्ञानम्

यावच्चन्द्रः पूर्वभात्कृत्तिकाद्ये, पादशुक्रोऽन्धो न दुष्टोऽग्रदक्षे।
मध्ये मार्गे भार्गवास्तेऽपि राजा, तावत्तिष्ठेत्सम्मुखत्वेऽपितस्य॥

अर्थ—चन्द्र नक्षत्र रेवती से कृत्तिका के पहले चरण तक शुक्र अन्ध रहता है उसमें यात्रा करने से संमुख और दाहिने शुक्र का दोष नहीं होता है, तथा राजा को यात्रा में मध्य मार्ग में ही यदि शुक्र अस्त हो जाय तो राजादिके उदय न हो तब तक बास करे, अथवा संमुख रहे तब तक बास करे।

दाने न शुक्र परिहारो दीपिकायाम्

सितमश्वं सितंछत्रं हेम मौक्तिक संयुतम्।
ततो द्विजातये दद्यात्प्रतिशुक्र प्रशान्तये॥

अर्थ—सफेद घोड़ा सफेद छाता मोती सयुक्त सोना ब्राह्मण को देवे तो समुख दक्षिण शुक्र का दोष शान्त हो जाता है।

अथ राहु वास ज्ञानम्

देवालये गेह विधौ जलाश्ये राहोमुखं शंभु दिशोविलोमतः।
मीनार्क सिंहार्क मृगार्कतस्त्रिभे, खाते मुखात्पृष्ठविदिक् शुभाभवेत्॥

अर्थ—देवालय गृहारम्भ तथा जलाशय में राहु का मुख विचारना चाहिए क्रम से ईशान दिशा से विलोम होता है उसका क्रम लिखते हैं, देवालय में मीन के सूर्यों से तीन तीनराशि गिने ईशान व यव्य नैऋृत्य इन विदिशाओं में राहु मुख जानिए (चक्र से भी समझना) जिस दिशा में राहु का मुख हो, उसका पृष्ठ अर्थात् पीछे वाली दिशा में खात होता है उसी दिशा में आरम्भ करना शुभ है।

उदाहरण

ईशान में राहु का मुख हो तो पृष्ठ आग्नेय दिशा में होता है और

जो वायव्य में राहु का मुख हो तो पृष्ठ ईशान होता है और जो नैऋत्य मुख हो तो वायव्य पृष्ठ होता है।

अथ देवालय राहु मुख चक्रम्

ईशान	वायव्य	नैऋत्य	आग्नेय	दिशा
मीन मेष वृष	मिथुन कर्क सिंह	कन्या तुला वृश्चिक	धन मकर कुम्भ	सूर्य राशि

गृहा रम्भे राहु मुख चक्रम्

ईशान	वायव्य	नैऋत्य	आग्नेय	दिशा
सिंह कन्या तुला	वृश्चिक धन मकर	कुंभ मीन मेष	वृष मिथुन कर्क	सूर्य राशि

जलाशये राहु मुख चक्रम्

ईशान	वायव्य	नैऋत्य	आग्नेय	दिशा
मकर कुंभ मीन	मेष वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धन	सूर्य राशि

अथ भूमि सुप्तज्ञानम्

५ ७ ९ १२ १९ २६
प्रद्योतनात्पञ्च नगाङ्क सूर्य नवेन्दु षड विंशमितानिभानि ।
शेते मही नैव गृहं विधेयं तडाग वापी खनने न शस्तम् ॥

अर्थ—सूर्य के नक्षत्र से सात पांच नव बारह उन्नीस और छब्बीस इतने नक्षत्र चन्द्र नक्षत्र तक होवें तो भूमि सुप्त जानिए उसमें पुल बांधना पृथ्वी खोदना खेती इत्यादि तथा गृहारम्भ तालाब और बावली खोदना शुभ नहीं है।

तिथिं पञ्च गुणी कृत्वा, एके नच समन्वितम् ।
त्रिभिश्चैव हरेद्भागंशेषं चन्द्रं विचारयेत् ॥

एकेन वसते स्वर्गे द्विके पातालमेवच ।
तृतीये वसते मृत्युः सर्वं कर्माणि साधयेत् ॥

अर्थ—वर्तमानतिथि को पांच से गुना करे, उस में १ जोड़दें, उसमें तीन का भाग दे, शेष जो रहे, उसे चन्द्र लोक वास जानिये, १ एक बचे तो, चन्द्रमा का वास स्वर्ग में जानिये, दो २ बचें तो, पाताल में जानिये, तीन बचें तो मृत्युलोक में जानना, इसमें सब कार्यों का साधन करना योग्य है। पाताल लोक में चन्द्रमा बसे तो, छः कर्म वर्जित हैं। १ एक गृहारम्भ २ दूसरा होम करना ३ तीसरा, खेती का कार्य, ४ चौथा यात्रा करना, ५ पांचवां तालाब खोदना, वर्जित है, उदाहरण—

संवत् १९४८ के १८१३ भाद्र कृष्ण षष्ठयां ६ भौमेष्ट २-५ चन्द्रवास चिन्तनं,—छठ को पांच से गुणा किया तो, तीस हुये उसमें १ एक जोड़ दिया तो, इकतीस हुये इसमें तीन का भाग दिया, तो शेष, बचा १ तो चन्द्रमा का वास स्वर्ग में जानना, इस रीति से सब तिथियों में—

कूपचक्रं सूर्यभात्

कूपेऽर्के भान्मध्य गतैस्त्रिभिभैः ।
स्वादूदकं पूर्वदिशित्रिभिस्त्रिभिः ॥
खण्डं जलं स्वादुजलं जलक्षयं ।
मिष्टं जलं क्षारजलं क्रमाद्भवेद् ॥
वै सूर्यं भ स्त्रि.त्रिमितः फलं वदेत् ।

अर्थ—सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक कूप चक्रगिने मध्य में तीन नक्षत्र देवे, उसका फल स्वदु जल हो। और पूर्वादि आठ दिशाओं में तीन तीन नक्षत्र देना, उसका फल लिखते हैं, पूर्व में पड़ेतो, खण्डित जल होवे, आग्नेय में स्वादुजल हो, दक्षिण में जलक्षय हो, नैऋत्य में स्वादुजल हो, पश्चिम में क्षारजल हो वायव्य में शिला निकले, उत्तर में मीठा जल हो ईशान में क्षार जल हो इसी प्रकार से सूर्य के नक्षत्र से तीन तीन नक्षत्रों का फल जानिये।

कूपन्यास चक्रम्

	ई.	पू.	अ.	
	अ.	अ.	शु.	
	३	३	३.	
उ. शु. ३		मध्य ३ शुभ		३. अ. द.
	३	३	३	
	वा.	अ.	शु.	
	अ.	प.	नै.	

अथ कूप मुहूर्त

हस्ताश्विनी वासवं वारुणंच, मित्रं मित्रं त्रीणि चैवोत्तराणि ।
प्राजापत्यं चापि नक्षत्रमाहुः कूपारम्भे श्रेष्ठ माद्या मुनीन्द्राः ।

अर्थ—हस्त चित्रा, स्वति, धनिष्ठा, शतभिषा, अनुराधा, मघा तीनों उत्तरा, रोहिणी, इन नक्षत्रों में कुवां खोदना शुभ है ।

अथ तडाग चक्रम्

तडागे च प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ब्रह्मयामले :
सूर्यभाच्चन्द्रभं यावद्गणयेत्सततं बुधैः

दिक्षु ऋक्षद्वयेयस्य मध्य पञ्चनियोजयेत् ।
षटऋक्षेवारि वाहेचफलं तत्रविचारयेत् ॥

पूर्वेतु बहु शोकश्च आग्नेय्यां सजलंबहु ।
दक्षिणेवारि नाशश्च नैऋत्ये चामृतं जलम् ॥

पश्चिमेच जलं स्वादु वायव्ये वारि शोषणम् ।
उत्तरे चास्थिरं तोयमीशाने कुत्सितं जलम् ॥
मध्ये छिद्र जलं याति वारिवाहेतिपूर्णता ।

अर्थ—सूर्य के नक्षत्र तक तालाब का चक्र गिने पूर्वादि आठों दिशाओं में दो दो नक्षत्र दे मध्य में पांच नक्षत्र दे, और हर नक्षत्र जलस्थ में दे, उसका फल लिखते हैं ।

पूर्व दिशा में पड़े तो बहुत शोक हो आग्नेय में जल बहुत हो, दक्षिण में जल नाश करे नैऋत्य में मधुर जल होवे पश्चिम में स्वादुजल हो, वायव्य में जल को सोखे, उत्तर में जल स्थिर हो, ईशान में खारी जल हो मध्य में छिद्र जल अर्थात् खण्डित जल हो, जलस्थ में परे तो पूर्ण जल हो ।

तडागचक्र न्सास सूर्यभात्

पूर्व	आ	द	नै	प	वा	उ	ई	मध्य	वारि वाह	स्थान
२	२	२	२	२	२	२	२	५	६	नक्ष
बहुशोक	बहुजल	जलनाश	अमृतजल	जलस्वादु	जलशोष	जलस्थिर	अमितजल	अल्पजल	पूर्णजल	फल

तड़ाग मुहूर्तः

ध्रुव वसु जल पुष्यो नैऋतं मैत्र संज्ञकम् ।
नक्षत्रं शुभदं ज्ञेयं तडागे सर्वदा बुधैः ॥

अर्थ—ध्रुवसंज्ञक धनिष्ठा, पूर्वाषाढा पुष्य, मैत्र संज्ञक यह नक्षत्र तालाब खोदने में शुभ दायक हैं ।

वापी मुहूर्त

स्वात्याश्विव पुष्य हस्तेषु मैत्रे चैव पुनर्वसौ ।
रेवत्यां वारुणे चैव वापि कर्म प्रशस्यते ।

अर्थ—स्वाति, अश्विनी, पुष्य, हस्त, अनुराधा पुनर्वसु रेवती शतभिष इन नक्षत्रों में बावली का कृत्य शुभ हो ।

जन्म नामराशि निर्णयः

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ।
नाम राशेः प्रधानत्वं जन्मराशेरतः परम् ।

अर्थ---देश के कार्य ग्राम के कार्य गृह के कार्य तथा युद्ध कार्य नौकरी करना, और व्यवहार करना, इन कार्यों में नामराशि प्रधान है और जो कार्य हैं उनको जन्मराशि से विचार करना चाहिये ।

चुल्ली चक्रम्

सूर्यभाद्दिनाशाय वेद संख्या सुखाय च।
रस संख्या च दारिद्रयं वेद संख्या पुनः सुखम्॥
वाण संख्या स्त्रिया नाशः पुत्र लाभश्च शेषके।
चुल्लि चक्रं प्रवक्ष्यामि यथोक्तं गर्ग भाषितम्॥

अर्थ—सूर्य के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक चुल्ली चक्र विचारना प्रथम चार नक्षत्र नाशप्रद हैं, फिर चार नक्षत्र सुखप्रद हैं, फिर चार नक्षत्र तक दरिद्रय प्रद हैं, फिर चार नक्षत्र सुखप्रद हैं फिर पांच पांच नक्षत्र स्त्रीनाशक हैं शेष चार नक्षत्र पुत्र लाभकारक हैं।

४	४	६	४	५	४	नक्षत्र
नाश	सुख	दारिद्र	सुख	स्त्रीनाश	पुत्रलाभ	पुत्रलाभ

दत्तक पुत्र मुहूर्त

हस्तादि पञ्चक भिषग्वसु पुष्यभेषु, सुयचमाज गुरु भार्गववासरेषु
रिक्ता विवर्जित तिथिष्वलि कुम्भलग्ने, सिंहवृषे भवतिदत्त सुतगृहोऽयम्

अर्थ—हस्तचित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, अश्विनी, धनिष्ठा, पुष्य, ये नक्षत्र और रविवार, मंगल, बृहस्पति और शुक्र ये वार दत्तक पुत्र लेने में शुभ हैं। रिक्तातिथि वा कुम्भ वृश्चिक लग्न वर्जित और सिंह, वृष, लग्न शुभ हैं।

अथविक्रय विपण्यो मुहूर्त

पूर्वाद्वीश कृशानु सार्पयमभे केन्द्र त्रिकोणेशुभैः
षटत्र्यायेष्वशुभैर्विना घटतनुं सन्विक्रयः सत्तिथौ
रिक्ता भौमघटान्विना च विपणिमैत्र ध्रुवाश्विप्रभे
लग्ने चन्द्रसिते व्ययाष्टरहितैः पापैः शुभैर्द्यायखे

अर्थ—पूर्वास्तित्रम, तीनों पूर्वा द्वीशं, विशाखा, कृशानु, कृतिका सार्पं, आश्लेषा, यमभं भरणी, इन नक्षत्रों में विक्रय शुभ होता है। अथ केन्द्र, प्रथम चतुर्थ सप्तम दशम त्रिकोण ५।६। स्थान में शुभैः शुभ ग्रह स्थित हों ३ ६।११ स्थान में पापग्रह हों तो कुम्भ लग्न को छोड़कर शुभ तिथियों में विक्रय शुभ होता है। विपणिः—रिक्ता, ४।६।१४ मंगलवार कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य तिथिवारों में, लग्नों में विपणि दूकान करके क्रय विक्रय करना शुभ है और लग्न में चन्द्रमा शुक्र हो, मैत्र ध्रुव चिप्र इन नक्षत्रों में व्ययाष्ट रहितैः, १२।८ स्थान पापग्रह रहित, शुभैः द्वयायखे, शुभग्रह २।११।१० में हो तो दुकान करना उत्तम है।

अथहवन चक्रम्

सूर्यभास्त्रित्रिभे चान्द्रे सूर्य वच्छुक्रपङ्गवः
चन्द्ररेज्यागु शिखिनो नेष्टा होमाहुतिःखखे

अर्थ—सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक होमचक्र गिने। तीन तीन नक्षत्र सूर्यादि ग्रहों के स्थापित करे। उसका फल चक्र न्यास से समझ लेना और ग्रह भी चक्र से जान लेना, क्रूर ग्रह का अशुभ फल है।

अथहवन चक्रन्यास

सू	बु	शु	श	चं	मं	गु	रा	के	ग्रह
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
अ	शु	शु	अ	शु	अ	शु	अ	अ	फल

अथाग्नि वास चक्रम

सैकातिथिर्वारयुता कृताप्ता, शेषेगुणेभ्रे भुविवन्हि वासः
सौख्यायहोमे शशियुग्मशेषे, प्राणार्थनाशौदिविभूतलेच

अर्थ—शुक्ल पक्ष की परिवा से गिनकर जो तिथियां होंय उनमें वार रविवारादि की संख्या जोड़ देना उनमें एक १ और जोड़ देना, उसमें चार का भाग देना जो शेष तीन बचे तथा शून्य बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी में जानना। उसमें हवन करने से सुख प्राप्त होता है। और १ बचे तो अग्नि का वास आकाश में जानना प्राण-नाशक है। और जो दो बचे तो पाताल में अग्निवास जानना। उसका फल अर्थनाशक है—उदाहरणम् श्री शुभ संवत १९४८ शक १८१३ भाद्रकृष्ण चतुर्दश्यां १४ रवाविष्ट १।१२ शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तक २९ उन्तीस हुए। उनमें १ और जोड़ दिया तो ३० हुए। उनमें रविवार जोड़ दिया तो ३१ हुए उसमें चार का भाग दिया तो ३ अग्नि का वास पृथ्वी में जानना।

दूसरा उदाहरण शुक्ल पक्ष का

श्री संवत् १९४८ शक १८१३ भाद्रपद शुक्ला ८ शुक्रेष्टम् ४।० तिथि अष्टमी में एक १ जोड़ दिया ९ हो गए उसमें छह जोड़ दिए तो पन्द्रह हुए इसमें चार का भाग दिया जाय तो शेष बचे तीन ३ इसलिए अग्नि का वास पृथ्वी में जानना।

मण्डपादौस्तम्भ निवेशन

सूर्येऽङ्गनासिंह घटेषु शैवे स्तम्भोलिकोदण्डमृगेषु वायौ
मीनाज कुम्भे निऋतौ विवाहे, स्थाप्योग्नि कोणे वृषयुग्मकर्के

अर्थ—कन्यातुलासिंह के सूर्य में ईशान कोण में स्तम्भ स्थापित करे वृश्चिक धन मकर का सूर्य हो, वायुकोण में मीन मेष कुंभ के सूर्य में नैऋत्य दिशा में वृषमिथुनकर्क के सूर्य में अग्नि कोण में स्तम्भ स्थापित करे।

गृहारम्भ चक्रम्

गेहाद्यारम्भे ऽर्कभाद्वत्सशीर्षे रामैर्दाहो वेदभैरग्रपादे
शून्यं वेदैः पृष्ठपादे स्थिरत्वं रामैःपृष्ठे श्रीयुगैर्दक्ष कुक्षौ

लाभोरामैः पुच्छगैः स्वामिनाशो, वेदैर्नैः स्वंवाम कुक्षौमुखस्थै
रामैः पीड़ा, सन्ततं वार्कधिष्ण्यादस्वैं रुद्रै दिग्भि हृक्ष स्वसत्सत्

अर्थ—सूर्य के नक्षत्र से गृहारम्भ का वत्स चक्र विचारे, तीन नक्षत्र वत्स के शीर्ष में दे उसका फलदाह कारक है, और नक्षत्र चार नक्षत्र अग्रपाद में देवे, उसका फल शून्य है, और चार नक्षत्र पृष्ठ पाद में देवे उसका फल स्थिरता होवे, और तीन नक्षत्र पृष्ट में देवे इसका फल लक्ष्मी प्रद है। और चार नक्षत्र दाहिनी कोख में देवे, उसका फल लाभ प्रद है और तीन नक्षत्र पुच्छ में देवे, उसका फल स्वमिनाशक है और चार नक्षत्र वाम कोख में देवे उसका फल नि.स्वताकारक, अर्थात् दरिद्रता होवे और तीन नक्षत्र मुख में देवे, उसका फल सन्तान पीड़क है, अथवा सूर्य के नक्षत्र से सात नक्षत्र अशुभ हैं इसी क्रम से जानना

अथ गृहारम्भ चक्रन्यास

शीर्ष	अग्र पाद	पृष्ठ पाद	पृष्ठ	दक्षिण कुक्षि	पुच्छ	वाम कुक्षि		

गृहारम्भ चक्रन्यास

शीर्ष	अग्र पाद	पृष्ठ पाद	पृष्ठ	दक्षिण कुक्षौ	पुच्छ	वाम कुक्षि	मुख	अङ्ग
३	४	४	३	४	३	४	३	नक्षत्र
दाह	शून्य	स्थिरता	लक्ष्मी	लाभ	स्वामि नाश	निर्धनता	पीड़ा	फल

ग्रामस्यऋणधन विचार

स्ववर्ग द्विगुणंकृत्वा परवर्गेण संयुतम्
अष्टभिस्तु हरेद्भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्

अर्थ—अपने नाम का वर्ग दूना करे, ग्राम के वर्गाङ्क में जोड़ दे, उसमें आठ का भाग दे, जो शेष बचे वह अलग धरे, फिर ग्राम के वर्गाङ्क को दूना करे अपने वर्गाङ्क में जोड़ दे, उसमें आठ का भाग दे, जो शेषांक बचे उसे अलग धरे दोनों अङ्क में देखे जो अधिक हो सो ऋणी होता है, और जो कम हो सो धनी होता है।

राज्ञां छुरिका बन्धन मुहूर्त

वृत्तोक्तमास तिथ्यादौ विचैत्रे सबले कुजेजे
विभौमे छुरिकाबन्धः प्राग्विवाहान्महीभुजाम्

अर्थ—यज्ञोपवीत के मास तिथ्यादि हों परन्तु चैत्र के बिना और मंगल राशि से गोचरोक्तबली हो और मंगलवार के बिना विवाह के प्रथम राजाओं का छुरिका बन्धन शुभ है।

हलप्रवाह मुहूर्त

मूलद्वीश मघाचर ध्रुवमृदु क्षिप्रैविनार्कं शनि
यापैर्हीनबलैर्विधौ जललवे शुक्रे विधौमांसले

लग्नेदेव गुरौहल प्रवहणं शस्तं न सिंहेघटे
कर्का जैषघटे तनौक्षयकरं रिक्तासुषष्ठ्यांतथा

अर्थ—मूल विशाखा मघाचरसंज्ञक ध्रुवसंज्ञक मृदुसंज्ञक और क्षिप्रसंज्ञक इन नक्षत्रों में हल प्रवाह शुभ है। इतवार शनिवार वर्जित हैं तथा मंगल भी पापग्रह बल से रहित है और चन्द्रमा जल राशि के नवांश में हो। कर्क का नवांश जल राशि का होता है। शुक्र चन्द्रमा बलिष्ट हो, लग्न में बृहस्पति हो तथा सिंह, कुम्भ, कर्क,

मेष, मकर और तुला ये लग्न वर्जित हैं और क्षय को करती है तथा रिक्ता तिथि ४।९ १४ इनको निषेध है।

मेषादि राशिज वधू वरयो वटोश्च
तैलादि लपन विधौकथितात्र संख्या
शैलादिशः शरदिगद्य नगाद्रिवाण
वाणत्रवाणगिरयो विबुधैस्तु कैश्चित

अर्थ—मेष आदि राशि वाले वर कन्या के तैल आदि लगाने में क्रम से सात ७, १० दश, पांच ५, १० दश, पांच, सात, सात, ५ पांच, पांच, पांच, पांच, सात, ये १२ राशि के नाम की दिन संख्या है। विवाह दिन से पहिले से क्रम से तैलाभ्यगं शुभ माना है।

विवाह बोधको नाम द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः।

यात्रा प्रकरणम्

तृतीयोऽध्यायः

तीसरे अध्याय में यात्रा का शुभाशुभ विचार, यात्रा में, प्रथम चन्द्रमा का देखना मुख्य है ।

> आद्य चन्द्रः श्रियंकुर्यात् मनस्तोषं द्वितीयके
> तृतीये धन सम्पत्तिः चतुर्थे कलहागमम्
> पञ्चमो ज्ञान बृद्धिश्च षष्ठः संपत्तिमुत्तमां
> सप्तमो राजसन्मानं मरणं चाष्टमस्तथा
> नवमो धर्म लाभ च दशमो मानसेप्सितं
> एकादशः सर्व लाभं द्वादशोहानिमेव च

अर्थ—आद्यः १ चन्द्रमा श्री, लक्ष्मी की प्राप्ति कराता है २ दूसरे चन्द्रमा हो तो मन को सन्तोष ३ तीसरा चन्दमा हो तो धन की प्राप्ति चतुर्थः ४ चन्द्रमा हो तो कलहकारक होता है, ५ पांचवा चन्द्रमा हो तो ज्ञान की वृद्धि को करता है ६ छटा चन्द्रमा हो तो उत्तम सम्पत्ति देता है ७ सातवां चन्द्रमा राज सन्मान, ८ आठवा चन्द्रमा हो मृत्यु को देने वाला, ९ नवम चन्द्रमा धर्म की बृद्धि, १० दशवां हो तो मन वांछित फल करता है ११ सर्व लाभ को, १२ बारवां हानिकारक होता है अपनी २ राशि से विचार कर देखना चाहिए ।

चन्द्रमा देखना

कृतिकाद् द्विगुणितामासा गताश्च तिथिर्भियुता:
सप्तविंशतिभिः भक्ता विनता एक संयुता

अर्थ— जिस दिन चन्द्रमा देखना हो। उस दिन कार्तिक मास से उस मास तक गिनना करे, जितने मास गत हों उनका द्विगुना करे, और पड़वा से गिनके तिथि उस रोज तक जोड़े, महीने तिथ जोड़ के २७का भाग दे, बाकी शेष अंक जो हो उसमें १ और मिलावे और अश्विनी से गिने गिनती में जो अंक आवे वही नक्षत्र जानकर चन्द्रमा जाने।

जन्म चन्द्र त्याज्य कर्म

जन्मर्क्षस्थे शशांकेतु पञ्चकर्माणि विवर्जयेत्
यात्रा युद्ध विवाहौ च क्षौरं गृहप्रवेशनम्

अर्थ—जन्म के चन्द्रमा जिस दिन हो उस दिन, इतने कर्म त्याज्य हैं यात्रा, युद्ध, विवाह, और नूतन घर में प्रवेश।

अथ चन्द्रमा वास

मेषे च सिंहे धनु पूर्व भागे, वृषे च कन्या मकरे च याम्येये
कुम्भे तुलायाञ्च घटे प्रतीच्यां, कर्कालिमीने दिशि चोत्तरस्याम्

अर्थ—मेष, सिंह, धनु का चन्द्रमा पूर्व में बास करता है वृष कन्या मकर का दक्षिण में बास करता है मिथुन तुला कुंभ का चन्द्रमा पश्चिम में कर्क वृश्चिक मीन का चन्द्रमा उत्तर दिशा में बास करता हैं।

चन्द्र फलम्

सन्मुखे चार्थ लाभाय पृष्ठे चन्द्रधनक्षयम्
दक्षिणे सुख सम्पत्तिर्वामे चन्द्रधन क्षयः तुमरणंभवेत्

अर्थ—सन्मुख चन्द्रमा हो तो लाभ पीठ पीछे हो तो धन का नाश

दाहिनी ओर चन्द्रमा हो तो सुख सम्पत्ति वामें, बायीं हाथ तरफ हो तो मरणप्रद कष्ट होता है।

घात चन्द्रमाह

मेषे आदि वृषे पंच मिथुने नवमस्तथा
कर्के द्वौरसः सिंहे कन्यायां दश वर्जिता

तुला त्रीणिश्चली सप्तधने वेदा मृगो वसुः
कुम्भे रुद्रो रविमीने घात चन्द्र प्रकीर्तितः,

अर्थ— स्पष्ट है

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	मकर	कु.	मी.
१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२

स्त्रीणां घात चन्द्रः

भूनागाश्वांकवेदाग्नि रसाश्न्याशा शिवेषुभिः
सूर्यैश्च प्रामतामेषाद्घात चन्द्रा मृगीदृशाम्

अर्थ—

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क	तु.	वृ.	ध.	म.	कुम्भ	मी.
१	८	७	२	४	३	६	२	१०	११	५	१२

चन्द्रमा का वाहन

मेषे वृश्चिके सिंहे रक्त कुंजर वाहनम्
मिथुने युग्मेधनौ चैव पीतं तु तुरगंभवेत्
वृषेतुले कर्कटेच वाहनं वृषभः स्मृतः
मकरे कुम्भे कन्यायां कृष्णमहिषवाहनम्

अर्थ—

मे.	वृ.	सि.	लालरंग	वाहन हाथी
मि.	मी.	धन	पीलारंग	वाहन घोड़ा
वृ.	तु.	कर्क	श्वेतरंग	वाहन बैल
म.	कुं.	क.	काला रंग	वाहन भैंसा

दिशा शूल ज्ञानम्

शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वां दक्षिणस्यां चदिशंगुरौ
सूर्ये शुक्रे पश्चिमां च बुधे भौमेतथोत्तराम्

अर्थ—शनि, सोमवार को पूर्व दिशा में, गुरुवार को दक्षिण दिशा त्याज्य है, सूर्य शुक्रवार को पश्चिम दिशा त्याज्य है बुध भौम को उत्तर दिशा।

वार नक्षत्र शूलचक्रम्

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
ज्ये.	पू. भा.	रो.	उ. फा.	नक्षत्र
श. चं.	गु.	शु-रवि	मं. बु.	वार-शू.

विदिक् शूलमाह

आग्नेयाञ्च गुरौ चन्द्रे नैऋत्यां रविशुक्रयोः
ईशान्याञ्चन्द्र जे वायौ मङ्गले गमनंत्यजेत्

अर्थ—बृहस्पति, सोमवार को अग्नियदिशा में दिक्शूल होता है, रविवार शुक्रवार को नैऋत्य में, बुध को, इशान में और मंगलवार को वायुकोण में दिकशूल होता है।

दिकशूल निवारणभक्ष्याः

सूर्य वारे घृतंपीत्वा गच्छेत्सोमे प' स्तथा
गुड भौमके वारे बुधवारे तिलानपि
गुरुवारे दधिज्ञेयं शुक्रवारे यवानपि
माषान्भुक्त्वा शनौ गच्छेच्छूलदोषोप शान्तये

अर्थ–रविवार घी, सोम को दूध; मंगल को गुड़ बुध को तिल, बृहस्पति को दही, शुक्र को जौ शनिश्चर को उड़द, ये भक्षण करके यात्रा करे तो शूल दोष शांत हो जाता है।

अथ योगिनी विचारमाह

नवभूम्यः शिव वह्नयोऽक्षविश्वेऽर्क कृताः शक्ररसास्तुरङ्ग तिथ्य ।
द्विदिशोऽमावसवश्च पर्वतःस्युस्तिथयः संमुख वामगा न शस्ताः ॥

अर्थ—नवमी प्रतिपदा को पूर्व दिशा में,एकादशी तृतीया को आग्नेय, दिशा में त्रयोदशी पञ्चमी को, दक्षिण दिशा में, द्वादशी चौथ को, नैऋत्य दिशा में, चतुर्दशी छठ को, पश्चिम दिशा में, पूर्णमासी सप्तमी को वायव्य दिशा में, दशमी द्वितीया को उत्तर में, अमावस अष्टमी को ईशान दिशा में, योगिनी का वास होता है ।

योगनी चक्रम्

पू.	आ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई.	दि.
९।१	३।११	१३।५	१२।४	१४।६	१५।७	१०।२	३०।८	तिथि

अथ कालपाशमाह

उत्तरस्यां पूर्ववारे, वायौ चन्द्रदिने भवेत्
भौमवारे प्रतिच्यां तु नैऋत्यां बुध वासरे ।
यम शायां गुरोर्वारे वह्नेर्दिशि भृगोर्दिने ।
प्राच्यांदिशा शनेवारे कालः प्रोक्तो मनीषिभिः ॥
कालस्याभिमुखः पाशोवैपरीत्यं तयोर्निशि ।
तावुभौ संमुखौ त्याज्यौ वामदक्षिण गौशुभौ ॥

अर्थ—रविवार को उत्तर में, सोमवार को वायव्य में, मंगल को पश्चिम में, बुध को नैऋत्य में, बृहस्पति को दक्षिण में, शुक्र को अग्निकोण में, शनिश्चर को पूर्व में काल रहता है और काल के

संमुख पास रहता है और रात्रि में दोनों विपरीत होते हैं अर्थात दिन में जिधर काल होता है उस दिशा में पाश रहता है उसी दिशा में रात्रि में और दिन में जिस दिशा में पाश रहता है उसी दिशा में रात्रि में काल रहता है। दोनों काल पास संमुख त्याज्य हैं और वाम दक्षिण में शुभ होते हैं।

काल पाश चक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वार
उ.	वा.	प.	नै.	द.	आ.	पू.	दिन में काल की दिशा
द.	आ.	पू.	ई.	उ.	वा.	प.	रात्रि में पाश की दशा
द.	आ.	पू.	ई.	उ.	वा.	प.	दिन में काल की दिशा
उ.	वा.	प.	नै.	द	आ.	पू.	रात्रि में पाश की दिशा

जन्म प्रश्न लग्नाद्यात्रायाः शुभाशुभमाह

जनुषो लग्न राशि वालग्नगेवातदीश्वरौ।
ताभ्यां चोपचये लग्ने तदाराशांजयो ध्रुवम् ॥

अर्थ—जन्म की लग्न अथवा राशि ही प्रश्न लग्न की होय वा प्रश्न लग्न में जन्म लग्नेश्वर वा जन्म राशीश्वर होय, वा जन्म लग्न

और जन्मराशि से उपचय स्थान ।३।६।१०।११ की लग्न होय तो राजाओं की निश्चय ही जय होती है ।

प्रश्नतो लग्नभे शत्रोस्तुर्येस्ते वातयोपतिः ।
ताभ्यांमुपचयंभंवा जयः स्याद्वैरि संभव ॥

अर्थ-शत्रु के जन्म की लग्न वा राशि प्रश्न लग्न से चौथे वा सातवें स्थान में होय अथवा शत्रु का जन्म लग्नपति तथा जनाराशिपति चौथे वा सातवें स्थान में होय अथवा शत्रु का जन्म लग्न और जन्म-राशि से उपचय ३।६।१०।११ स्थान की लग्न होय तो शत्रु से विजय होती है ।

यात्रायामनिष्ट लग्न ज्ञानम्

कुम्भ कुम्भांशकौ

कुंभ कुंभांशकौ त्याज्यौ सर्वथा यत्नतो बुधैः ।
तत्र प्रयातुनृपतेरर्थनाशः पदे पदे ॥

अर्थ—कुम्भ लग्न और कुम्भ राशि का नवांश इन दोनों का त्याग यात्रा में अवश्य करे क्योंकि इन दोनों में यात्रा करने वाला राजा का मनोरथ कभी सिद्ध नहीं हो सकता ।

यात्रायां वांछित योगः

लग्ने चन्द्रे वापिवर्गोत्तमस्थे
यात्रा प्रोक्ता वांच्छितार्थकदात्री
अम्भोराशौवातदंशे प्रशस्तं
नौकायानं सर्वसिद्धि प्रदायी

अर्थ— मीन और कुम्भ लग्न तथा जलचर राशि के नवांश को छोड़ अन्य लग्न हो अथवा लग्न में चन्द्रमा हो, वा वर्गोत्तम में हो अर्थात् जिस राशि का चन्द्रमा हो उसी राशि का नवांश हो तो यात्रा

मनवांछित फल देनेवाली होती है जलचर लग्न में जलचर राशि के नवांश में नाव की यात्रा सर्व सिद्धियां देने वाली होती है।

यात्रायां मृत्यु योगः

जन्म राशि तनुतोऽष्टमेऽथवा, स्वारिभाच्च रिपुभेऽनुस्थिते
लग्नगास्तदधिपा यदाथवा, स्युर्गतंहि नृपते मृतिप्रदम्

अर्थ—जन्म राशि से अथवा जन्म लग्न से आठवां लग्न यात्रा का हो अथवा शत्रु की राशि से छठा लग्न यात्रा का हो, अथवा, इन राशियों के स्वमी लग्न में हो तो यात्रा करने वाले राजा की यात्रा मृत्यु प्रद होती है।

अथ प्रस्थान प्रकारमाह

कार्याद्यै रिह

कार्याद्यै रिह गमनस्य चेद्विलम्बो
भूं वादि निरुपवीतम युधञ्च
क्षौद्रं चामल फलमाशु चालनीयं
सर्वेषां भजतियदेव हृत्प्रियंवा ॥

अर्थ—यात्रा काल के निश्चित होने पर किसी आवश्यक कार्य से यदि यात्रा में विलम्ब हो तो ब्राह्मण यज्ञोपवीत (जनेऊ) क्षत्रिय हथियार, वैश्य, शहद, शूद्र उत्तम फल (वा) जो वस्तु अधिक प्रिय हो उसका प्रस्थान यात्रा की दिशा में करे, उसके बाद आवश्यक कार्य हो जाने पर यात्रा करे।

अथ प्रस्थान दिन प्रमाणं

पूर्वे दिनानि सप्तैव याम्ये पञ्च दिनानिच
पश्चिमे दिवसां स्त्रीनूवै दिनानिनां द्वयमुत्तरे

अर्थ—पूर्व दिशा का प्रस्थान सात दिन तक और दक्षिण दिशा

का प्रस्थान ५ पांच दिन तक और पश्चिम दिशा का प्रस्थान ३ तीन दिन तक उत्तर दिशा का प्रस्थान २ रोज तक रखना चाहिये।

प्रस्थान प्रमाण ज्ञानञ्च

प्रस्थान मत्र धनुषांहि शतानिपञ्च
केचिच्छ्तात द्वयमुशन्ति दशैव चान्ये
सम्प्रस्थितो यदृह मन्दिरतः प्रयातो
गन्तव्यदिशु तदपि प्रयतेन कार्यम्

अर्थ—पांचसौ धनुष पर्यन्त प्रस्थान धरे, धनु चार हाथ लंबा होता है कोई आचार्य कहते हैं कि दो सौ धनुष पर प्रस्थान करे, किसी २ का मत यह है कि दश धनुष पर्यन्त प्रस्थान करना उचित है अपने मकान से प्रस्थान करने वाली दिशा में प्रस्थान करना चाहिए।

यात्रायां तिथिफलमाह

कृष्णा च प्रतिपच्छ्रेष्ठा नो शुक्ला गमनादिषु

द्वितीय कार्यस्यातृतीया

द्वितीया कार्य सिद्धयै स्यातृतीया क्षेम संपदे,,
चतुर्थी कलेशदाज्ञेया, लाभदा पंचमी तथा
व्याध्यार्तिदायिनी षष्ठी, सप्तमी भोग भोज्यदाः
रोगदा चाष्टमीज्ञेया नवमी मृत्युदा सदा
दशमी लाभ हानिस्यं हेमदैकादशी स्मृता
प्रानहृद्वादशी प्रोक्ता सर्वं सिद्धा त्रयोदशी
शुक्ला चतुर्दशी नेष्ठा कृष्ठा पक्षे विशेषतः
पूर्णिमा मध्यमा प्रोक्ता, त्याज्योदर्शस्तु सर्वथा
तिथि नाफलमेतद्धि ज्ञातव्यंगमने बुधैः

अर्थ—यात्रादि कार्यों में कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा श्रेष्ठ होती है और शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा १ एक नष्ट होती है २ द्वितीया तिथि

कार्य के सिद्ध के लिए होती है, ३ तृतीया कल्याण पूर्वक संपदा के लिए ४ चतुर्थी क्लेश देने वाली कही है ५ पंचमी लाभ को देती है। ६ षष्ठी तिथि रोग और दुःख को देने वाली है, सप्तमी ७ भोग भोज्य को देने वाली है ८ अष्टमी रोग को पैदा करने वाली ९ नवमी कष्ट कारक तिथि होती है, १० दशमी तिथि लाभ को देने वाली, ११ एकादशी सुवर्ण को देने वाली १२ द्वादशी मृत्युप्रद कष्ट को देती है १३ त्रयोदशी सर्व सिद्धि को शुक्ल पक्ष की १४ चतुर्दशी नेष्ठ है कृष्णपक्ष की चतुर्दशी विशेष करके नेष्ट है १५ पूर्णमासी मध्यम मानी है ३० अमावस्या सर्वथा त्याज्य है पण्डितजनों को उचित है कि तिथियों का फल यात्रा में अवश्य देखें।

यात्रायांमुत्तम मध्यमनेष्ट नक्षत्राणि
धनिष्ठा श्रवणो हस्तोऽनुराधा रेवती द्वयम्
मृगः पुनर्वसु पुष्यः श्रेष्ठान्येतानिभानिच
मूलं पूर्वात्रयं ज्येष्ठा रोहिणी शततारका
उत्तराणां त्रयंयाने मध्यमान्ये तानिभानिच
चित्रात्रयं मघाश्लेषा कृतिकाद्रा भरण्यपि
वर्ज्यान्येतानिधिष्ठयानियात्रायां जन्मभं तथा

अर्थ—यात्रा में शुभाशुभ नक्षत्र लिखते हैं, धनिष्ठा श्रवण हस्त अनुराधा रेवती, अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु पुष्य ये नक्षत्र श्रेष्ठ हैं, मूल ३ तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा रोहिणी (५ शतभिषा तीनों ३ उत्तरा यह मध्य हैं चित्रा स्वाति विशाखा, मघा, आश्लेषा कृतिका आर्द्रा भरणी और जन्म नक्षत्र ये सब यात्रा में त्याज्य हैं।

सर्वदिग्गमन नक्षत्रमाह

सर्वदिग मने हस्तः पूषाश्वौश्रवणो मृगः
सर्वसिद्धिकरः पुष्योविद्यायां च गुरुर्यथा

अर्थ—हस्त, रेवती श्रवण, मृगशिरा ये नक्षत्र सर्व दिशाओं की यात्रा में शुभ होते हैं और पुष्य नक्षत्र विद्यारम्भ में बृहस्पति के समान यात्रा में भी सिद्धि को देने वाला होता है।

यात्रायां शुभ शकुनाः

दधिदूर्वाक्षतारौप्यं पूर्णकुम्भोथ सर्षपाः
दीपोगोरोचनाऽदर्शो प्रज्वलन्हव्यवाहनः ॥
वेदघोषः शुभावाचो जयमंगल संयुता,
शंखदुंदुंभि वीणादि मृदु मर्दननिःस्वना ॥
सिद्धमन्नं च ताम्बूलं मीनोदुग्धंघृतंमधु
मदिरारुधरंमासंभक्ष्यं नानाविधं फलम् ॥
इक्षवःसतपुष्पाणि पद्ममुद्धृतगोमयम्
ध्वजसिंहासनंछत्रं कृपाण कुशमायुधम् ॥
दोलावितान सद्वस्त्र रत्नालंकार दीपकाः
विप्रोभूपोगुरुवृंद्धः पुत्रपौत्रादिभिर्वृतः ॥
दैवज्ञःकन्यकायोषा सुभगापुत्र संयुता
वारांगना तपस्वी च वदान्योथनरः शुचिः ॥

यात्रा में शुभ शकुन लिखते हैं।

दही, दूर्वा, अक्षत, चांदी जल भरा हुआ घड़ा, सरसों, दीपक, गोरोचन, दर्पण, प्रज्वलित अग्नि। वेद का शब्द, शुभ वाणी, जय मंगल, शंख, दुंदुभी वीणा आदि, मृदंग, ढप आदि के शब्द ॥ सिद्ध, अन्न, ताम्बूल, मछली दूध घी शहद, मदिरा, रुधिर, मांस, नाना प्रकार के भक्ष्यफल ॥ ईख के पदार्थ, श्वेत फूल कमल, उठाया हुआ गोबर, ध्वजा, सिंहासन छत्र कुश, शस्त्र ॥ हिंडोला, तम्बू, शुभ वस्त्र रत्न आभूषण, मसाल, ब्राह्मण राजा, गुरु पुत्रपौत्रादि से युक्त, वृद्ध-पुरुष। ज्योतिषी कन्या सौभाग्यवती स्त्री पुत्रयुक्ता सुन्दरी स्त्री, तपस्वी दाता मनुष्य इत्यादि।

रजको धौतवस्त्रं च शवोरोदनवर्जितः
तोयार्थ्य पूर्णकुम्भश्चानुगः पृष्ठे मृदांजनम् ॥
गजोवाजि रथोधेनुः सवत्सातु विशेषतः
श्वेतो वृषोऽन्यवर्णोऽपि बद्धकश्चेत्तदाशुभः ॥
वर्णी स्वमित्र मुष्णीषं दर्भो हंस मयूरकः
नकुलश्चभरद्वाजश्चाषश्छागोगस्तथैवच
चित्तोत्साह करं वस्तु शुभान्येतानिदर्शनात् ॥

अर्थ—धोबी धुले हुए वस्त्र रुदन रहित मुर्दा जल की इच्छा करने वाला पुरुष, खाली घड़ा लिए हुए पीठ के पीछे, मिट्टी, अजन, घोड़ा, हाथी रथ सवत्सा गौ श्वेत बैल अन्य वर्ण का बैल जोकि अकेला ही बंधा होय शुभ कहा है। ब्रह्मचारी अपना मित्र पगड़ी कुशा हंस मोर न्योला टिटहरी पची नीलकंठ पची बकरा चित्त में आनन्द को देने वाली सब वस्तु उत्तम होती हैं यात्रा में

यात्रायां दुःशकुना

कार्पासंकृष्णधान्यंच लोहकारश्चरोदनम् ।
लोहक्षरक्तपुष्पंच गुडस्तैलंघृतंतथा ॥
पिण्याकं तर्णतक्राणि भस्मास्थ लवणंतुषः ।
पाषाणेंधनचर्मादि सधूम्रो वह्निरोषधम् ॥
मत्तोवात खलोहिंस्रो मुंडितश्च बुभुक्षितः ।
जटिलश्च तथा रोगी सन्यासी मलिनोरिपुः ॥
खंजो नग्नोंगहीनश्चतैलाभ्यक्तोथ गर्भिणी ।
काषाय वस्त्रधारीच मुक्तकेशोऽथ पाशवान ॥
बंध्याचशृंखलेचौर षदो यानपलायनम् ।
खरोष्ट्र महिषारूढा कुवाक्य श्रवणं तथा ॥
कृष्णसर्पोऽथ मंडूकः सरठोग्राम सूकरः ।
कृपणः पतितोव्यंग कुब्जोंधोवधिरोजडः ॥

अर्थ—कपास काला अन्न लुहार रोने का शब्द लोह लाल फूल गुड़ तेल छींक का शब्द तिलों की खल तृण मट्ठा भस्माहाड़ लवण फूस भूसी पत्थर ईंधन चमड़ा धुआं सहित अग्नि औषध ॥ उन्मत्तभ्रान्त दुष्ट हिंसक मनुष्य मुंडित भूखा जटाधारी रोगी सन्यासी मलिन शत्रु ॥ लंगड़ा नंगा अंगहीन तेल का उबटन लगाये हुए मनुष्य गर्भिणी गेरुआ वस्त्र धारी खुले हुए बालों वाला फांसी हाथ में लिए हुए पुरुष ॥ वंध्या स्त्री शांकल लिए हुए चोर नपुंसक सवारी का भागना गधा ऊंट भैंस इन पर चढ़ा हुआ मनुष्य कुवाक्य का श्रवण ॥ काला सर्प मेंढक कर्कटा ग्रामसूकर कृपण मनुष्य पतित कुबड़ा लंगड़ा अन्धा बहरा इत्यादि ।

आर्द्रवासोऽथविधवा स्वर्णकारो रजस्वला ।
उपानत्कर्दमांगीच पुरीषंच वसा तृणम् ॥
तथारजस्वला पुष्पंकृष्णोक्षा महिषोवृषः ।
स्वगेहदहनं युद्धं मार्जारं स्वकुलेकलिः ॥
गोक्षुतं प्राणिनामंगशिरः श्रोत्रप्रकंपनम् ।
मार्जारान्मार्गरोधश्च स्खलनंरिक्त कुम्भकः ॥
एतेदुःशकुनायाने सर्वकार्ये निषेधकाः ॥

अर्थ—गीले वस्त्र पहिने हुए मनुष्य विधवा स्त्री रजस्वला नारी कीच में सना हुआ जूता विष्टा चर्बी तृण ॥ रजस्वला स्त्री में रज से सना हुआ वस्त्र, काला बैल भैंसा सांड अपने घर में आग लगना बिलावों की लड़ाई अपने कुल में लड़ाई ॥ गौ की छींक प्राणियों के अङ्गशिर कानों का कांपना बिलावों से रास्ते का रुक जाना ठोकर लगकर गिरना खाली घड़ा मन को अनुत्साहित करने वाली सभी बातें यात्रा में निषेध हैं ।

मिश्र प्रकरण

आनन्द काल दण्डश्च धूम्राक्षश्च प्रजापतिः ।
सौम्य ध्वांक्षौ ध्वश्चापि श्रीवत्सो वज्रमुद गुरौ ॥
छत्रं मित्रं मान साख्यं पद्माख्य लुम्बकस्तथा ।
उत्पात मृत्यु काणाश्च सिद्धिश्चाथ शुभोमतः ॥
मुसलं गद मातङ्ग राक्षसाश्च चर स्थिरः ।
धर्धमाश्चविज्ञो अष्टाविंशतिरित्यपि ॥
फलतु नाम सदृशं योगा दैवज्ञ भाषिताः ।
अश्विनी रविवारे च योगो ह्यानन्द संज्ञकः ॥
मृगशीर्षे शीतरश्मिः श्लेषायां क्षिति नन्दनः ।
बुधे हस्तोऽनुराधा च देवराज पुरोहिते ॥
विश्वे देवा भृगोर्वारे शनौ वारुण संज्ञकः ।
तदा नन्दा द्य योगः स्यात्काल दण्डादयः क्रमात् ॥

अर्थ—इन योगों के फल नामानुसार बतलाये हैं रविवार को अश्विनी, सोमवार को मृगशिरा, भौमवार को आश्लेषा, बुधवार को हस्त, गुरुवार को अनुराधा, शुक्रवार को उत्तराषाढ़ा, शनिवार दण्डादि योग जानना—

अमृत सिद्धि योगः

"हस्त सूर्ये मृगः सोमे वारे भौमे तथा ऽश्विनी ।
बुधेमैत्रं गुरौ पुष्यं रेवती भृगुनन्दने ॥
रोहिणी रवि पुत्रे च सर्वं सिद्धि प्रदायकः ।
अयं चामृतसिद्धिः स्याद्योगः प्रोक्ता पुरातनैः ॥

रविवार को हस्त, सोमवार को अश्विनी, बुधवार को अनुराधा, गुरुवार को पुष्य, शुक्रवार को रेवती, शनिवार को रोहिणी हो तो अमृत सिद्धि योग कहा है ।

॥ अमृत सिद्धि चक्रम् ॥

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
हस्त	मृग	अश्वि	अनु	पुष्य	रेव.	रोहि.	नक्षत्र

यम घण्ट योगः

मघा दित्ये विशाखेन्दौ भौमे चान्द्रा नलो गुरौ ।
बुधे मूलं विधिः शुक्रे यम घण्टः शनौकरः ॥

अर्थ—रविवार को मघा, सोमवार को, विशाखा, मंगल को आर्द्रा बुध को मूल, गुरुवार को कृतिका, शुक्रवार को रोहिणी, शनि को हस्त हो तो यम घण्ट योग होता है यह शुभ कार्य में निषेध है।

यम घण्ट योग

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
मघा	विशा	आर्द्रा	मूल	कृति	रोहि.	हस्त	नक्षत्र

नन्दा सूर्ये च भौमे च भद्राभार्गव चन्द्रयोः ।
बुधे जया गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदाः ॥

अर्थ—रवि भौमवार को नन्दा, शुक्र सोमवार को भद्रा, बुध को जया, गुरुवार को रिक्ता, शनिवार को पूर्णा, यह मृत्यु योग शुभ कार्य में वर्जित है—

॥ मृत्यु योग चक्रम् ॥

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
१	२	१	३	४	२	५	
६	७	६	८	९	७	१०	तिथि
११	१२	११	१३	१४	१२	३०	

॥ क्रकच योगः ॥

तिथ्यङ्के न समायुक्तो वाराङ्कोयदि जायते ।
त्रयोदशाङ्क क्रकचो योगः प्रोक्तः पुरातनैः ॥

अर्थ— तिथि के अङ्क में वार का अङ्क जोड़ देने से यदि १३ हो, तो क्रकच योग होता है ।

॥ क्र क च योग चक्रम् ॥

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
१२	११	१०	९	८	७	६	तिथि

आषाढ़े पूर्णिमा पवन फलम्

आषाढ़े पूर्णिमायां चेदनिलो वाति नैऋतः ।
अनावृष्ट धान्यनाशो जलं कूपे न दृश्यते ॥
आषाढ़े पूर्णिमायांतु वायव्ये यदि मारुतः ।
धर्म शीलस्तदा लोको धनंधान्यं गृहे गृहे ॥
आषाढ़े पूर्णिमायांतु ईशान्ये याति मारुतः ।
सुखिनांहि तदा लोका गीत वाद्य परायणाः ॥
वह्नि कोणे वह्निभीतिः पश्चिमे च जलाद्भयम् ।
अन्यत्र यदि वायुः स्यात् सुभिक्षं जायते तदा ॥

अर्थ—आषाढ़ मास की पूर्णमासी को जो नैऋत्य दिशा से हवा चले तो अना वृष्टि हो धान्य नाश हो और कूप का जल सूखे आषाढ़ की पूर्णमासी को जो दिशा से हवा चले तो लोक में धर्म हो धनधान्य घर घर होवे, आषाढ़ की पूणमासी को ईशान दिशा से वायु चले तो लोक में सुख प्राप्ति हो—और सांसारिक प्राणी गीत वाद्य परायण होवें अग्नि कोण में चले तो अग्नि का भय पश्चिम दिशा से वायु का भय "हवा का प्रकोप हो, वा , पश्चिम दिशा में वायु चले तो जल का भय होता है, और शेष दिशाओं में वायु चले तो सुभिक्ष समझना चाहिये ।

होली का पवन फलम्

पूर्ववायौ होलिकायाः प्रजाभूपालयोः सुखम् ।
पलायते च दुर्भिक्षं दक्षिणे जायतेध्रुवम् ॥
पश्चिमे तृणसम्पत्ति रुत्तेधान्यसंभवम् ।
यदि खेचशिखावृद्धि दुर्गराजोऽपिसंशयेत् ॥

अर्थ—होलिका वायु यदि पूर्व दिशा में जाय तो राजा प्रजा सुखी होय, दक्षिण दिशा में वायु जाय तो पलायमान और पराजित

हो और दुर्भिक्ष होता है, और पश्चिम दिशा में वायु का जाना होतो तृण बहुत पैदा हो और उत्तर दिशा में वायु जाय तो, धान्य संभव हो, "अर्थात् धान्य बहुत हो, और आकाश में हो" शिखारूप, होके आयतो, राजाका किला छूट जाय।

सूर्य चन्द्र ग्रहण ज्ञानम्

द्विर्द्वादशेच षष्ठे च सम सप्तमगे तथा।
एक राशौ यदाराहु ग्रस्तौ च शशिभास्करौ ॥

अर्थ—राहु से दूसरे बारवें छटे सातवें या राहु की राशि में सूर्य चन्द्रमा हों तो ग्रहण पड़ें।

मतान्तरेण ज्ञानम्

मासनक्षत्रमारभ्य ऋक्षंभवतिषोडशः।
अमायां प्रतिपत्सन्धौ सूर्य ग्रहणनिश्चितम् ॥
रवेः पञ्चदशऋक्षं पूर्णमास्यांयदाभवेत् ॥
रात्रौ च प्रतिपत्सन्धौ चन्द्रग्रहणनिश्चतम् ॥

अर्थ—कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को जो नक्षत्र होवे, उससे सोलहवां नक्षत्र अमावस को पड़े तो और अमावस में प्रतिपद मिले तो सूर्य ग्रहण अवश्य होवे, जिस नक्षत्र पर सूर्य हो उससे पन्द्रहवां नक्षत्र पूर्णमासी को पड़े तो और रात्रि को प्रतिपदा मिले तो, चन्द्रग्रहण अवश्य होवे।

"ग्रहण कौनसी राशिको गहता है"

ग्रासस्तृतीयोष्टमगश्चतुर्थ ।
तथायसंस्थः शुभदः सुनित्यम् ॥

त्रिकोणगो मध्यफलश्च चन्द्रभाव् ।
प्रोक्तः सुनिष्टश्च बुधैस्तु शेषाः ॥

अर्थ—जिस राशि में सूर्य हो उससे अपनी राशि तक गिने जो ३-८-४-११ होवे तो उत्तम, ५-६ मध्यम, १२-७-१०-१-२ ये अधम, जैसी राशि हो वैसा ही फल जानना, 'केतु' केतु चन्द्रग्रहण एक राशि पर पूर्णमासी को हों तो चन्द्रग्रहण होता है ग्रहण के होने के दिन से ३ दिन पहले के और ३ दिन पीछे के दिन शुभ कर्म में वर्जित हैं इसी तरह शुक्र के उदय अस्त में भी।

वाप्याराम तडागं य कूपभवनारम्भ प्रतिष्ठे व्रता।
रम्भो त्सर्ग वधू प्रवेश महादानादि सोमाष्टके, ॥
गोदानं मण्डनमथा प्रथम कोपा कर्म वेद व्रतं।
नीलोद्वाह मथाति नवान्न शिशु संस्कारं सुरस्थापनम् ॥
दीक्षामौंन्जि विवाह मुंडन मपूर्वदेवतीर्थेक्षणं।
संन्यासाग्नि परिग्रही नृपति संदर्शाभिषेकौजमम् ॥
चातुर्मास्य समावृत्त श्रवणयो वेंध परिक्षांरत्जेह।
वृद्धत्वास्तशिशुत्व इज्यसितायो न्यूनाधिमासे तथा, ॥

अर्थ— बावली बगीचा तालाब कुंआ और घर इनका बनाने का आरम्भ करना और प्रतिष्टा करना नवीन वृत का आरम्भ करना तथा उद्यापन वधू प्रवेश महादान "तुलादान आदि) सोमयज्ञ, अष्टका श्राद्ध प्रथम वार दाढ़ी के बाल बनवाना नवान्न पौशाला प्रथम श्रावणी कर्म वेदारम्भ काम्य वृषंतुत्सर्ग समयातिक्रान्त बालकका संस्कार-अन्नप्राशनादि- कर्म करना देव प्रतिष्टा। मन्त्र लेना "अर्थात् शिष्य बनना, जनेऊ का धारण करना, विवाह तथा मुन्डन करना, प्रथम तीर्थ, या प्रथम देवता का दर्शन संन्यास लेना अग्नि होत्रादि के लिए अग्नि का ग्रहण करना, राजा का दर्शन और राजगद्दी पर बैठना यात्रा करना, चातुर्मास नामक यज्ञ समावर्तन कर्म कर्ण वेध करना, परीक्षा लेना

ये सब कार्य बृहस्पति और शुक्र के अस्त में तथा बाल वृद्ध में वर्जित हैं और ये सर्व कार्य क्षयमास और मलमास में भी निषेध हैं—

—मतान्तरेण कार्य वर्जित कुयोगा—

अस्ते वर्ज्यं सिंह मकरस्य जीवे।
वर्ज्यं केचिद्वक्रगे चातिचारे॥
गुर्वादित्ये त्रयोदशीय पक्षे।
प्रोचुस्तद्वद्दन्तरत्नादिभूषणम्॥

अर्थ—बृहस्पति और शुक्र के अस्त में जो कार्य वर्जित हैं वे सिंह और मकर के बृहस्पति में भी वर्जित हैं 'और किसी आचार्य का मत है, यदि बृहस्पति वक्री वा अतिचार, अर्थात् १ एक राशि को उल्लंघन करके दूसरी राशि पर चले गये हो तो भी सब कार्य वर्जित हैं।" सूर्य गुरु एक राशि में हों तो भी वर्जित हैं "और जब तेरह दिन का पक्ष पड़े तो भी उपरोक्त कार्य वर्जित हैं, इसी प्रकार हस्ती के दांत से तथा रत्न से बने हुए आभूषणों को भी धारण नहीं करे।

"गुर्वादित्य परीहार"

गुर्वादित्ये दशदिन गुरौसिंहे त्रिमासिकम्।
अतिचारे च वक्रे च अष्टाविंशति बासरान्—इति॥

अर्थ—गुरु आदित्य दशदिन मानने चाहियें, और सिंह के गुरु तीनमास और अतीचार वा वक्री हों तो अट्ठाइस दिन वर्जित हैं।

द्वितीय प्रकारेण गुर्वादित्य परीहारः

गुरुः सूर्यात्पृथगभूत्वा पुनश्चेत्कुरुते युतिः।
गुर्वादित्योद्भवोदोषो नभवेद्धै कदाचन॥

अर्थ—गुरु सूर्य अलग होकर फिर एक राशि में प्रवेश करें तो गुर्वादित्य का दोष निश्चय दूर हो जाता है।

"सिंहस्थगुरु परी हार"

मघादि पंच पादेषु, गुरुः सर्वत्रनिन्दितः।
गङ्गा गोदान्तरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृत्।

अर्थ—चार चरण मघा के एक चरण पूर्वा फाल्गुनी का ये पांचों चरण सिंह के गुरु में समस्त देशों में वर्जित हैं और गंगा तथा गोदावरी के बीच को छोड़कर शेष जो चार चरण बाकी रहे वे और देशों में नहीं वर्जित हैं, अर्थात गङ्गा गोदावरी के बीच में केवल मेषके सूर्यों को छोड़कर समस्त सिंह वर्जित है ।

"स्थिर ध्रुव नक्षत्रसंज्ञाज्ञानम्"

॥ उत्तरात्रयरोहिण्यो, भास्करश्चध्रुवं स्थिरम् ॥
॥ तत्रस्थिरंबीजगेहे शान्त्यारामादि सिद्धये ॥

अर्थ—तीनों उत्तरारोहिणी तथा रविवार इनकी ध्रुव और स्थिर संज्ञा है इनमें स्थिर कार्य तथा गृह कार्य बीजबोना बाग लगाना और शान्त्यादिये कार्य सिद्ध होते हैं—

॥ चरसंज्ञक नक्षत्र ज्ञानम् ॥

स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रीणि चन्द्रश्चापिचरंचलम्।
तस्मिन् गजादिकारोहो वाटिकागमनादिकम् ॥

अर्थ—स्वाति पुनर्वसु श्रवण, धनिष्ठा शतभिषा ये नक्षत्र और सोमवार दिन इनकी चर''चल संज्ञा है, इनमें हाथी इत्यादि की सवारी करे, तथा फुलवाड़ी लगावे और यात्रादि कम करे,

उग्र संज्ञक नक्षत्र ज्ञानम्

पूर्वात्रयं याम्य मघे उग्रंक्रूरे कुजस्तथा
तस्मिन्घाताग्नि शाठ्यानि विष शस्त्रादि सिद्धयति

अर्थ—तीनों पूर्वा भरणी मघा इन नक्षत्रों की तथा भौमवार की

उग्र और क्रूर संज्ञा हैं, इनमें घात करना आग लगाना तथा क्रूर विष शस्त्रादि शुभ हैं।

मिश्र संज्ञक नक्षत्र ज्ञानम्

विशाखाग्नेयभे, सौम्ये मिश्रं साधारणं स्मृतम्
तत्राग्नि कार्यं मिश्रं च वृषोत्सर्गादि सिद्ध्यति

अर्थ—विशाखा, कृत्तिका, और बुधवार इनकी मिश्र, और साधारण संज्ञा है, इनमें अग्नि कार्य मिश्र अर्थात मिले हुए कार्य वृषोत्सर्गादि सिद्ध होते हैं।

लघु क्षिप्र संज्ञक नक्षत्र संज्ञा ज्ञानम्

हस्ताश्वि पुष्याभिजितः क्षिप्रं लघु गुरुस्तथा॥
तस्मिन्पण्य रतिज्ञान भूषा शिल्प कलादिकम्॥

अर्थ—हस्त अश्विनी, पुष्य, अभिजित् गुरुवार इन की लघु और क्षिप्र संज्ञा है, इन नक्षत्रों में बाजार लगाना रति करना वा भूषण धारण करना, कला सीखना कर्म शुभ है।

मृदु मैत्र संज्ञक नक्षत्र माह

मृगान्त्यचित्रा मित्रर्क्षं मृदु मैत्रं भृगुस्तथा।
तत्र गीताम्बर क्रीड़ा मित्र कार्यं विभूषणम्॥

अर्थ—मृगाशिरा रेवती चित्रा अनुराधा, शुक्रवार इन नक्षत्रों की मृदु, मैत्र संज्ञा है, इन नक्षत्रों में गीतका आरम्भ वस्त्र धारण विहार करना और मित्र कार्य करना श्रेष्ठ है।

तीक्ष्ण दारुण संज्ञक नक्षत्र ज्ञानम्

मूलेन्द्रा र्द्राहिभं सौरिस्तीक्ष्णं दारुण संज्ञकम्॥
तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम्॥

अर्थ—मूल ज्येष्ठा आर्द्रा आश्लेषा और शनिवार इन को तीक्ष्ण दारुण संज्ञा है, इनमें अभिचार घात करना, तथा पशुदमादिक अर्थात् पशु नाथना इत्यादि शुभ हैं।

उर्ध्वमुख नक्षत्रमाह

उत्तरा त्रितयं पुष्यो रोहिण्यार्द्रा श्रुति त्रयम्।
ऊर्ध्व वक्रो गणोज्ञेयो नक्षत्राणि, मनीषिणः॥

अर्थ—उत्तरात्रितयं, तीनों उत्तरा पुष्य रोहिणी, आर्द्रा श्रवण धनिष्ठा शतभिषा इन नक्षत्रों की उर्ध्व मुख संज्ञा है।

इनमें देव स्थान चहार दीवारी बनाना, बन्दरवारबांधना पताका लगाना, छत्र धारण करना, ग्रह कार्य करना अभिषेक करना घोड़े को सवारी करना, इतने कार्य शुभ हैं।

अधोमुख नक्षत्र

पूर्वात्रयं मघाश्लेषा विशाखा कृतिकायमः।
मूलं चाधोमुखंज्ञेयं नवकोऽयं गणो बुधैः॥

अर्थ—तीनों पूर्वा मघा आश्लेषा विशाखा कृतिका भरणी मूल इन नव नक्षत्रों को अधो मुख अर्थात् नीचे का मुख वाले कार्य शुभ हैं।

वार कृत्यम्

सोम सौम्य गुरु शुक्रवासरा सर्व कर्मसु भवन्ति सिद्धिदाः।
भानुभौम शनिवासरेषुच प्रोक्त मेवखलु कर्मसिद्धयति॥

अर्थ—चन्द्रमा बुध शुक्र बृहस्पति ये सब कामों में सिद्धि के देने वाले हैं। शनि सूर्य मंगल इन में कहे हुये हो कार्य सिद्धि को प्राप्त होते हैं।

क्षयमास मलमास ज्ञानम्

असंक्रान्तिमासोऽधिमासः 'स्फुटंस्यात् ।
द्विसंक्रांति मासः क्षयाख्यः कदाचित् ॥
भवेत् कार्तिकादित्रये नान्यतः स्यात् ।
तदा वर्षमध्येऽधिमासद्वयञ्च ॥

अर्थ--जिस महीने में संक्रान्ति का अभाव हो, अर्थात् संक्रान्ति नहीं हो, वह महीना मलमास का समझना चाहिये, और जिस मास में २ संक्रान्ति हो वह महीना क्षय मास कहलाता है वह मास कभी २ पड़ता है हमेशा क्षय माश नहीं होता है क्षय मास मलमास के निर्णय में चान्द्रमास लेना चाहिए, अर्थात् शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से कृष्ण पक्ष की अमावस तक चान्द्र मास का प्रमाण है और कार्तिकादि तीन महीनों में क्षयमास होता है, और महीनों में नहीं होता है, अर्थात् कार्तिक अगहन पौष सिवाय इनके अतिरिक्त और महीनों में क्षयमास नहीं होता है, और जब क्षयमास आता है तब वर्ष में दो मलमास पड़ते हैं ।

संवत्सर मध्येराजादि ज्ञानम्

चैत्रादि मेषादि कुलीर तौलि, मृगादि वाराधिपति क्रमेण ।
राजा च मन्त्री स्वथशस्यनाथो रसाधिपो नीरस नायकश्च ॥

अर्थ--चैत्रशुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को जो वार हो वही संवत्सर का राजा होता है । मेष की सक्रान्ति को जो वार हो, वही मन्त्री होता है, और कर्क की संक्रान्ति को जो वार हो वही शस्यनाथ होता है "रेवती का स्वामी, तुला की संक्रान्ति को जो वार पड़े वही रसाधिप होता है और मकर की संक्रान्ति को जो वार पड़े वह नीरसाधिप होता है ।

मतांन्तरेण राजादि ज्ञान चक्रम्

मे.	वृ	म.	क.	सि.	कन्या	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	संवत्स
मंत्री	कोशाधिप	यु त्यधिप	मेघाधिप	शस्याधिर	सैन्याधिप	तन्त्राधिप	रसाधिप	आज्ञ धिप	धान्याधिप	नीरसाधिप	व्यवहाराधिप	संवत्सर कार्याधिप

अर्थ --जिस सक्रान्ति में जो वार हो वही कार्याधिप मेषादि क्रमसे समझना।

संवत्सर मध्ये लाभ व्यय ज्ञानम्

राशीश वर्षेशयुतं त्रिगुणयं, शरेणयुक्तं तिथि शेषलाभम्।
लाभं त्रिगुणय च शरेण ५ युक्तं तिथ्यावशेषं व्ययमामनन्ति ॥
रसा ६ तिथ्यो १५ गजा ८ शैलचन्द्रा १७ नन्देन्दवस्तथा।
स्वगा २१ दिशः १० क्रमाज्ज्ञेयाख्यादिनां ध्रुवाङ्कमे ॥

अर्थ—राशी स्वामी के ध्रुवाङ्क में राजा का ध्रुवाङ्क जोड़ देना, उस अङ्क को, तीन से गुणा करना उसमें पांच जोड़ देना, फिर उसमें पन्द्रह का भाग देना शेष बचे वह लाभ होता है। उसे तीनगुना करना उस अङ्क में पच जोड़ देना उसमें पन्द्रह का भाग देना जो शेष रहे वही जानिये, सूर्याङ्क ध्रुव पठित है रसा तिथ्यो, इति, सूर्य ६। चन्द्र १५। भौम ८। जीव १६। शुक्र २१। शनैश्चर १० ये सूर्यादि ध्रुवांक है।

जैसे मेष राशि का लाभ व्यय व नाना है, उसका स्वमी मंगल है उसका ध्रुवांक आठ ८ हुआ। संवत्सर का राजा शुक्र है उसका ध्रुवांक इक्कीस हुआ दोनों ध्रुवांक जोड़े तो २६ हुए इसको तीन से गुना किया तो ८७ हुए, उसमें पांच जोड़े तो ९२ हुए इसमें पन्द्रह का

भाग दिया तो लब्ध मिले ६।। शेष बचे २ यही मेष राशि का भला जानिए, फिर लब्ध जो छः मिले हैं उन्हें तीन से गुना किया तो १८ हुए उस में पांच जोड़ दिए तो २३ हुए इसमें १५ का भाग दिया तो शेष बचे ८ यही मेष राशि का खर्च जानिए, इसी प्रकार लाभ व्यय समझना।

संवत्सर मध्ये वर्षाद्यानयनम्

शकत्रिस्त्रिनिघ्नो नगभाजितश्च शेषं द्वि निघ्न शर संयुतंच
वर्षा चधान्यं तृणशीततेजो वायुश्चवृद्धिक्षय विग्रहौच

शकंवेद ४ गुणं कृत्वा सप्तभिर्भागमाहरेत्
शेष द्विघ्नं २ त्रिभि ३ युक्त भुक्ति विश्वाख्य संज्ञकम्
क्षुधातृषा च निद्राच आलस्योद्यममेवच
शांतिः क्रोधस्तथादम्भो लोभ मैथुनशोकमात्
ततश्च रसनिष्पत्तिः फल निवृत्त रेवच
उत्साहः सर्व लोकानां फलान्येतानिचिन्तयेत्
शकंच वसुभिर्निघ्नं नवभिर्भागमाहरेत्
शकद्विघ्नं रूपयुक्त प्रोक्तं विश्वाख्य सज्ञकम्
उग्रत्व पाप पुण्य निर्व्याधिश्च व्याधि नाशनम्
आचारश्चाप्यनाचारो मृत्युर्जन्म यथाक्रमम्
देशोपद्रवस्वास्थ्यच चौरभीश्चोर नाशनम्
वह्निभिर्वह्निशांतिश्च ज्ञातव्यानि यथाक्रमात्

शकः चतुःस्थ शर ५ सप्त ७ नन्द
रुद्रै ११ हतः सप्त ७ हृतावशेषम्
द्वि २ घ्नस्त्रिभिः ३ सयुत मत्रमान
भुक्तिउऊराबुजारण्डज वेदजानाम्
सप्तघ्न शाक नवभि ९ र्भाजिता शेषकंतथा
लोचन २ घ्नं युतंरामै ३ जीवीवारच यथाक्रमम्

शलभाश्च शुकाश्चैव मूषकाः स्वर्णताम्रकौ
स्वचक्रं पर चक्रं च वृष्टि वृष्टिविनाशनम्
अर्कादिवारेसं क्रान्तौ कर्कस्याब्द विशोपका
दिशो नखा गजा सूर्या धस्याऽष्टादश सायकाः ॥ इति

अर्थ—शक को तीन से गुणा करके सात का भाग देना लब्ध को अलग रखना, और शेष को दूना करके पांच जोड़ देना, जो अंक प्राप्त हो, वह वर्षा के विस्वानिक लेगें, फिर लब्ध को अलग रखना, शेष को दूना करके पांच ५ जोड़ देना जो अंक प्राप्त हों उनको धान्य के विश्वा जानिए फिर लब्धाक को इसो रीति से गणित करके तृण के विस्वा समझना। पुनः लब्धांक को उपरोक्त क्रिया करने से शीत, तेज, वायु, वृद्धि, क्षय और विग्रह इन सब ही के विश्वा अलग २ निकलेगें।

उदाहरणम्

संवत१९४८ शक १८१३ शको को तीन से गुना किया तो ५४३९ हुए, इसमें सात का भाग दिया, तो लब्धि ७७७ शेष शून्य वचा, इसमें पांच जोड़े तो पांच हुए,यहां वर्षा विस्वा का प्रमाण जानना, शक को चारसे गुना करना, उसमें सात काभाग देना लब्ध को अलग रखना शेषाङ्क को दूना करना, उस अंक में तीन जोड़ने से जो अंक हो उसे क्षुधा के विश्वा समझना। लब्धांक को पूर्वोक्त क्रिया करके बारम्बार इसी प्रकार गणित द्वारा, निद्रा आलस्य, उद्यम शांति क्रोध दम्भ, लोभ मैथुन रसफल, तथा उत्साह के विस्वा जानना। शक को आठ से गुना करना, और नव का भाग देने से लब्ध को अलग रखना, शेषांक का दूना करके, उसमें १ जोड़ देना जो अकं होवे उग्रत्व के विस्वा होते हैं लब्धांक को आठ से गुना करके नव का भाग देना जो लब्ध मिलें उसे अलग रखना शेषाङ्क का दूना करके १ एक जोड़ देना जो हो उसको पाप के विस्वा जानना लब्धांक में पूर्वोक्त क्रिया करने से पुण्य व्याधि व्याधि-नाश,आचार अनाचार मृत्यु जन्म देशोपद्रव देश स्वास्थ्य चौरभय और चोरनाश अग्नि तथा,अग्नि शांति इन सबों के विस्वा सिद्ध होते हैं। शक

को चार जगह स्थापित करना, प्रथम को पांच से गुना करना, दूसरे को ७ से तीसरे को ६ नव से चौथे को ग्यारह से गुना करना इन चारों अङ्कों में अलग अलग सात सात का भाग देना शेषाङ्कों को दूना २ करना चारों जगह पर उनमें तीन तीन और जोड़ देना फिर क्रम से उद्भिज जरायुज अण्डज स्वेदज जीवों के विश्वा जानना अर्थात् प्रथम अङ्क में उद्भिज दूसरे में अण्डज और चौथे में स्वेदज जीवों के विस्वा जानना, शक को सात से गुना करना और नव का भाग देना लब्ध को अलग रखना शेषांक को दूना करना, उसमें तीन और जोड़ देना जो अङ्क हो उसे शलभटीड़ी के विश्वा जानिए, लब्धांक को फिर सात से गुना करना और नव का भाग देना, लब्ध को अलग रखना शेषांक को दूना करना उसमें तीन जोड़ देना जो अङ्क हो उसे शुक अर्थात् तोता के विश्वा जानना, लब्धांक पर उपरोक्त क्रिया करने से मूषक सोना तांबा स्वचक्र परचक्र वृष्टि और वृष्टि नाश के विस्वा अलग अलग बन जायेंगे कर्क की संक्रांति जिस दिन हो, उसी दिन के अनुसार संवत्सर के विश्वा होते हैं, जैसे रविवार को संक्रांति हो तो सवत्सर के १० दश विस्वा सोमवार को २० विश्वा मंगल को ८ विश्वा बुध को बारह विस्व वृहस्पति को अठारह १८ बिस्वा शुक्र को १८ अठारह विस्वा और शनिवार को १८ विस्वा होते हैं।

शकं बाणाग्नि संयुक्तं ३५ वेदेन परिभाजयेत्।
शेषं मेघं विजानीयादावर्तादि चतुष्टयं ॥
आवर्तकः संवर्तकः पुष्करो द्रोण संज्ञकः।
शुभाशुभ फलंज्ञेयं प्रोक्तं पूर्वै महर्षिभिः ॥
आवर्तके महावर्तः संवर्तो वहु तोयदः।
पुष्करे चित्रिता वृष्टि द्रोणेऽपि वहु वारिदः ॥

अर्थ— शाक में पैंतीस जोड़कर चार का भाग देना शेष मेघ समझना १ शेष बचे तो आवर्तक नामक मेघ २ दो बचे तो संवर्त्तक

नामक ३ तीन बचें तो पुष्कर संज्ञक ४ चार बचें तो द्रोण संज्ञक जानिये आवर्त में महावर्त हो संवर्तक में बहुत जल वृष्टि हो पुष्कर में चित्र विचित्र वर्षा हो और द्रोण में बाढ आवे।

उदाहरण—संवत् १९४८ शक १८१३ में ३५ पैंतीस जोड़ दिये तो १८४८ हुए, इसमें चार का भाग दिया तो शेषाङ्क बचा शून्य इस लिए चौथा द्रोण संज्ञक मेघ समझना, इसी तरह, सब जानना।

वर्षे राजादीनां संक्षेपात्फलम्

राजाभौमादिकानाञ्च, वच्मि संक्षेपतः फलम्।
गुरु शुक्रेन्दवोऽधीशाः सन्ति चेज्जन सौख्यदाः॥
सुभिक्षं शोभना वृष्टिर्देशे स्वास्थ्य प्रकुर्वते।
शनिभौमौ प्रकुर्वाते दुर्भिक्षं विग्रहं भयम्॥
अल्प सौख्यप्रदः सौम्यः खलु दुःखप्रदोरविः।
फलं सविस्तरे चैषां विज्ञेयं संहितादिषु॥

अर्थ—संवत्सर के राजा (मालिक) गुरु शुक्र और चन्द्रमा हों तो मनुष्यों को सुख देने वाले हैं, और सुभिक्ष हो वर्षा अच्छी हो और देश में स्वास्थ्य भी करें, शनैश्चर और मङ्गल राजा हों तो दुर्भिक्ष विग्रह करें, और बुध राजा हों तो थोड़ा सुख करें और सूर्य राजा हों तो दुःख हो इत्यादि।

वार प्रवृत्ति ज्ञानम्

निशार्धे दिनमानं च युक्त पञ्चेन्दुभिस्तथा।
वार प्रवृत्तिर्विज्ञेया सूर्य सिद्धान्त सम्मता॥

अर्थ—रात्रि प्रमाण को आधा करना उसमें दिन प्रमाण जोड़ देना उस अङ्क में पन्द्रह और जोड़ देना जो अङ्क हो वही इष्ट काल वार प्रवृत्ति का सूर्योदय से समझ लेना।

उदाहरण

संवत् १९४८ शाके १८१३ श्रावण कृष्णा दशमी गुरुवार स्पष्ट वार प्रवृत्ति का निरूपण ग्रह लाघव से स्पष्ट दिन मान ३३।१४॥ इस दिन मान को साठ में घटा देने से रात्रिमान २६॥४६ हुआ इसका आधा किया १३॥२३॥ इसको दिनमान में जोड़ दिया ४६॥३७॥ इस में पन्द्रह और जोड़ दिये ६१॥३७॥ यह अङ्क हुआ, इनमें से ६० निकाले तो बाकी रहे, १।३७। यही इष्ट काल गुरुवार का प्रवेश हुआ, अर्थात् १।३७ एक घड़ी सैंतीस पल दिन चढ़े गुरुवार प्रवेश हुआ। जब अङ्क वार प्रवेश का ६० से ज्यादा आवे तब ६० निकाल कर वही दिन चढ़े का इष्ट काल जानना, और यदि अङ्क साठ से कम आवे उसे साठ में ६० घटा देना जितना शेष बचे उतनी रात्रि रहे का इष्ट काल जानना।

कालहोरा ज्ञानम्

वारादेर्घटिका द्विघ्ना स्वाग्न्यङ्गच्छेष वर्जिता।
सैका १ स्तष्टा नगैः कालहोरेशा दिनयक्रमात् ॥

अर्थ—जब से वार प्रवृत्ति लगे तब से जो काल बीता हो; उसे दूना करना फिर उसे दो जगह रखना, पहले अङ्क में पांच का भाग देना जो शेषाङ्क हो, उसे दूसरी जगह घटा देना, उसमें १ और जोड़ देना उसमें सात का भाग देना जो शेषाङ्क रहे, उसे दिनय के क्रम से होरा जानना जिस दिन का होरा बनावे उस दिन से गिने शेषाङ्क पर्यन्त, अन्त में जो वार आवे उसी को होरा जानिये।

उदाहरण

संवत् १९४८ शके १८१३ श्रावण कृष्ण १० गुरुवार प्रवेश का इष्ट १।३७॥ सूर्योदयादिष्ट ६।७॥ इस इष्ट में वार प्रवेश का इष्ट घटाने से वारादि इष्ट हुआ, ४।३०॥ इसको दूना किया तो हुआ ९।००

इसको दूसरी जगह रक्खा ६।००॥ इसमें पांच ५ का भाग दिया तो शेष बचे ४ इसको जिसे दूना किया है उसमें घटा देना तब ६ में घटा दिया तो शेष ५ बचे इसमें ७ सात का भाग दिया तो पांच ५ शेष रहे, इन्हें गुरुवार से गिना तो सोमबार की होरा हुई, अब रात्रि रहने पर बार प्रवेश हो तो होरा का क्रम बारादि इष्ट बनाने का लिखते हैं, जो इष्ट सूर्योदय से हो उसमें रात्रि रहे बार प्रवेश का जो इष्ट हो, वह जोड़ देना जोड़ने पर जो हो उसे बारादि इष्ट जान लेना फिर इसी उदाहरण से होरा बना लेना।

मेष राशि गत ग्रहण फलम्

उपरागो यदा मेषे, पीड्यन्ते सर्वदा जनाः।
काम्बोजाऽन्ध्रि किरातश्च पाञ्चालश्च कलिङ्गकः॥

अर्थ—मेष राशि में ग्रहण पड़े तो कम्बोज, अंध्रिकिरात, पाञ्चाल और कलिंग इत्यादि देशों को पीड़ा करे।

वृष राशिगत ग्रहण फलम्

वृषे च ग्रहणे गोपाः पशवः पथिकाः जनाः।
महान्तो मनुजाः ये च पीड्यन्ते साधवस्तथा॥

अर्थ—वृष राशि में ग्रहण पड़े तो गोप, पशु, पथिक अर्थात् रास्ता चलने वाले, महात्मा लोग, साधुओं को पीड़ा करे।

मिथुन राशिगत ग्रहणफलम्

रविचन्द्रमसोग्रस्तौ मिथुने च वराङ्गनाः।
पीड्यन्ते वाह्लिकाः मत्स्याः यमुनातटवासिनः॥

अर्थ—मिथुन राशि में सूर्य चन्द्र ग्रहण पड़े तो सुन्दर श्रेष्ठ स्त्री और वाह्लिक देश, मत्स्य देश तथा यमुनातट वासियों को पीड़ा करे।

कर्क राशिगत ग्रहणफलम्

कर्कटे ग्रहणेपीड़ा मल्लादीनां च जायते ।
अन्तरं सर्वाराणां च तदामत्स्य विनाशिनः ॥

अर्थ—कर्क राशि में ग्रहण पड़े तो मल्लादिकों को पीड़ा करे अर्थात् कुश्ती लड़ने वाले मनुष्यों को पीड़ा जानिए तथा अन्तरवेद और सर्वार तथा मत्स्य देश का विनाश करे ।

सिंह राशिगत ग्रहणफलम्

सिंहे च ग्रहणेपीड़ा सर्वेषां वनवासिनाम् ।
नृपाणां नृपतुल्यानां अनुजानां च जायते ॥

अर्थ—सिंह राशि में ग्रहण पड़े तो सब वन वासियों को पीड़ा करे और राजाओं को तथा राजा के समान मनुष्यों को पीड़ा करे ।

कन्या राशिगत ग्रहणफलम्

कन्यायां ग्रहणेपीड़ा त्रिपुराणां च शालिनाम् ।
कवीनां लेखकानां च जायते पीड़नं सदा ॥

अर्थ—कन्या राशि में ग्रहण पड़े तो त्रिपुस्कर देश वासियों को पीड़ा करे और धान्य का नाश करे तथा कवि वा लेखकों को सदा पीड़ा करते हैं ।

तुला राशिगत ग्रहणफलम्

तुलायामुपरागे च दशार्णोवाह्लकाहुकौ ।
मरुवश्च परात्यश्च पीड्यन्ते साधवश्चये ॥

अर्थ—तुला राशि में ग्रहण पड़े तो दशार्ण वाह्लक, आहुक, मरु व परात्य इन देशों को और साधु जनों को पीड़ा करे ।

वृश्चिक राशिगत ग्रहणफलम्

वृश्चिके ग्रहणेपीड़ा सर्पजातेश्च जायते।
औदुम्बरस्य भद्रस्य चोलायोध्येयकस्य च ॥

अर्थ-वृश्चिक राशि में ग्रहण पड़े तो सर्पों को पीड़ा हो और औदुम्बर देश, भद्र देश, चोल देश और अयोध्या वासियों को भी पीड़ा होवे।

धन राशिगत ग्रहणफलम्

यदोपरागश्चापे च तदा मत्स्य निवासिनः
विदेहमल्ल पांचालाः पीड्यन्ते च भिषग्विदः।

अर्थ-धन राशि में ग्रहण पड़े तो मत्स्य देश वासियों को पीड़ा करे तथा बिदेह, मल्ल, पांचाल देशों को पीड़ा करे।

मकर राशिगत ग्रहणफलम्

मकरे ग्रहणेपीड़ा नीचानां मंत्र वादिनाम्।
स्थविराणांभटानां च चित्रकूटस्थ संक्षयः ॥

अर्थ—मकर राशि पर ग्रहण पड़े तो नीच मन्त्र वादियों का पीड़न करे वृद्ध और योद्धाओं को पीड़ा हो और चित्रकूट वासियों का क्षय हो।

कुम्भ राशिगत ग्रहण फलम्

कुम्भे चैवोपरागे च पश्चिमस्थास्तथार्बुदाः
चौराणांरोगिणांमृत्युः पीड़यन्ते बहुधाबुधाः

कुम्भ राशि पर ग्रहण पड़े तो पश्चिम देश वाले, अर्बुद देश वाले मनुष्यों को पीड़ा आवे। चोर और रोगियों की मृत्यु हो और पंडित लोग पीड़ित होंय।

मीन राशिगत ग्रहणफलम्

मीनोपरागे पीड्यन्ते जलद्रव्याणि सागराः
जलोपजीविनो लोकाः ये च यत्रप्रतिष्ठिताः

अर्थ––मीन राशि पर ग्रहण पड़े तो जलद्रव्य सागर और जलोप-जीवी पीड़ा पावें अर्थात् जल से जिनकी जीविका है तथा जल के पास जो रहते हैं वे सब पीड़ा पावें।

अथैकमासे चन्द्रसूर्य ग्रहणफलम्

यदैकमासे ग्रहणं जायते शशिसूर्ययोः
शस्त्रकोपैः क्षयंयान्तिभूपाः माया परस्परम्

अर्थ –जब एक मास में चन्द्र सूर्य दोनों ग्रहण पड़ें तो शस्त्र-कोप से राजा क्षय होय, युद्ध हो और परस्पर में माया हो।

धनिष्ठा पंचक में निषधकर्म

धनिष्ठा पंचकेत्याज्यस्तृण काष्ठादि संग्रहः
त्याज्यादक्षिण दिग्यात्रा गृहाणां छादनंतथा

अर्थ––धनिष्ठा से रेवती तक पांच नक्षत्र त्याज्य हैं। धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती इनको पंचक कहा है। तृण काष्ठादि का संचय, दक्षिण की यात्रा, प्रेतदाह तथा गृहादि का छादन इत्यादि कार्यों में पंचक निषेध है और शय्या का वितरण भी न करे।

ग्रहराशि प्रमाणम्

मासंशुक्र बुधादित्याश्चन्द्रपाददिनद्वयम्
भौमस्त्रिपक्षं जीवोऽब्दं सार्धवर्षद्वयशनिः

अर्थ—एक राशि पर एक महीने में सूर्य बुध और शुक्र भोग करते हैं। चन्द्रमा एक राशि पर सवा दो दिन भोग करता है।

मंगल एक राशि पर डेढ़ महीने वास करता है, बृहस्पति एक राशि पर एक वर्ष भोग करता है, शनैश्चर एक राशि पर २॥ वर्ष रहता है।

राहुःकेतुः सदाभुक्ते सार्धमेकंतुवत्सरम्

राहु केतु १ एक राशि पर डेढ़ वर्ष भोगते हैं।

अथ दिन दशा ज्ञानम्

रवि दिन नख संख्या चन्द्रमा व्योम बाणैः।
क्षितितनय गजाश्वैश्चन्द्रजः षट शराश्च ॥
शनिरस गुण संख्या वाक्पति नागबाणैः।
नयनयुगकराहु सप्तति शुक्रसंख्या ॥

अर्थ—सूर्य की दशा बीस दिन, चन्द्रमा की दशा ५० पचास दिन मंगल अठाइस दिन,बुध की छप्पन दिन,शनिश्चर की छत्तीस दिन, गुरु की अट्ठावन दिन राहु को बयालिस दिन और शुक्र की दशा सत्तर दिन, की जानिये इसका फल गोचर के अनुसार ग्रहों से तथा सूर्य से समझना चाहिए, तथा अपनी राशि से जिस घर में सूर्य हो उसी घर में दशा देख लेना, १ एक १ एक घर में तीस तीस दिन की दशा होती है, चक्र से समझना।

दिन दशा चक्रम्
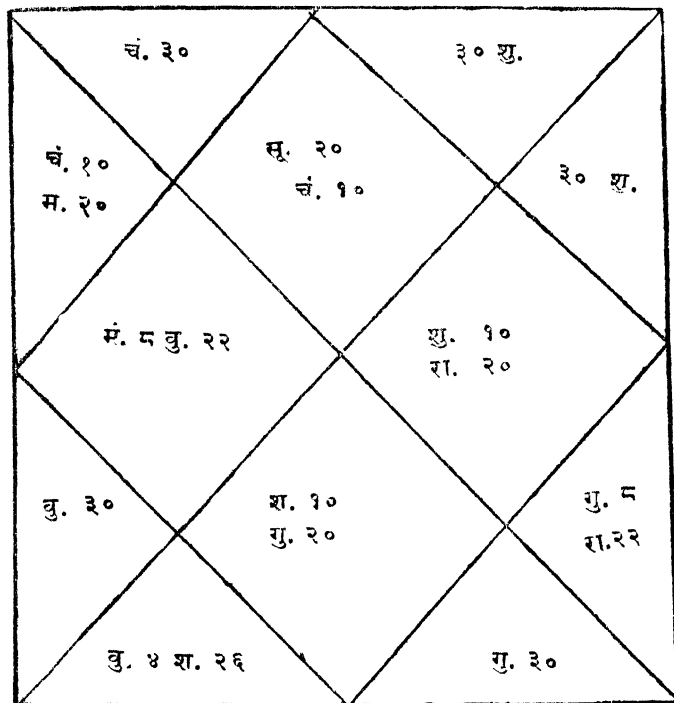
समय फलदा ग्रहाः

राश्यादिगौ रविकुजौ फलदौ सितेज्यौ।
मध्ये सदा शशिसुतश्चरमेऽब्जमन्दौ ॥

अर्थ--सूर्य मंगल राशि के आदि में फल देते हैं, शुक्र और गुरु राशि के म१२ में फल देते हैं, बुध सदाफल को देते हैं, चन्द्रमा शनिश्चर अन्त में फल को देते हैं।

गृहाणां राशि मध्ये पूर्व फल प्रमाणम्

सूर्यादसौम्यस्फुजितोष्ननाग　　।
सप्तांद्रिघस्त्रा बिधुरग्नि नाड़ीः॥
तमोयमेज्यास्त्रि रसाश्विमासान्　।
गन्तव्य राशेः फलदाः पुरस्तात्॥

अर्थ—सूर्य जिसराशि को जाने वाले होते हैं, उसके पांच रोज के प्रथम, मंगल आठ दिन प्रथम, बुध सातदिन प्रथम, शुक्र सातदिन प्रथम, चन्द्रमा ३ तीन घड़ी पहले, फल देते हैं, और राहु तीन ३ मास पूर्व, शनिश्चर ६ मास पहले, बृहस्पति दो २ मास पहले फल को देते हैं, इस तरह से जिस राशि में ग्रह जाने वाला होता है, उसके पूर्व इस प्रकार से फल को देता है।

स्वशरीरे शनिवास फलम्

राशौ द्वादश जन्म शीर्ष हृदये पादे द्वितीये शनिः।
नानाक्लेश करोऽतिदुर्जनजनात् पुत्रान् पशूनपीड़येत्॥

जिसकी जन्मराशि से बारहवें शनिश्चर हों उसके शिर में वास करता है, जन्म का हो तो हृदय में वास करता है, और दूसरे हों तो चरणों में वास करता है, नाना प्रकार के क्लेश देता है शत्रु जन से पुत्र तथा पशु को पीड़ा पहुँचाता है। चौथे आठवें हो तो अढाई वर्ष तक सब शरीर में वास करता है। उसको अढैया कहते हैं—

"शनि वाहन विचार"

येषां जन्मनितारकादि गणयेत्सूर्यात्मजो भावधिं
चन्द्राङ्के न युतं पुनस्त्रि गुणितं पश्चाद्युगैर्भाजितम्
शेषे कुञ्जर वाजिनोत्तमरथः स्याद्वाहनं शैविका
श्वेतं पीतमरक्त श्याम शुभदं सौख्यं च शोकक्षयम्

अर्थ— जन्म नक्षत्र से शनैश्चर के नक्षत्र तक गिने उस अंक में एक और जोड़ दे फिर उस अंक को तीन से गुने उसमें चार का भाग दे शेषाङ्क एक बचे तो हाथी का वाहन जानना २ बचें तो घोड़े का वाहन जानना तीन बचे तो रथ वाहन समझना चार बचें तो पालकी जानना इसी क्रम से वस्त्र जान लेना अर्थात् एक बचे तो श्वेत वस्त्र, दो बचें तो पीत वस्त्र, तीन बचें तो लाल वस्त्र, शून्य रहे तो श्याम वस्त्र जानना, फल बताते हैं। हाथी का वाहन शुभ है घोड़े का वाहन सुखदायक रथ का वाहन शोककारक और पालकी वाहन क्षयकारक होता है।

द्वितीय प्रकारेणशनिफलमाह

मन्दर्क्षाच्छशिवेद तर्क विशिखा ऽब्ध्यग्नि द्विपक्षक्रमा
च्छागोऽश्वोभषणो गजोहयरिपु हंसो वृषो वायसः
हानि वैरिजयोभ्रमोधनचयोमानाल्प ताभूयता
सौख्यं रोगचयो नरर्क्षवसतो मन्दस्य वाहा अमी

अर्थ—शनिश्चर के नक्षत्र से १ एक ४ चार ६ छ पांच ५ चार ४ तीन ३ दो २ पुनः दो इन नक्षत्रों को स्थापित करे, बाद इसके, अपने जन्म का नक्षत्र देखना, उसी क्रम से वाहन जानकर चक्र के क्रम से समझना, १ छाग २ घोड़ा ३ कुत्ता, ४ हाथी, ५ भैंसा, ६ हंस ७ बैल, ८ कौवा वाहन जानना इनका फल कहते हैं।

छाग में हानि हो घोड़ा में शत्रु से जीत हो, कुत्ता में भ्रम हो, हाथी में धन की वृद्धि हो, भैंसा में मान कम हो; हंस में राज्यपदवी को प्राप्त हो, बैल में सुख प्राप्ति हो, और कौवा में रोग की वृद्धि

तृतीय प्रकारेणशनि वाहन

ऋक्षे शनैश्चर नरस्यऋक्षः माघादि मासैमुनिभिर्विभक्तः
एकेच शुण्डी द्विजम्बुकश्च त्रयेऽपि चाश्वश्च चतुर्थश्वान
सिंहः शरः षष्ट च गर्दभश्च, मृगोपमः सप्तशनेर्हिवाहनाः

फलम्

गजश्च लभते लक्ष्मी जम्बुके बुधिनाशनम्
अश्वश्च कनक प्राप्तिः श्वानश्चौर गृहेगृहे
सिंहे, च जायते सिद्धिर्गर्दभे हानिरेव च
मृगे च प्राण संदेहो वाहनानांफलंदिशेत्

अर्थ— जिस नक्षत्र में शनिश्चर स्थित हो वह नक्षत्र वा जन्म नक्षत्र जोड़ देना, उसमें माघ मास से लेकर जो महीना हो शनि नक्षत्र पर्यन्त, उसे भी उसी नक्षत्रों के अंक में जोड़ उस अङ्क में सात का भाग देना, क्रम से वाहन ज्ञान लेना अर्थात १ बचे तो हाथी का वाहन जानना, दो बचे तो सियार समझना, तीन बचें तो घोड़ा चार बचें तो कुत्ता, पांच बचे तो सिंह छ बचें तो गदहा और सात बचें मृग वाहन जानना,

फल

हाथी वाहन में लक्ष्मी लाभ हो, सियार में बुद्धि नाश हो, घोड़े में सोना मिले, कुत्ता वाहन में गृह गृह में चोरी हो, सिंह में सिद्धि हो, गदहा में हानि हो और मृग में प्राण सन्देह समझना चाहिए।

मतान्तरम्

तिथिवारञ्च नक्षत्रं नामाक्षर समन्वितम्
नवभिस्तु हरेद्भागं शेष वाहन मुच्यते
गर्दभस्तुरगो हस्तीमेषो जम्बुक सिंहकौ
काको मयूरो हंसश्च नवैते शनिवाहनाः
गर्दभे च महादुखं बाजिने सुख संपदः
गजे मिष्टान्न भोजी स्यान्मेषेतुविमुखो भवेत्
जम्बुके मरणं ज्ञेयं सिंहे शत्रु विनाशनम्
काके च मरणं ज्ञेयं मयूरेऽर्थं सुखीभवेत्
हंसे च राज सन्मानं वाहनानां फलं त्विदम्

अथ शनैश्चरण विचार

जन्माङ्ग रुद्रेषु सुवर्ण पादं, द्विपच नन्दे रजतस्य पादम्
त्रिसप्तदिकताम्र पदं वदन्ति, वेदाष्ट सार्केष्विह लोहपादम्

पाद फलम्

लोहे धन विनाशः स्यात् सर्व सौख्यंज काञ्चने
ताम्रे च समताज्ञेया सौभाग्यं रजतेभवेत्

अर्थ — जन्म का चन्द्रमा हो वा छटे तथा ग्यारहवें हो तो शनिश्चर का चरण सोने का जानना, दूसरे, पांचवे, नवें हो, तो चांदी का चरण जानना, तीसरे सातवें और दशवें चन्द्रमा हो तो ताम्र का पाद जानिए, और चौथे आठवें बारहवें चन्द्रमा हो तो लोह का पाद जानिए।

फल

लोह का पाद धन का नाश करे, और सोने का सर्व सुख करे, ताम्र का सम, और चांदी का फल सौभाग्य जानिए।

चन्द्रमा वाहन माह

मेषे वृश्चिके सिंहे रक्त कुंजर वाहनम्
मिथुने युग्मे धनौ चैव पीतं तु तुरग भवेत्
वृषे तुले कर्कटेच वाहनं वृषभः स्मतः
मकरे कुम्भे कन्यायां कृष्ण महिष वाहनम्

अर्थ— मेष वृश्चिक सिंह का, चन्द्रमा हो तो रक्त हाथी वाहन होता है मिथुन मीन धन का चन्द्रमा पीत घोड़ा वाहन होता है वृष तुला कर्कट का चन्द्रमा हो तो वाहन बृष हो; मकर कुंभ कन्या चन्द्रमा में काला महिष वाहन होता है।

सूर्य फलम्

गोचर फलम्

"गतिर्भयं श्री व्यसनं च दैन्यं शत्रुक्षयो यानमतीव पीड़ा।
कान्तिक्षयोऽभीष्ट विशिष्ट सिद्धि र्वृद्धिव्ययोऽर्कस्य फलं क्रमेण ॥

अर्थ—जन्म के सूर्य में यात्रा, दूसरे स्थान में भय, तीसरे लक्ष्मी चौथे में व्यसन, पांचवें में दीनता, छठे शत्रु नाश, सातवें में वाहन, आठवें में पीड़ा, नवें में कांति, दशवें में अभीष्ट सिद्धि, ग्यारहवें में लाभ, और १२ में व्यय हो।

चन्द्रफलम्

सदन्नमर्थक्षयमर्थलाभं कुक्षि व्यथां कार्य विघातलाभम्।
वित्तं रुजं राजभयं सुखं च लाभं च शोकं कुरुते मृगाङ्कः ॥

अर्थ—जन्म के चन्द्रमा में उत्तम भोजन, दूसरे स्थान में धन का नाश, तीसरे धन लाभ, चौथे कुक्षि में पीड़ा, पांचवें में कार्य नाश, छठे में लाभ सातवें धन, आठवें में रोग, नवे में राज-भय, दशवें में सुख, ग्यारहवें में लाभ, बारहवें चन्द्रमा में शोक होता है।

भौम फलम्

भीतिं क्षतिं वित्तमरिप्रवृद्धिमर्थं प्रणाशं धनमर्थनाशम्
शस्त्रोपघातं च रुजं च शोकं लाभं व्ययं भूतनयस्तनोति,

अर्थ—जन्म के मङ्गल में भय, दूसरे स्थान में क्षय, तीसरे में धन, चौथे में शत्रु वृद्धि, पांचवें में धन नाश, छठे धन की हानि, सातवें में शस्त्रघात, आठवें में रोग, नवे में शोक, दशवें तथा ग्यारहवें में लाभ, बारहवें स्थान में मङ्गल व्यय कराता है।

बुध फलम्

बन्धंधनं वैरिभयं धनाप्तिं, पीडां स्थितिं पीडनमर्थलाभम्
खेदं सुखं लाभमथार्थ नाशं, क्रमात्फलं यच्छति सोमसूनुः

अर्थ—जन्म राशि के बुध में बन्धन, दूसरे में धन, तीसरे में शत्रु से भय, चौथे में धन की प्राप्ति, पांचवें में पीड़ा, छठे स्थिति, सातवे में पीड़ा, आठवे में धन लाभ, नवे खेद, दशवे में सुख, ग्यारहवे लाभ और बारहवे में हानि होती है।

गुरु फल माह

भीति वित्तं पीडनं वैरि वृद्धिं, सौख्यं शोकं राजमानं च रोगम्
सौख्यं दैन्यं मानवित्तं च पीड़ां, दत्ते जीवोजन्मः सकाशात्

अर्थ—जन्मराशि के बृहस्पति में भय, दूसरे धन, तीसरे पीड़ा, चौथे शत्रु की वृद्धि, पांचवे सुख, छठे स्थान में शोक, सातवे राजमान आठवे में रोग, नवे में सुख, दशवे में दीनता, ग्यारहवे मान, १२ पीड़ा, ।

शुक्र फल माह

रिपुक्षयं वित्तमतीव सौख्यं, वित्तंसुत प्रीतिमरातिवृद्धिम्
शोकं धनाप्तिवर वस्त्र लाभं, पीड़ां स्वमर्थञ्चददाति शुक्रः

अर्थ—जन्म स्थान में शुक्र हो तो शत्रु का नाश, दूसरे धन लाभ, तीसरे में बहुसुख, चौथे में धन, पांचवे में पुत्र, छठे में शत्रु वृद्धि, सातवे में शोक, आठवे में धन प्राप्ति, नवे में उत्तम वस्त्रों का लाभ, दशवे में पीड़ा, ग्यारहवे में धन वृद्धि, बारहवे १२ भी शुक्र धन को देता है।

शनि फलमाह

भ्रंशं क्लेशं शं च शत्रु प्रवृद्धिं, पुत्रात्सौख्यं सौख्यवृद्धिं च दोषम्
पीड़ां सौख्यं निर्धनत्वंधनाप्तिं, नानाजन्मभानुसूनुस्तनोति

अर्थ—जन्म राशि के शनिश्चर में बुद्धि नाश, दूसरे में क्लेश, तीसरे में सुख, चौथे में शत्रु वृद्धि, पांचवे पुत्र से सुख, छठे शारीरिक सुख, सातवे में दोष, आठवे में पीड़ा, नवे में सुख,

दशवे में निर्धनता, ग्यारहवें धन लाभ, बारहवे शनिश्चर में अनेक प्रकार के अनर्थ होते हैं।

राहु केतु फलम्

हानिं नैस्वं स्वं च वैरं च शोकं, वित्तं वादं पीड़नं चापिपापम्
वैरं सौख्यं द्रव्यहानिं प्रकुर्याद्राहुः पुंसां गोचरे केतुरेवम्

अर्थ—जन्मराशि के राहु और केतु में हानि, दूसरे निर्धनता, तीसरे धन, चौथे वैर, पांचवे में शोक, छठे में धन, सातवे में कलह, आठवे पीड़ा, नवे पाप, दशवे में वैर, ग्यारहवें में सुख, और बारहवे में धन की हानि करते हैं राहु केतु।

सूर्यदानमाह

माणिक्यगोधूम सवत्सधेनुः कौसुम्भवासो गुडहेमताम्रम्
आरक्तकं चन्दनमम्बुजं च वदन्ति दानं हि विरोचनाय

अर्थ— माणिक्य गेहूं गौ, बछड़ा, लाल वस्त्र, गुड़, सोना, तांबा, लालचन्दन, कमल, इत्यादि वस्तुओं के साथ दक्षिणा देवे।

चन्द्र दान माह

सद्वंश पात्रस्थित तण्डुलाश्च, कर्पूरमुक्तादधि शुभ्रवस्त्रम्
सुगोपयुक्तं वृषभं चरौप्यं चन्द्रायदद्यादघृतपूर्ण कुम्भम्

अर्थ—कांस्यपात्र, चावल, कपूर. मोती, दही, सफेद वस्त्र, बछड़ा सहित गौ, चांदी घृतपूर्ण कुम्भ, इनके सहित दक्षिणा।

भौम दानमाह

प्रवालगोधूम मसूरिकाश्च, वृषोऽरुणश्चापि गुड़ः सुवर्णम्
आरक्त वस्त्रं करवीर पुष्पं ताम्रं च भौमाय वदन्ति दानम्

अर्थ—मूंगा, गेहूं, मसूर, लाल बैल गुड़, सोना, लालवस्त्र, लाल कनीर के फूल, ताँबा इत्यादि वस्तुओं के साथ दक्षिणा देवे।

बुध दान माह

वृषं च नीलं किलधौत कांस्य मुद्गाज्यगारुत्मत सर्वपुष्पम्
दासी च दन्त्याद्विरदस्य नूनं वदन्ति दानं विधु नन्दनाय

अर्थ—नील बैल, कांसा, मूंग घृत, पन्ना, सर्वफूल, दासी, हाथी के दांत, नीला वस्त्र, हीरा इत्यादि वस्तुओं के साथ दक्षिणा देवे ।

गुरु दान माह

शर्करा च रजनी तुरङ्गमः, पीतधान्यमपि पीतमम्बरम्
पुष्पराग लवणं सकाञ्चनं, प्रीतये सुरगुरोः प्रदीयताम्

अर्थ—शक्कर, हरदी, घोड़ा पीत, अन्न, पीत वस्त्र, पुष्प, पीला, नमक सोना इत्यादि दक्षिणा सहित सुरगुरु के प्रसन्नता के लिए देवे ।

शुक्र दान माह

चित्राम्बरं शुभ्रतरस्तुरङ्गो धेनुश्च वज्रं रजतं सुवर्णं ।
सतण्डुलानुत्तम गन्धयुक्तं वदन्तेदानं भृगुनन्दनाय ॥

अर्थ—चित्र वस्त्र सफेद घोड़ा, गौ, हीरा, चांदी, सोना, चावल, चन्दन इन सब वस्तुओं के साथ दक्षिणा देवें ।

शनिदान माह

माषाश्च तैलं विमलेन्द्र नीलं, तिला कुलत्था महिषी च लोहम् ।
कृष्णा च धेनुः खलु दुःख शान्त्यै वदन्तिदानं रवि नन्दनाय ॥

अर्थ—उड़द तैल नीलम, तिल, कुलथी, भैंस लोह श्यामगौ, दक्षिणा इति ।

राहु दान माह

गोमेद रत्नं च तुरङ्गमश्च, सुनील चैलामल कम्बलं च ।
तिलाश्च तैलं खलु लोह मिश्रं स्वभानवेदानमिदं वदन्ति ॥

अर्थ—गोमेद, घोड़ा स्याह वस्त्र कम्बल तिल तेल लोह दक्षिणा इत्यादि ।

केतु दान माह

वैदूर्यं रत्नं सतिलं च तैलं सुकम्बलश्चापि मदो मृगस्य ।
शस्त्रं चकेतो परितोषहेतोश्छागस्यदानं कथितं मुनीन्द्रैः ॥

अर्थ—वैदूर्य मणि तिल तेल कम्बल कस्तूरी वस्त्र छाग दक्षिणा इत्यादि वस्तुयें प्रसन्नता के लिए देवे ।

संक्राति प्रकरणम्

संक्रातिर्भानुवारे स्याद्घोराख्याभरणी मघे ।
पूर्वा त्रये च नक्षत्रे शूद्राणां सुखदा स्मृता ॥

अर्थ—रविवार में भरणी, मघा, तीनों पूर्वा इन नक्षत्रों में संक्राति लगे तो घोरा नाम्नी संक्राति होती है सो वह शूद्र जनों को सुख देने वाली कही है ।

सोमवारे ऽभिजित्पुष्याऽश्विनी हस्ते तथैव च ।
संक्रातिः कथिता ध्वांक्षी विशां सौख्य प्रदायिनी ॥

अर्थ—सोमवार में अभिजित पुष्य अश्विनी हस्त इन नक्षत्रों में संक्राति लगे तो ध्वांक्षी नाम और वैश्यों को सुख देने वाली होती है ।

श्रवणादि त्रिभे स्वात्यां पुनर्वस्वो कुजेहनि ।
याभवेत्सा तु चौराणां सौख्यदात्री महोदरी ॥

अर्थ—श्रवण धनिष्ठा शतभिषा, स्वाति पुनर्वसु इन नक्षत्रों में मङ्गल के दिन जो संक्राति लगे तो महोदरी नाम वाली और चोरों को सुख देने वाली होती है ।

बुधाहे याच रेवत्यां मृगे चित्रानुराधयोः ।
सातु मन्दाकिनी नाम्नी नृपाणां सौख्यदायिनी ॥

अर्थ—बुधवार के दिन रेवती मृगशिरा चित्रा अनुराधा इन नक्षत्रों में संक्राति लगे तो मन्दाकिनी नाम की राजाओं को सुख देती है।

बृहस्पतौ पदा जाता रोहिण्यां चोत्तरात्रये।
तदा मन्दाभिधा ज्ञेया विप्राणां हित कारिणी ॥

अर्थ—बृहस्पति के दिन रोहिणी तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में संक्राति लगे तो मन्दा नाम की ब्राह्मणों को सुख देने वाली होती है।

भृगोर्वारे विशाखायां कृतिकायाञ्च या भवेत् ।
सातु मिश्रेति विख्याता पशूनां प्रीति दायिनी ॥

अर्थ—शुक्रवार के दिन विशाखा, कृतिका नक्षत्रों में जो संक्राति लगे तो, मिश्र नाम की संक्राति होती है, पशुओं को सुख देने वाली होती है।

शनौ मूले तथाद्रायामाश्लेषा ज्येष्ठयोरपि।
या भवेद्राक्षसी सा स्यादंत्यजानां सुखावहा ॥

अर्थ—शनैश्चर के दिन मूल आर्द्रा आश्लेषा ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में जो संक्राति लगे सो राक्षसी नाम की अन्त्यजों को सुख देने वाली है।

"आद्ये ह्रि त्र्यंशके राज्ञो द्वितीये हन्ति वैद्विजान्।
तृतीये वेश्यकान्प्रांत्ये संक्रांतिः शुद्र वर्णकान्" ॥

अर्थ—दिन के पहिले त्र्यंश में जो संक्राति लगे तो, राजाओं का नाश करती है, दूसरे त्र्यंश में लगे तो ब्राह्मणों का नाश करती है, तीसरे त्र्यंश में लगे तो वैश्यों का नाश करती है, और सूर्य के अस्त काल में लगे तो शूद्र वर्ण का नाश करती है।

प्रतियामं क्रमाद्रात्रौ पिशाचात्राक्षसान्नटान।
पशुपाल गणं हन्ति प्रभाते सर्वलिगिनः ॥

अर्थ—रात्रि में प्रत्येक प्रहर के क्रम से संक्रांति लगने का यह फल है कि प्रथम प्रहर में संक्रान्ति लगे तो पिशाचों का नाश करती है, और दूसरे प्रहर में संक्रांति लगे तो राक्षसों का, तीसरे प्रहर में नटों का, चौथे में पशु पालों का नाश, प्रातः काल में संन्यासियों का नाश करती है।

मतान्तरेण

वृश्चिके वृषभे सिंहे कुम्भे विष्णुपदी स्मृता।
षडशीति मुखा मीने कन्या मिथुन धन्विषु॥

अर्थ—वृश्चिक, वृष, सिंह, कुम्भ राशियों में जो संक्रांति लगती है वह विष्णुपदी कहाती है, मीन, कन्या मिथुन धन इन राशियों में संक्रांति का नाम षडशीति मुखा है कर्क संक्रांति में दक्षिणायन मकर की उत्तरायण कहाती है, तुला, मेष की संक्रांति का विषुव विषुव कहा है।

पुण्य समय

पुण्याः षोडशनाड्यस्तु पराः पूर्वास्तु संक्रमात्।
त्रिंशत्कर्कटके पूर्वाश्चत्वारिंशत्परामृगे॥

अर्थ—संक्रांति लगने से पहिली और पिछली सोलह सोलह घड़ी का पुण्य काल है, और कर्क की संक्रान्ति में ४० घड़ी पिछली पुण्य काल होता है।

मध्याह्नादुत्तरं पुण्यं प्राङ्निशीथात्तु संक्रमे,
निशीथादूर्ध्वं काले मध्याह्नात्प्राक्परेऽह्न।
चेन्निशीथे द्व्यहे पुण्यं परपूर्व विभागयोः,॥

अर्थ—आधीरात से पहिले संक्रान्ति लगे तो पूर्व दिन के मध्याह्न से पीछे पुण्य काल होता है, और आधीरात से पीछे संक्रान्ति लगे तो पर दिन के मध्याह्न से पहिले पुण्य काल होता है और ठीक यदि

आधी रात के समय संक्राति लगे तो पहिले और पिछले दोनों दिनों के क्रम से पूर्व और पर भाग में पुण्य काल होता है।

अस्तादूर्ध्वं तु मकरे रात्रौ संक्रमणं रवेः।
तदोत्तरदिने पुण्यं मध्याह्नात्प्राक्प्रकीर्तितम्॥

अर्थ—सूर्यास्त के पीछे रात्रि में मकर राशि पर सूर्य की संक्रान्ति लगे तो पर दिन के मध्याह्न से पहले पुण्य काल होता है।

यदा सूर्योदयात्पूर्वं कर्के संक्रमतेरविः।
तदा पूर्वदिने पुण्यं परतश्चे परेहनि॥

अर्थ—यदि सूर्योदय से पहिले कर्क राशि पर सूर्य की संक्रांति होय तो पहले दिन में पुण्य काल होता है, और सूर्योदय से पीछे कर्क संक्रांति होय तो पिछले दिन में पुण्य काल होता है।

मकरेऽस्तमितादूर्ध्वं संक्रमे प्राग्घटीत्रयम्।
तदा पूर्वदिने पुण्यं परतश्चेत्परेऽहनि।

अर्थ—सूर्यास्त से पीछे तीन घड़ी के भीतर जो मकर की संक्रान्ति लगे तो, पूर्व दिन में पुण्य काल होता है, और सूर्यास्त से तीन घड़ी के पश्चात् लगे तो पर दिन में पुण्य काल होता है,

कर्क संक्रमणं सूर्योदयात्प्राग्घटिकात्रयम्।
तदापरदिने पुण्यं तत्पूर्वं तद्दिने स्मृतम्।

अर्थ—यदि कर्क की संक्रान्ति सूर्योदय से पहले तीन घड़ी के भीतर लगे तो पर दिन में पुण्य काल होता है, यदि सूर्योदय से पहले तीन घड़ी से पूर्व में लगे तो पूर्व दिन में पुण्य काल होता है।

आदौ विष्णुपदेयाम्ये मध्येतु विषुवाभिधे॥
षडशीति मुखेसौम्येऽयने पुण्यं तदुत्तरम्॥

अर्थ—विष्णु पद नाम की संक्रान्ति तथा कर्क संक्रान्ति की प्रथम की सोलह घड़ी अतिपुण्य दायक हैं, और विषुव नामक

संक्रान्ति के मध्य की सोलह घड़ी अतिपुण्य दायक हैं, और षडशीति मुख (मिथुन कन्या धन मीन) तथा मकर की संक्रान्ति की पिछली सोलह घड़ी अति पुण्य दायक होती हैं।

सायनार्क संक्रान्तिः

सायनस्य रवेर्वापि यदा संक्रमणं भवेत्।
तदास्यादधिकं पुण्यं रहस्यं विदुषां हितत्॥

अर्थ—जब अयनांश सहित सूर्य की संक्रान्ति होती है, तब भी अधिक पुण्य काल होता है, ऐसा विद्वानों का रहस्य है।

संक्रान्ति मुहूर्तास्तत्फलञ्च

पुनर्वसु विशाखाच रोहिणी चोत्तरा बृहत्।
सुभिक्षंतत्र संक्रान्तौ वाण वेद (४५) मुहूर्तकाः॥

अर्थ--पुनर्वसु, विशाखा रोहिणी, तीनों उत्तरा ये नक्षत्र बृहत्संज्ञक है इनमें संक्रान्ति लगे तो पैंतालीस ४५ मुहूर्त तथा सुभिक्ष होता है।

भरण्यार्द्रा तथाऽऽश्लेषा स्वातिज्येष्ठा जघन्यभम्।
संक्रान्तौ तत्र दुर्भिक्षं मुहूर्ता वाणभूमिताः॥

अर्थ---भरणी आर्द्रा आश्लेषा स्वाति ज्येष्ठा ये नक्षत्र जघन्य संज्ञक है, इनमें संक्रान्ति लगे तो पंद्रह १५ मुहूर्त तथा दुर्भिक्ष होता है।

शेषभानि समाख्यानि संक्रान्ता वर्धं साम्यताम्।
मुहूर्तास्त्रिंशदत्रोक्ता फलं चन्द्रोदयेऽपितत्॥

अर्थ—शेष नक्षत्र, मृगशिर, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्, श्रवण धनिष्ठा, कृत्तिका, इन नक्षत्रों की सम संज्ञा है, इन में संक्रान्ति लगे तो तीस मुहूर्त ३० तथा भाव की

समता होती है, और इन्हीं पूर्वोक्त तीन संज्ञा वाले नक्षत्रों में चन्द्रमा का उदय होतो पूर्वोक्त फल समझना।

अथाब्द विंशोपकाः

अब्द विंशोपकाः कर्क संक्रमो दिङ्मितारवौ।
चन्द्रे नखा २० गजा भौमे बुधेऽर्काः १२ सायकाः ५ शनौ।
अष्टादश १८ मिताः शुक्रे तत्संख्या १८ गुरुवासरे॥

अर्थ—यदि कर्क की सक्रान्ति, रविवार के दिन लगे तो दश १० (अब्द विशोपक) विश्वा होती है, सोमवार को लगे तो बीस मंगल को लगे तो ८ बुध को लगे तो बारह १२ शनैश्चर को लगे तो पांच ५ शुक्र को लगे तो १८ गुरु, बृहस्पति को लगे तो भी १८ विश्वा संक्रान्ति के होते हैं।

अथ संक्रांतेः स्थित्युपवेशन शयनानितत्फलंच

नेष्टः सुप्तो रविर्नागे तैतिलेऽथ चतुष्पदे।
किंस्तुघ्ने कौलवेतिष्ठं शकुनौ संक्रमे शुभः॥
गरादिपंचकेमध्यश्चोपविष्टोऽन्नवर्षणे।

अर्थ—नाग तैतिल चतुष्पद इन करणों में सूर्य की संक्रान्ति लगे तो सूर्य की सुप्तावस्था, अर्थात् सूर्य सोते हैं, जिनका फल नेष्ट है, और किंस्तुघ्न कौलव शकुनि इन करणों में संक्रान्ति लगे तो, सूर्य खड़े होते हैं, जिसका फल शुभ होता है, और गरादि पांच करण अर्थात् गर वणिज विष्टि वव बालव में संक्रान्ति लगे तो सूर्य बैठे होते हैं। जिसका फल मध्यम होता है, उत्तम फल वर्षादि, अन्नादिक के भावों में भी विचारना चाहिये:—

अथ संक्रांते वाहनानि

सिंहो व्याघ्रो वराहश्च खरभे महिषाहयः।
श्वाजौ गौः कुक्कुटो वाहाः सक्रांतौववतोरवेः॥

अर्थ—सिंह, व्याघ्र, वराह, गर्दभ, भैंसा, हाथी, घोड़ा, कुत्ता, बकरा, गौ, मुर्गा, ये ववादि करणों के क्रमसे सूर्य की संक्रान्ति के वाहन हैं।

अथ वस्त्राणि

श्वेतं पीतं हरित्पांडु रक्तं श्यामं च मेचकम्।
चित्रं कंबलदिङ्मेघ सन्निभं क्रमतो वरम्॥

अर्थ—श्वेत१ पीत२ हरित ३ पांडु ४ लाल ५ काला ६ "मेचक" कृष्ण वर्ण ७ चित्र ८ कंबल ९ दिशा, १० मेघ के तुल्य ११ ये ववादि करणों के क्रम से संक्रान्ति के वस्त्र हैं।

अथशस्त्राणि

भुशुंडी चङ्गदा खग दण्डः कोदंड तोमरौ।
कुंतः पाशोंकुशोऽस्त्रंचबाणश्चैवायुधं क्रमात्॥

अर्थ—भुशुंडी १ गदा २ खड्ग ३ दंड ४ धनुष ५ तोमर ६ भाला, ७ पाश ८ अंकुश ९ अस्त्र १० बाण ११ ववादि करणों के क्रमसे संक्राति के आयुध हैं।

अथभक्ष्याणि

अन्नंच पायसं भैक्ष्यं पक्वान्नं च पयोदधि,
चित्रान्नं गुड मध्वाज्यं शर्कराभक्षणं क्रमात्।

अर्थ—अन्न १ खीर २ भिक्षान्न ३ पक्वान्न ४ दूध ५ दधि ६ चित्रान्न ७ गुड़ ८ शहद ९ घी १० खांड ११ ये क्रम से भक्ष्य हैं।

अथविलेपनाणि

कस्तूरी कुंकुमं चैव चंदनं कुचमृत्तनम्,
यावश्च्योतु मदोवापि हरिद्रांजन कोऽगडः।
कर्पूरश्चेति विज्ञेयं संक्रान्तेश्चविलेपनम्॥

अर्थ—कस्तूरी १ केसर २ चंदन ३ मृत्तिका ४ गोरोचन ५ महावर ६ बिलावकामद ७ हरिद्रा ८ अंजन ९ अगर १० कपूर ११ यह क्रम से संक्रांति के विलेपन जानना।

अथजातयः

देव भूतोरगाः पक्षी पशु रेणोद्विजः क्रमात्।
क्षत्रियो वैश्यकः शूद्रः संकरो जातयस्त्विमाः॥

अर्थ—देवता १ भूत २ सर्प ३ पक्षी ४ पशु ५ हरिण ६ ब्राह्मण ७ क्षत्रिय ८ वैश्य ९ शूद्र १० सकर ११ ये क्रम से जाति हैं।

अथपुष्पाणि

पुन्नाग जाति वकुल केतकी विल्व कार्कजम्।
दूर्वाब्ज मल्लिका पुष्पं पाटला च जया क्रमात्॥

अर्थ—नागकेसर १ चमेली २ मौलसिरी ३ केतकी ४ विल्व ५ आक ६ दूर्वा ७ कमल ८ मोगरा ९ पोदकर १० दुपहरिया ११ ये क्रम से संकान्ति के पुष्प हैं।

अथाभरणानि

नूपुरः किंकिणी मुक्ता विद्रुमः कंकणं मणिः।
गुंजा वराटिका नीलो वज्रः स्वर्णं यथाक्रमम्॥

अर्थ नूपरः १ किंकणी २ मोती ३ मूंगा ४ कंकण ५ मणि ६ चौंटनी ७ कौड़ी ८ नीलम ९ हीरा १० सुवर्ण ११ ये क्रम से आभूषण हैं।

अथवयांसि

बाला कुमारिकारंडा मध्या प्रौढा प्रगल्भिका,
वृद्धा वंध्याऽतिवंध्या स्यात् मृता योगिनीवयः।

अर्थ—बाला १ कुमारिका २ रंडा ३ मध्या ४ प्रौढा ५

प्रगल्भिका विशेष तरुणा ६ वृद्धा ७ वंध्या ८ अतिवंध्या ६ "असूता" जिनके बालक नहीं हुआ हो, १० योगिनी ग्यारह ये ववादि के क्रम संक्रान्त की अवस्थायें हैं।

भौमवती अमावस्या पर्वयोगः

अमावस्यां भवेद्वारो यदा भूमि सुतस्यवै।
जाह्नवी स्नान मात्रेण गोसहस्त्र फलं लभेत् ॥

अर्थ—मंगलवार को अमावस पड़े तो, भौमवती नाम होता है उसमें केवल गङ्गा स्नान से १ एक हजार गोदान का फल होता है, और सोमवार युक्त सोमवती अमावस होती है, उसमें इससे भी अधिक फल जानना।

अथ कपिला षष्ठी पर्वयोगः

आश्विने कृष्णपक्षे च षष्ठ्यां भौमे ऽथ रोहिणी।
व्यतीपातस्तदाषष्ठी कपिलाऽनन्त पुण्यदा ॥

अर्थ—आश्विन कृष्णपक्ष की छाठ, मंगलवार और रोहिणी नक्षत्र तथा व्यतीपात योग युक्त हो तो असंख्य पुण्य को देने वाली होती है, इसमें तीर्थ स्नान करने से बड़ा पुण्य होता है।

पुष्कर पर्वयोगः

विशाखास्थो यदाभानुः कृतिकासुच चन्द्रमाः।
सयोगः पुष्करोनाम पुष्करेष्वतिदुर्लभः ॥

अर्थ—विशाखा नक्षत्र के जब सूर्य हो, और दिन नक्षत्र कृतिका, तो पुष्कर संज्ञक योग होता है, उसमें पुष्कर क्षेत्र में स्नान दुर्लभ होता, इसका फल अधिकतर है।

वारुणी पर्वयोगः

वारुणेन समायुक्ता मधौ कृष्णा त्रयोदशी।
गंगायां यदिलभयेत कोटि सूर्य गृहैः समा ॥

अर्थ—यदि चैत्र कृष्णा त्रयोदशी को शतभिषा नक्षत्र सूर्योदय में मिले तो वारुणी पर्व होता है। उसमें गङ्गा स्नान करने से अनन्त सूर्य ग्रहण के समान फल होता है।

शनिवार समायुक्ता सामहा वारुणीस्मृता
शुभ योग समायुक्ता शनौ शतभिषा यदि।
महा महेतिविख्याता त्रिकोटि कुलमुद्धरेत्॥

अर्थ—शनिवार युक्त त्रयोदशी और शतभिषा नक्षत्र हो तो महा वारुणी संज्ञक पर्व होता है, और शुभयोग शनिवार और शत भिषा से युक्त त्रयोदशी हो तो महावारुणी पर्व होता है, उसमें गङ्गा स्नान, तीन करोड़ कुल के उद्धार करने में समर्थ है।

गोविन्द द्वादशी पर्वयोगः

यदा चापे जीवो भवति घटराशौ दिनमणि।
स्तथा तारानाथः स्वभवनगतः फाल्गुन सते।
यदार्को द्वादश्यामदितिभयुतः शोभनयुतः,
स्तदा गोविन्दाख्यं हरिदिवसमस्मिन् क्षितितले॥

अर्थ—जब धन के वृहस्पति कुम्भ के सूर्य, और कर्क का चन्द्रमा हो फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि हो, रविवार दिन हो, तथा पुष्य नक्षत्र और शोभन योग हो, तो गोविन्द द्वादशी पर्व होता सूर्योदय की तिथि हो. तब सब योग पड़ने पर पूर्वोक्त पर्व जानिये, इसमें अयोध्या के स्नान का अधिक फल है।

श्रुति व्यतीपात दिने सदर्शे, युतिर्यदा कृष्णदलेतु माघे।
पौषे तथार्धोदय संज्ञकोऽयं किञ्चिद्विहीनेतु महोदयः स्यात्॥

अर्थ—माघ पौष की अमावस को श्रवण नक्षत्र और व्यतीपात योग हो, तो अर्धोदय पर्व होता है, और इन योगों में से कोई हीन हो तो महोदय संज्ञक, योग जानना।

अर्घोदयेतु संप्राप्ते सर्वं गङ्गा समंजलम् ।
शुद्धात्मानो द्विजाः सर्वे भवेयु ब्रह्म सन्निभाः ॥

अर्थ—अर्धोदय योग में सब जल गङ्गा समान होता है, और शुद्धात्मा ब्राह्मण ब्रह्मा के समान होते हैं ।

यत्किंतञ्चिद्दीयते दानं तद्दानं मेरू सन्निभम् ।
एवमेव फलं ज्ञेयं योगे ऽपिच महोदये ॥

अर्थ—जो कुछ किञ्चन्मात्र दान दे वह दान सुमेरु के बराबर होता है यही फल महोदय का जानना ।

मेषादि बारह लग्नों के कारक मारक योग

मेष लग्न का फल

शनि, बुध, शुक्र पापी ग्रह हैं, गुरु, रवि शुभ ग्रह हैं। शुक्र मारक है।

वृष लग्न का फल

गुरु, शुक्र, चन्द्रमा पापी, शनि, बुध शुभ ग्रह हैं। केवल शनि राजयोग कारक है। मंगल, बुध दोनों मारक हैं परन्तु दोनों में जो बली होगा वही मुख्य मारक होगा।

मिथुन लग्न का फल

मंगल, गुरु पापी, शुक्र शुभ है। चन्द्र, गुरु मारक हैं।

कर्क लग्न का फल

बुध, शुक्र पापी, मंगल, शुक्र शुभ ग्रह हैं। मंगल राजयोग कारक ग्रह तथा रवि, शनि दोनों में श्रेष्ठ बली मारक है।

सिंह लग्न का फल

चन्द्रमा, शुक्र पापी, मंगल शुभ ग्रह है। बुध तथा शनि दोनों मारक हैं पर विशेषतया शनि मार्केश होगा।

कन्या लग्न का फल

चन्द्रमा, मंगल, गुरु पापी शुक्र शुभ है। शुक्र मारक नहीं होगा।

तुला लग्न का फल

रवि मंगल, गुरु पापी, शनि, बुध शुभ ग्रह हैं। बुध, राजयोग कारक तथा मंगल प्रबल मारक का कार्य्य करेगा।

वृश्चिक लग्न का फल

बुध, शुक्र पापी, रवि, चन्द्रमा, मंगल, गुरु शुभ ग्रह हैं। रवि राजयोग कारक तथा शुक्र मारक ग्रह है।

धन लग्न का फल

शुक्र पापी रवि, बुध शुभ ग्रह हैं। रवि, बुध राजयोग कारक तथा शनि मारक ग्रह है।

मकर लग्न का फल

चन्द्रमा, मंगल, गुरु पापी बुध, शुक्र शुभ ग्रह हैं। शुक्र राजयोग कारक तथा चन्द्रमा और गुरु मारक ग्रह हैं।

कुम्भ लग्न का फल

चन्द्रमा, मंगल, गुरु पापी शुक्र शुभ ग्रह है। मंगल राजयोग कारक तथा रवि गुरू मारक ग्रह हैं।

मीन लग्न का फल

बुध शुक्र शनि पापी चन्द्रमा मंगल शुभ ग्रह हैं। मंगल गुरु राजयोग कारक तथा बुध शनि मारक ग्रह हैं।

नोट:—केन्द्र त्रिकोण के स्वामी होकर यदि परस्पर सम्बन्ध करते हों तो शुभ फल देते हैं।

शुक्र का फल केन्द्र त्रिकोण में

१—यदि केन्द्र (लग्न) में शुक्र उच्च या स्वगृही हो तो सुखी स्त्री विलासी, अति कामी तथा दीर्घायु वाला होता है।

२—यदि शुक्र उच्च या स्वगृही हो, चतुर्थ भाव में हो तो वाहन योग करता है।

३—यदि शुक्र उच्च या स्वगृही हो, सप्तम भाव में पड़ा हो तो पुरुष अतिकामी, विलासी, सुन्दर स्त्री पाने वाला तथा अच्छे स्वभाव वाला होता है।

४—यदि शुक्र उच्च या स्वगृही हो, दशम स्थान में पड़ा हो तो पुरुष अच्छे ओहदे वाला बहुमानी तथा बहुत नौकरों वाला होता है।

५—यदि उच्च या स्वगृही शुक्र नवम भाव में पड़ा हो तो पुरुष लाख रुपय पैदा करे और स्वयं कोष का स्वामी बने।

६—यदि शुक्र उच्च व स्वगृही पांचवें भाव में पड़ा हो तो कन्या अधिक हों, स्वयं विद्वान् हो और संतति भी विद्वान् हो।

केन्द्र तथा त्रिकोण में गुरु फल

१—यदि गुरु केन्द्र यानी लग्न में उच्च वा स्वगृही हो तो पुरुष को दीर्घायु देता है। पुरुष विद्वान्, भाग्यवान् और बुद्धिमान् होता है, संतति उत्तम होती है तथा स्त्री उत्तम होती है।

२—यदि गुरु पंचम नवम भाव में उच्च वा स्वगृही हो और कोई पाप ग्रह युक्त वा दृष्टि न हो तो सारी बातें पूरी होंगी परन्तु यदि पाप ग्रह दृष्टि युक्त हो तो फल न्यून हो जायेगा। यदि पंचम पर दृष्टि हो तो विद्या पुत्रादि अच्छे होंगे। यदि सप्तम पर दृष्टि हो तो अच्छी स्त्री नवम पर दृष्टि हो तो अच्छा भाग्य तथा पुरुष धार्मिक होता है।

बारह लग्नों में जन्म-चन्द्रमा

१—यदि जन्म का चन्द्रमा मेष में हो तो पुरुष के नेत्रों का रङ्ग तांबे का सा नेत्र गोल तथा नेत्रों में गर्मी रहे। थोड़ा खाने वाला, शीघ्र खुश होने वाला, देश विदेश घूमने वाला और अतिकामी तथा

जंघा मोटे हों तथा धन स्थिर न रहे, सूरमा हो, स्त्रियों का प्यारा, सेवा जानने वाला, नख कुरूप, सिर पर चोट मानी अपने भाइयों में श्रेष्ट, हाथ में शक्ति का चिन्ह, अतिचपल, तथा जल से डरने वाला हो।

२—जिसके जन्म समय का चन्द्रमा वृष का हो तो वह पुरुष देखने में स्वरूप सजीली चाल चलने वाला, नितम्ब मुख मोटे पीठ मुख वा अण्ड कोष में चिन्ह, देने में उदार, क्लेश सहारने वाला, कन्या पैदा करने वाला, कफ प्रकृति का प्रथम कुटुम्ब व धन व पुत्र से युक्त, सौभाग्य वाला, सबका प्यारा, बहुत भोजन करने वाला स्त्रियों का प्यारा, गाढ़ मित्रों वाला, जवानी बुढ़ापे में सुखी हो।

३—जिसका जन्म चन्द्रमा मिथुन में हो वह स्त्रियों का अति अभिलाषी, काम शास्त्र में चतुर, तांबे के रङ्ग के समान नेत्र, शास्त्र जानने वाला, दूत सुन्दर शरीर, प्यारी वाणी, बहु भक्षी, गीत प्यारा मानने वाला, नाचने वाला, कुटिल केश, चतुरबुद्धि सबको हंसाने वाला पराये मन को चिन्हों से जानने वाला, हिजड़ों के साथ प्रीति करने वाला तथा ऊंची नाक वाला हो।

४—कर्क राशि का चन्द्रमा जिसके लग्न में हो, वह कुटिल जल्दी चलने वाला जघन स्थान ऊंचा स्त्री वशी अच्छे मित्रों वाला ज्योतिष जानने वाला बहुत घर बनाने वाला कभी धनी कभी निर्धन छोटा शरीर मोटी गर्दन प्रीति से वश में आने वाला मित्रों का प्यारा जलाशय तथा बगीचों में प्रेम रखने वाला हो।

५—जन्म में सिंह राशि का चन्द्रमा हो तो व [illegible] थी, ठोडी मोटी, बड़ा मुख, पीले नेत्र, कम सन्तान, स्त्री द्वेषी, [illegible] वन पर्वत चाहने वाला, निकम्मे क्रोध वाला, क्षुधा तृषा से [illegible] दन्त तथा नासिक कष्ट से पीड़ित, दाता, पराक्रमी और बुद्धि [illegible] ज्ञान युक्त, मातृवश होता है।

६—जिसकी जन्म राशि कन्या हो वह लज्जा से आलस्य सहित दृष्टिपात और गमन करने वाला शिथिल स्कन्ध के बाहु सुखी मधुरवाणी, सत्यवक्ता धर्मात्मा, नृत्य गीत वादित पुस्तक चित्र कर्म में निपुण, शास्त्रार्थ जानने वाला, बुद्धिमान, सम्भोग में चंचल, पराये धन व घर से युक्त, परदेशवासी प्यारी बोली बोलने वाला, थोड़े पुत्र बहुत कन्या उत्पन्न करने वाला हो।

(७) तुला जन्म राशि वाला पुरुष देवता, ब्राह्मण और साधू की पूजा में तत्पर बुद्धिमान पर धनादि में निर्लोभी, स्त्री का वशी भूत, उच्च शरीर, नाक माडे व शिथिल सब गात्र फिरने वाला, बलवान्, अंगहीन, क्रय विक्रय व्यापार जानने वाला, जन्म में एक नाम पीछे देव संज्ञा दूसरा नाम विख्यात हो, रोगी बन्धु कुटुम्भ का हितकारी, और बन्धु जनों से त्यक्त होता है।

(८) वृश्चिक राशि वाले पुरुष के नेत्र व छाती बड़ी जंघा व जानु गोल, माता पिता गुरु से रहित, बाल अवस्था में रोगी, राज्य वंश में पूज्य पीत केश, विषम स्वभाव मच्छी व वज्र पक्षी चिन्ह हाथ में, और गुप्त पापी हो।

(९) जिस पुरुष की धन राशि हो वह पितृ धनयुक्त, मुख व गला भारी, दानी, कविता जानने वाला, बलवान् बोलने वाला, ओष्ठ दन्त, कान नाक मोटे, सब कार्यों में उद्यमी लिपि चित्रादि शिल्प कर्म जानने वाला, गर्दन टेढ़ी, कुबड़ी कुरूप नख हाथ बाहु मोटे, अति प्रगल्भ धर्मज्ञ बन्धु, वैरी तथा बलात्कार से वशीभूत न होकर केवल प्रीति से वशीभूत होता है।

(१०) नित्य प्रीति पूर्वक अपने स्त्री पुत्रों को प्यार करने में तत्पर दम्भी, मिथ्या, धर्म करने वाला, कमर से नीचे माडा सुहावने नेत्र, कृश कमर, कहा मानने वाला, सर्व जन प्रिय, आलसी, सीत न सहने

वाला, फिरने में तत्पर उदार चेष्टा, बलवान्, काव्य करने वाला विद्वान् लोभी, अगम्य तथा बूढ़ी स्त्री मे गमन करने वाला, निर्लज्ज, निर्दयी जो पुरुष हो वह मकर राशि वाला है।

(११) ऊंट के समान गला, सर्वाङ्ग में, रूखे और रोग शरीर, पैर नितम्ब, जंघा, पीठ घुटना मुख कमर पेट ये सब मोटे, पर स्त्री, पर धन व पाप कर्म में तत्पर वाले पुरुष के जन्म में कुम्भ का चन्द्र है।

(१२) मीन राशि वाले पुरुष जल, रत्न, मोती आदि में व्यापार करने वाला पराए धन का भोगने वाला, स्त्री विषय व स्त्रियों में अनुरक्त सब अवयवों में परिपूर्ण, सुन्दर शरीर ऊंची नाक वाला, सिर, शत्रु जीतने वाला, स्त्री केवशी, सुहावने नेत्र, कांतिमान्, अकस्मात् मिला द्रव्य भोगने वाला शास्त्रज्ञ पंडित होते हैं।

स्त्री जात का अध्याय

जन्म में जो जो फल पुरुषों के कहे हैं वही स्त्रियों के नहीं होते। अतः इन्हें अलग कहते हैं। जो वितातादि लक्षण हैं, वे केवल स्त्रियों के हैं। जो राज योगादि हैं वह उनकी उसके पति को होगा, जो नाभस योगादि हैं वे दोनों को फल करते हैं या सारा फल पुरुषों को करते हैं।

जिस स्त्री के जन्म लग्न में चन्द्रमा समराशि के हो वह मृदु-स्वभाव की होगी और यदि लग्न व चन्द्र शुभ दृष्ट हों तो उत्तम चरित्र वाली तथा आभूषणों से युक्त रहे। यदि लग्न चन्द्र विषम राशि का हो तो पुरुष के आकार स्वभाव वाली हो, यदि पाप दृष्टि युक्त हो तो पापी स्वभाव व गुण रहित हो कोई शुभ और कोई अशुभ देने वाला हो, परन्तु जहां दोनों हों वहां मध्यम फल होगा।

जिसके लग्न या चन्द्रमा मंगल व शुक्र युक्त हों और १।८ में हों और वह मंगल सातवें या लग्न में होतो बिना विवाह पुरुष संग। यदि

शनि सातवें या लग्न में हो तो विना विवाही दासी हो यदि गुरु सातवें या लग्न में हो त पतिव्रता हो, बुध सातव व लग्न में हो तो माया वाली हो, और यदि शुक्र लग्न या सातवें हो तो दुष्ट काम करे।

जिसके जन्म की लग्न या चन्द्र शुक्र युक्त २।७ का हो तो और मंगल सातवें या लग्न में हो तो वह दुष्ट स्वभाव वाली हो, शनि सातवें या लग्नमें हो तो एक पुरुष के जीते दूसरा करे। गुरु सातवें या लग्न में हो तो गीत वाद्य नाच चित्रकारी जाने शुक्र सातवें या लग्न में हो तो गुणशीलादि से विख्यात हो।

जिसकी लग्न या चन्द्रमा शुक्र युक्त ३।६ में हो और मंगल सातवें या लग्न में हो तो वह कपटी हो, शनि सातवें या लग्न में हो तो हिजड़े समान हो। गुरु सातवें या लग्न में हो तो पतिव्रता हो, बुध सातवें या लग्न में हो तो गुणवती हो और यदि शुक्र सातवें या लग्न में हो तो व्यभिचारिणी हो।

जिसके जन्म समय कर्क का लग्न या कर्क का चन्द्रमा शुक्र मंगल सातवें या लग्न में हो तो वह अपने मनका व्यवहार करे किसी की न माने शनि सातवें या लग्न में हो तो पति के मारने वाली, गुरु सातवें या लग्न में हो वह गुणवती बुध सातवें या लग्न में हो तो वह शिल्प कर्म जानने वाली हो, शुक्र सातवें या लग्न में पूरे काम करने वाली हो।

जिसकी जन्म लग्न सिंह व सिंह का चन्द्रमा शुक्र युक्त मंगल सातवें या लग्न में हो तो पुरुष समान कार्य करे शनि सातवें या लग्न में हो तो कुलटा व्यभिचारिणी हो। गुरु सातवें या लग्न में राजा की पत्नी, बुध सातवें या लग्न में पुरुष स्वभाव वाली, शुक्र सातवें या लग्न में अगम्य पुरुष को गमन करने वाली।

यदि जन्म लग्न व चन्द्रमा शुक्र युक्त गुरु क्षेत्री ६-१२ हो और मङ्गल का द्रेष्काण हो तो बहुत गुणवती, शनि सातवें या लग्न में

थोड़े समागमन में मद जल छोड़ने वाली, गुरु में बहुगुण, बुध में विज्ञान युक्त, शुक्र में पतिव्रता न हो वा दासी हो।

यदि लग्न व चन्द्रमा शुक्र युक्त १०।११ का मङ्गल के सातवें वा लग्न में हो तो दासी हो, शनि में नीच पुरुष के साथ समागमन करने वाली गुरु में अपने पति से आसक्त रहने वाली, बुध में दुष्ट स्वभाव वाली तथा शुक्र में बांझ हो।

जिस भांति लग्न व चन्द्रमा के सातवें व लग्न का फल ऊपर कहा है, ऐसे ही चन्द्रमा का जानना और लग्न में जो ग्रह हैं और जिसके सातवें उसका भी फल कहना। लग्न में चन्द्रमा में जो बली हो उससे सातवें का फल ठीक होगा, हीन बलो का फल ठीक न होगा।

जिसके जन्म में शुक्र शनि के व शनि शुक्र के अंश का होगा और दोनों परस्पर देखें तो वह अति कामातुर होती है, चमड़े व किसी और वस्तु का लिङ्ग बना कर दूसरी स्त्री से कामाग्नि शान्ति करावे और वृष या तुला लग्न हो और तत्काल कुम्भ नवांशक हो तो भी उक्त फल जानो।

जिसके लग्न या चन्द्रमा से सप्तम भाव में कोई भी ग्रह न हो तो और शुभ ग्रहों की दृष्टि भी सातवें घर पर न हो तो उसका पति निन्द्य हो। लग्न या चन्द्रमा से सातवें बुध या शनि हो तो उसका पति नपुंसक हो। जिसके लग्न या चन्द्रमा से सातवें चर राशि हो तो उसका पति नित्य परदेश रहे, यदि स्थिर हो तो घर पर रहे। और यदि द्विःस्वभाव राशि हो तो घर तथा परदेश थोड़े थोड़े काल रहे।

जिसके लग्न या चन्द्रमा से रवि सातवें हो तो उसका पति त्याग करे। जिसका लग्न में मङ्गल हो और पाप ग्रह भी देखे तो बाल्य-काल में विधवा हो जिसका शनि पाप दृष्ट हो तो अविवाहित रहे

और शुभ दृष्ट होने पर बड़ी उम्र में विवाह हो, फल लग्न व चन्द्रमा जो बली हो उससे कहना।

जिसके जन्म में सातवें भाव में बहुत पापी ग्रह हों तो केवल विधवा फल है। यदि शुभ पाप दोनों हों तो विवाहित पति छोड़ दूसरा पति करे।

जिसके जन्म में रवि, मङ्गल या शनि सातवें शुभ ग्रह से दृष्ट हों तो उसे पति छोड़े और जिसके शुक्र मङ्गल के और मङ्गल के अंश का हो तो वह स्त्री पति आज्ञा से पराये पुरुष से समागमन करे।

जिसके जन्म में १।८।१०।११ वें का शुक्र व चन्द्रमा लग्न में हो और पाप दृष्ट हो तो वह माता सहित परगामी हो और जिसके सातवें तत्काल स्पष्ट करने से मङ्गल का नवांश हो और सप्तम पर पाप दृष्ट हो तो उसके भग में रोग रहे ऐसे ही शुभ ग्रह का अंशक सप्तम में हो तो सुन्दर भग वाली हो।

जिसके जन्म में सातवें घर में शनि नीच का हो या शनि राशि हो तो उसका पति बूढ़ा हो या मूर्ख हो जिसके नीच का मङ्गल व राशि सप्तम हो तो उसका पति स्त्रियों की अति इच्छा करने वाला, क्रोधी हो। ऐसे ही शुक्र की राशि या नीच होने से पति स्वरूप गुणवान् हो बुध की राशि या नीच होने से पति पण्डित और सब काम जानने वाला हो।

जिसके सातवें स्थान में चन्द्रमा की राशि हो या चन्द्रमा नीच का हो तो उसका पति कामातुर हो। गुरु की राशि या नीच होने से पति गुणवान जितेन्द्रिय हो। रवि की राशि या नीच हो तो अति मृदु कोमल व अति व्यवहार कर्म करने वाला हो जहां पर राशि और की व नीच और का हो वहाँ जो बली हो उसका फल जानना।

जिसके जन्म चन्द्रशुक्र दोनों हों तो वह ईर्षा वाली हो वह सुख में

आसक्त रहे। चन्द्र बुध लग्न में हो तो अनेक कला जानने वाली गुणवती हो। चन्द्र बुध शुक्र तीनों लग्न में हों अनेक प्रकार के धर्म और गुणों से युक्त हो तो इसी भांति बुध गुरु शुक्र के जानो।

जिसके जन्म में पाप ग्रह आठवें हों व जिसके नवांश में हों उसी की दशा अन्तरदशा में विधवा होगी। ग्रहों की अवस्था में विवाह से उपरान्त उतने वर्ष में पति मरेगा। जिसके आठवें पाप ग्रह और दूसरे में शुभ ग्रह हों तो वह पति से पहिले मरे। जिसका चन्द्रमा २।४।८ का हो तो थोड़े उसके पुत्रादि हों।

जिसका शनि मध्यम बली हो और चन्द्रमा शुक्र बुध निर्बल हों और मङ्गल बलवान हो और लग्न विषम राशि हो तो वह स्त्री बहुत पुरुषों से गमन करे। जो गुरु मङ्गल शुक्र बुध बलवान् हों और लग्न सम राशि हो तो सर्वत्र गुणों से विख्यात शास्त्र जानने वाली मुक्ति जानने वाली हो। यदि सातवें भाव में पापग्रह हो और नवम में कोई भी ग्रह न हो तो स्त्री फकीरन हो।

अथ ताजिक प्रकरणम्

वर्षप्रवेशे वारादि साधनमाह:

गताः समाः पादयुताः प्रकृतिघ्न समागणात्
खवेदाप्त घटीयुक्ता जन्मवारादि संयुताः ।
अब्द प्रवेशे वारादि सप्ततष्टेऽत्र निर्दिशेत् ॥

अर्थ—गत वर्ष संख्या में उस संख्या के चतुर्थांश (चौथाई) जोड़ना तब २१ इक्कीस से गुणे हुये गत वर्ष को ४० चालीस से भाग दे कर जो घड़ी पल आदि फल हो, उसे चतुर्थांश युक्त गत वर्ष रूपदिनादिक फल में जोड़ना, तब जन्म वारादि जन्म दिन घड़ी पल जोड़ना, दिन के स्थान मे सिर्फ सात से भाग देना (घड़ी) पल के स्थान में वैसे रखना, जो शेष होगा वह वर्ष प्रवेश वारादि होगा ।

उदाहरण—जैसे शुभ संवत् १९८२ वैशाख शुक्ल तृतीया रविवार में रोहिणी नक्षत्र में सूर्योदय से २५ घड़ी १० पल पर किसी का जन्म हुआ, वहां जन्म कालिक सूर्य ००।१२।५७।४५। राश्यादिक है और जन्म लग्न, ५।५।३४।१२। है । यहां वर्तमान संवत् १९९७ में जन्म संवत् १९०२ को घटाने से १५ बाकी रहे, यही गत वर्ष हुये, इसमें इसी के चतुर्थांश $\frac{15}{4}$ = ३ पूरी लब्धिदिन शेष को साठ में गुणा किया चार से भाग दिया तो लब्धि $\frac{३ \times ६०}{४} \times ३ = १५ = ४५$ घड़ी

जन्माङ्गम् इष्टः २५।१०
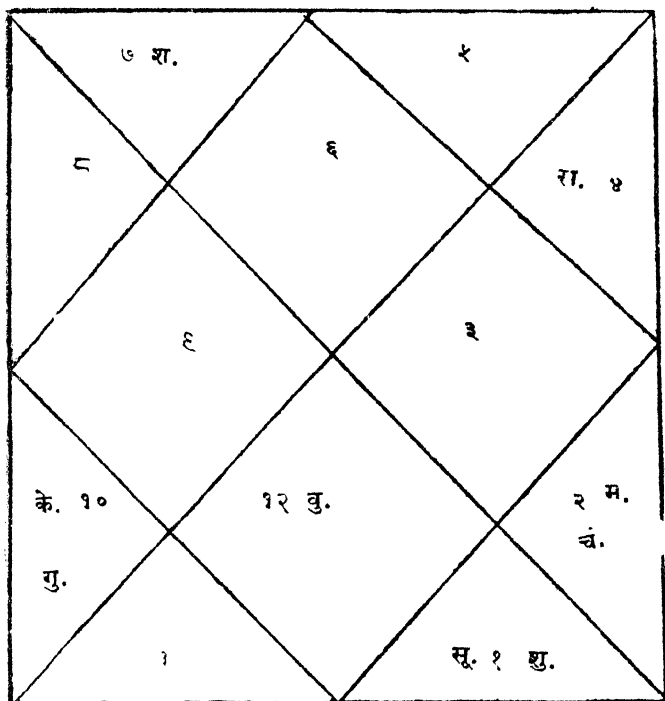
यह घड़ी हुई, अर्थात् पूरा चतुर्थांश ३।४५ इस को गत वर्ष में जोड़ा तो १८।४५। इतने हुये, इसके बाद २१ से गत वर्ष को गुणा किया तो २१ × १५ = ३१५ हुये, इसमें चालीस का भाग दिया तो, प्रथम स्थान की लब्धि ७ यह घड़ी आई, शेष ३५ को साठ से गुणाकर २१०० इसमें चालीस से भाग देने पर लब्धि ५२ यह पलात्मक आई फिर शेष २० बीस को साठ से गुणा कर चालिस का भाग देने

पर लब्धि $\frac{२० \times ६०}{४०}$ = ३०, यह विपल आया तब सब मिलकर ७।५।२।३० इस घट्यादिक को पहले सपाद गतवर्ष १८।४५। में जोड़ा।

१८।४५। ० । ०   १८।५।२।५।२।३०
७।५।२।३० इसमें जन्म वारादि १।२५।१० जोड़ दिया १।२५।१०।

१८।५।२।५।२।३०   २०।१८। २।३०

$\frac{२०।१८।२।३०}{७}$ अब प्रथम दिन स्थान में ही सात से भाग दिया शेष ६ बचे इससे रविवार से छुटे शुक्रवार में १८।२ पल पर अग्रिम वर्ष का प्रवेश हुआ, इसलिये वर्ष वारादि ६।१८।।२।३०। यह हुआ, इसमें ६ यह तो वार हैं ।१८।२।३०। घट्यादिक हैं, यही अग्रिम वर्ष का इष्ट हुआ, यह दिनमान से थोड़ा है, इसपे दिन ही में हुआ, जहां किसी का वर्ष बारादि में घट्यादि दिनमान से अधिक होगा वहां रात्रि में वर्ष का प्रवेश हुआ, यह समझना।

मतान्तरम्—सपादमर्धं सार्द्धं च त्रिस्थानस्थं गताब्दकम्।
वारनाड़ीपलेभ्यश्च जन्मवारादि संयुतम् ॥

अर्थ—गत वर्ष को तीन जगह स्थापित करे। प्रथम को सवाई करे, उनको वार जानिये, दूसरे अंक को आधा करें, वे घड़ी होती है, तीसरे अंक को ड्योढ़ा अङ्क करे वे पल होते हैं, उनमें जन्म वारादि के जोड़ने से वर्ष के इष्ट वारादि होते हैं।

तिथि साधनमाह

शिवघ्नोऽब्दः स्वखादीन्द्र लवाढ्यः खाग्निशेषितः।
जन्मतिथ्यन्वितस्तत्र तिथावब्दप्रवेशनम् ॥

अर्थ-गतवर्ष संख्या को ११ से गुणा करके जो लब्धि होय उसको दो जगह रखे, दूसरे स्थान में १७० का भाग दे, जो लब्धि हो, उनको पहले स्थान में जोड़े। जन्मतिथि संख्या जोड़ तीस में भाग दे जो शेष

हो, वहां शुक्ल प्रतिपदा से शेष तुल्य गिने हुये तिथि में अगले वर्ष का प्रारम्भ होगा।

उदाहरण—जैसे गत वर्ष १५ है इसको ११ से गुणा किया तो १६५। इसको १७० से भाग दिया तो लब्धि ० शून्य शेष से मतलब नहीं। इसलिए शून्य लब्धि १६५ + ० = १६५ जोड़ने से भी इतना ही रहा = १६५। इसमें जन्मतिथि ३ जोड़ दिया तो १६८। इसको ३० से भाग दिया तो १८ बचे। अब यहां शुक्ल पक्ष के पड़िवा से गिनने से १५ पूर्णिमा तक बाद शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि आई—लेकिन वैशाख कृष्ण पञ्चमी शुक्रवार को वर्ष बदलता है। इसलिये यहां दो तिथि का अन्तर पड़ा। यह तिथि साधन ठीक नहीं है। यदि यहां १५ × ११ = १६५ में १७० से भाग देने से पूरी एक लब्धि मान लें तो भी तिथि ४ ही आती है, पञ्चमी नहीं आती। यहां अमावस के बाद पंचमी के अन्दर १ तिथि तृतीया का क्षय हुआ है इसलिए ये पड़िवा से पंचमी चार ही पड़ी इसलिए ये तिथि किसी प्रकार मिल गई। वस्तुतः तिथि नहीं मिलती है।

अथेष्ट समये चन्द्रं हित्वा सूर्यादि ग्रह स्पष्टसाधनम्

गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निघ्नीखषड्हृता।
लब्धमंशादिकं शोध्यं योज्यं स्पष्टो भवेद्ग्रहः॥

इष्टकालोयदाग्रेस्य प्रस्तारं शोधयेत्तदा
अग्रे प्रस्तारकञ्चेत्स्यादिष्टं संशोधयेत्तथा

अर्थ—चालन के दिनादिक गतया एष्य हों उनको गोमूत्रिका से ग्रह की गति से गुणे तथा विगति से भी वारादिक गुणे। उसको साठ से चढ़ाकर दोनों के अङ्क में फिर साठ का भागदे। लब्ध अंशादि मिलेंगे सो जिस पंक्ति में चालन बनाया है उसी पंक्ति के ग्रहों में क्रम से घटाना जोड़ना अर्थात् गत चालन हो तो घटा देना और एष्य हो

तो जोड़ना तो स्पष्ट ग्र० बन जायेगा। वक्री ग्रह हो तो विलोम करना अर्थात जोड़ना हो तो घटा देना और घटाना हो तो जोड़ देना। राहु केतु सदैव वक्री होते हैं

अब चालन स्पष्ट लिखते हैं

प्रस्तार से इष्ट काल आगे हो तो इष्ट काल के वारादिकों में प्रस्तार के वारादिकों को घटा देना। तब धन चालन बनेगा। और प्रस्तार आगे हो और इष्ट काल प्रथम हो तो प्रस्तार के वारादिको मे इष्ट के वारादि घटाने से ऋण चालन बनेगा अथवा वार में वार न घट सके तो सात और जोड़कर घटा देना वा घड़ी में घड़ी न घट सके तो एक अङ्क वार में उतार लेना। इसी प्रकार पल न घट सके तो एक अङ्क घड़ी से उतार लेना। उदाहरण—यहां वैशाख शुक्ल पंचमी शुक्रवार को घ० १८।प० २ इष्ट पर वर्ष प्रवेश हुआ है इसलिए दिनादि इष्ट ६-१८-२ हुआ। और उसी रोज मिश्रमान काल के ग्रह सब बनाये हुए हैं इसलिए दिनादि मिश्रमान ६-४६-५४ यह हुआ।

$$\text{इन दोनों का अन्तर किया} = \frac{\begin{array}{r}६\text{-}४६\text{-}५४\\ ६\text{-}१८\text{-}२\end{array}}{०\text{-}२८\text{-}५२} \text{ तो मिश्रेष्टान्तर दिनादि}$$

०।२८।५२ हुआ। यहाँ एक ही रोज में इष्ट और पंक्ति भी पड़ी है इसलिए दिन स्थान में शून्य हुआ जहां १—२—३ दिनों के अन्तर रहना है वहां दिन स्थान में भी अङ्क आवेगा। जैसे रविवार में किसी का २१।४०।। इष्ट है तो दिनादि इष्ट १।२१।४०।। पंक्ति शुक्र के ही रोज की है वही मिश्रमान भी है तो मिश्रेष्टान्तर बनाने में १ में ६ नहीं घटता। यहां १ में ७ जोड़ दिया तो जिस रविवार से शुक्र छः होते हैं उसी से दूसरा रविवार ८ हुआ। अब अन्तर किया तो दिनादि मिश्रेष्टान्तर हुआ २।७।३८ यदि पंक्ति और इष्ट

के अन्तर ८।२५।४० दिनादि ३।३० के आसन्न हो तो स्वल्पान्तर-
६।१८।। २

से इष्ट से पूर्व २। ७।।३८ तथा अग्रिम पंक्तिस्थ के ग्रहों के अन्तर को आधा करके पंक्तस्थ ग्रहों में वक्री मार्गी और धन चालन ऋण चालन विचार कर जोड़ना या घटाना तो स्वल्पान्तर से ग्रह बिना प्रयास के बन जायेंगे।

अब यहां इष्ट काल १८ २ यह है इससे अधिक मिश्रमान है इस लिए मिश्रेष्टान्तर यहां ऋण हुआ, जहां मिश्रमान से अधिक इष्ट काल होगा, वहां मिश्रेष्टान्तर न होगा, अब यहाँ सूर्य की गति ५८।१४ है, इसको मिश्रेष्टान्तर से गोमूत्रिका विधि प्रकार से गुणन करना होगा जैसे ००।५८।१४ एक पंक्ति में मिश्रेष्टान्तर के हर एक खण्ड से गुणा किया

००	५८।१४
२८	५८।१४
५२	५८।१४

यथा क्रम से योग किया—

００|००
　１६२४|३६२
　　३०१६|७२८
००|१६२४|३४०८ ७२८

और ७२८ इसको साठ से भाग दिया शेष ८ को अपने ही स्थान पर रखा गया, लब्धि १२ इसमें पूर्व खण्ड की जाति की हुई इस लिए ३४०८ इसमें लब्धि १२को मिलाया तो ३४२० हुआ इसमें फिर से साठस भाग दियातो लब्धि ५७ आई शेष शून्य हुआ, यहां लब्धिको १६२४ इस पूर्व खण्ड में जोड़ा १६८१ हुआ; इसमें साठ से भाग दिया तो लब्धि २८ शेष १ बचा, यथाशेष को यथा स्थान में रखा, लब्धि को पीछे के खण्ड शून्य तुल्य स्थान में मिलाया इस प्रकार

चालन फल कलादिक २८।१।०० यह हुआ। यहां मिश्रेष्टान्तर ऋण होने के कारण चालन फल भी ऋण ही हुआ इसको पंक्ति के सूर्य में घटाया तो इष्ट कालिक सूर्य हुआ।

००।१३।२४।५१
००।२८।१
००।१२।५७।५०

इसके बाद चन्द्रमा का साधन क्रम—लेकिन चन्द्रमा की गति बहुत अधिक होती है इसलिए उनका साधन भिन्न है—बाकी सब ग्रहों का साधन इसी ही भांति है।

खषड् ६०घ्नं भयातं भभोगोद्धृतं,
तत्खतर्कघ्नधिष्ण्येयु युक्तं द्वि निघ्नं।
नवाप्तं शशी भाग पूर्वस्तु भुक्तिः
खखाभ्राष्ट वेदा ४८००० भभोगेनभक्ताः॥

अर्थ—भयात को साठ से गुणा कर भभोग से भाग देने पर जो लब्धि हो, अर्थात् भभोग, भयात में भी दण्ड और पल ये दो अवयव रहते हैं।

ऐसे भयात के घटी को साठ से गुणा कर पल जोड़ने से पलात्मक एक जातीय भयात हुआ, अब १ जातीय भयात को साठ से गुणा करे, एक जातीय भभोग से भाग दे इस लब्धि को पूर्व लब्धि के आगे रखे, फिर शेष को साठ से ६० गुणा कर एक जातीय भभोग से भाग दे, इस लब्धि को दूसरे लब्धि के आगे रखे इस प्रकार तीन जाति की तीन लब्धियां हुई, इसको साठ से गुणा किये हुए संख्या में जोड़े अर्थात् उन तीन लब्धियों में जो पहिले स्थान वाली है। उसको जोड़े और दो को उसके आगे रखे अब भी तीनखण्ड जो उत्पन्न अङ्क हुए उन सबको २ दो सेगुणा करे, नौ ९ से भाग दे। थम

लब्धि अंश हुआ फिर शेष को साठ से गुणा कर फिर नौ से भाग दे, यह दूसरी लब्धि हुई, यहां भी जो शेष हो उसको साठ से गुणा करके नौ से भाग दे, यह तीसरी लब्धि हुई अब यहां पहली जो अंशात्मक लब्धि है, उसको ३० तीस से भाग देने पर जो लब्धि हो वह प्रथम लब्धि के भी प्रथम स्थान अर्थात् राशि स्थान में जायगी यों राश्यादिक चन्द्रमा बन जायगा।

उदाहरण—यहां भयात २५॥३९॥ भभोगः ६०।२६ है घटी को साठ से गुणा कर पल जोड़ कर एक जातीय बनाने से भभोग ३६२६ भयात १५३९ हुआ अब भयात को साठ से गुणा किया तो १५३९ × ६० = ९२३४० भभोग ३६२६ से भाग दिया तो प्रथम लब्धि २५ आयी शेष १६९० को फिर साठ से गुणा किया १०१४०० हुआ भभोग से भाग दिया तो दूसरी लब्धि २७ आई शेष बचा २४९८ इसको साठ से गुणा किया तो २०९८८० हुआ, फिर भभोग से भाग देने पर लब्धि ५८ आई, अब क्रम से सब एकत्र लब्धि २५।२७।५८ अब यहां गत नक्षत्र ज्येष्ठा इसको अश्विनी से गिना १८ हुआ, इसको साठ से गुणा किया तो १०८० इतने हुए इस में उस लब्धि को जोड़ना यहां उसके जो प्रथम स्थान में २५ हैं उसको १०८० इसमें जोड़ना चाहिये।

जैसे—१०८०।००।००
२५।२७।५८

योगफल—११०५।२७।५८ अब इस को दो से गुणा किया तो २२१० ५५ ५६, इसको ९ नौ से भाग दिया तो पूर्ववत् करने से लब्धि २४५।३९।३३ अंशादिक आया। अंश २४५ स्थान को तीस ३० से भाग देने पर राश्यादिक चन्द्रमा बना। ८।५।३९।३३ अब इसकी गति बनानी है, ४८००० इसको भभोग घटी से भाग देना है यहां हर भाज्य को साठ से गुणाने पर भाज्य—४८००० × ६० =

२८८०००० और भाजक में भभोग का एक जातीय पलात्मक हो गया, भाजक ३६२६, अब भाज्य—२८८०००० को भाजक से भाग देने पर प्रथम लब्धि ७९४ शेष बचा, ९५६ इसको साठ से गुणा किया ५७३६० भभोग ३६२६ से भाग दिया तो लब्धि २ आई तथा 'अकर्णात् मन्द कर्णोऽपि श्रेयान्' इस न्याय से ठीक है—

अब यहां प्रसंग से भयात भभोग बनाने का नियम बताता हूं जिसमें प्रायः बहुत लोग भूल कर बैठते हैं, असल में भयात उसी को कहते हैं कि जिस किसी नक्षत्र में जन्म या वर्षप्रवेश या इष्ट हो, उसके प्रारम्भ काल से इष्ट काल पर्यन्त जो खण्ड काल हो वही भयात है और उस नक्षत्र के सम्पूर्ण मान को भभोग कहते हैं, वहां यदि इष्ट काल से वर्तमान नक्षत्र का मान अधिक हो तो भयात भभोग का साधन निम्नलिखित प्राचीन श्लोक के अनुसार करना—जैसे—

गतर्क्षनाडीखरसेषुशुद्धा सूर्योदयादिष्टघटीयुक्ता ।
भयात संज्ञा भवतीह तस्य निजर्क्षनाडी सहिता भभोगः ॥

अर्थ—जिस रोज भयात बनाना है उसके गत दिन के जो नक्षत्र के घड़ी पल हों उसको साठ में घटावे, क्योंकि गत दिन के उदय से वर्तमान दिन के उदय तक साठ घटी हैं; उसमें गत दिन के नक्षत्र को घटाने पर जो शेष रहा वह गत दिन में वर्तमान नक्षत्र ही का गत खण्ड हुआ, उसको वर्तमान दिन के सूर्योदय से जो इष्ट घटी हो उसमें जोड़ दिया तो वर्तमान नक्षत्र का प्रारम्भ से इष्टकाल पर्यन्त खण्ड हुआ इसको भयात कहते हैं और गत दिन के जो गत खण्ड उसमें वर्तमान दिन के नक्षत्र का जो घटी पल मान हो उसको जोड़ने पर भभोग होगा। अर्थात गत नक्षत्रान्त से वर्तमान नक्षत्रांत पर्यन्त बन गया पूरा नक्षत्र का मान हो गया इसलिए उसका नाम भभोग हुआ यदि वर्तमान दिन में इष्टकाल से नक्षत्र का मान न्यून

हो तो पूर्वोक्त नियम से भयात भभोग सिद्ध होगा, इसलिए दूसरा श्लोक वहां के लिए है—

यदाऽभीष्टमानं गतर्क्षाधिकं स्यात्तदाऽभीष्ट मानाद्विशोध्यंभमानम् ।
भयात तदेवं गतर्क्षा न षष्टियुताऽभीष्ट नक्षत्रमानैभभोगः ॥

अर्थ—यदि इष्टमान नक्षत्र मान से अधिक हो तो इष्टकाल ही में नक्षत्र मान को घटावे शेष भयात होगा और गत नक्षत्र को साठ में घटाने पर जो बाकी रहे उसमें इष्ट नक्षत्र के (अगले) जो मान वह जोड़े तो भभोग होगा ।

उदाहरण—जैसे मान लीजिये कि उसी वर्ष प्रवेश ही के दिन इष्टकाल नक्षत्र मान से अधिक है तो इष्टकाल ही में नक्षत्रमान को घटाने पर भयात ३।५ हुआ, क्योंकि इष्टकाल में मूल नक्षत्र नहीं रहा पूर्वाषाढ़ा हो गया अब पूर्वाषाढ़ा का कितना गत हुआ यह जानने के लिए मूल नक्षत्रान्त से इष्टकाल पर्यन्त खण्ड बनाया, यही उस वर्तमान पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का गत हुआ यही भयात है और मूल के ५२।४६ को साठ में घटाया तो मूल के आखिरी से अग्रिम सूर्योदय पर्यन्त पूर्वाषाढ़ का मान हुआ ७।११ इसमें अगले दिन के पूर्वाषाढ़ का जो ५४।२३ मान है इसको जोड़ा तो ६१।३४ यही पूर्वाषाढ़ का सम्पूर्ण मान भभोग हुआ ।

पूर्वं नतं स्याद्दिनरात्रि खण्डं दिवानिशारिष्टघटी विहीनम् ।
दिवानिशोरिष्टघटीषु शुद्धं द्युरात्रि खण्डंत्वपरं नतं स्यात् ॥

अर्थ—दिनार्ध में यदि दिनगत घटी (इष्ट काल) घट जाय तो शेष दिन में पूर्व नत होता है, रात्र्यर्ध में यदि रात्रिगत घटी घट जाय, तो शेषमान रात्रि में पूर्व नत होता है, और यदि दिन गत घटी ही में दिनार्ध घट जाय तो दिन में पर नत तथा रात्रिगत घटी में रात्र्यर्ध ही घट जाय तो रात्रि में पर नत होता है ।

लग्नानयनमाह

तत्काले सायनार्कस्थ भुक्तभोग्यांशसङ्गुणात् ।
स्वोदयात्खाग्नि ३०लब्धं यद्भुक्तं भोग्यं रवेस्त्यजेत् ।
इष्टनाडी पलेभ्यश्च गतगम्यान्निजोदयात् ॥
शेषं खत्र्या ३० हतं भक्तम शुद्धेन लवादिकम् ।
अशुद्धं शुद्धभे हीनं युक्तं तुव्ययनांशकम् ॥

भाषा--जिस समय का लग्न बनाना हो, उस समय के अयनांश जोड़े हुए, रविके भुक्तांश और भोग्यांश से गुणा किये हुये सायन सूर्य राशि के जो स्वोदयमान उसमें तीस से भाग दे पर, क्रम से भुक्त भोग्य होंगे अर्थात् सूर्य में अयनांश जोड़ने पर जिस राशि में हो उस राशि के अपने देश का जो उदयमान उसको सायन सूर्य के भुक्तांश से गुणा करके तीस से भाग दे तो सायन सूर्य के भुक्त पल होंगे इसी तरह भुक्तांश के स्थान में भोग्यांश रखने से भोग्य भी होगा, अबयदि भोग्य प्रकार से लग्नानयन करना है तो इष्ट दण्ड के पल बना कर उसमें भोग्यपल घटा कर अग्रिम राशि के उदयमान घटाना चाहिये ।

एवं आगे घटते २ जो नही घटे वहीं अशुद्धोदय होगा, वही राशि अशुद्ध राशि भी होगा यदि भुक्त प्रकार से लग्नानयन करना हो, तो इष्ट दण्ड के पल में रवि भुक्तपल घटाकर गत राशि का उदयमान घटाना एवं उसके गत को इसी प्रकार गत उपगत राशियों के उदय-मान घटाते २ शेष में जब जिस पूरे राशि का उदयमान नहीं घटेगा वही अशुद्ध राशि उसी का उदय अशुद्धोदय होगा, भुक्त प्रकार तथा भोग्य प्रकार दोनों से एक ही अशुद्ध राशि होगी अशुद्धराशि ही सायनलग्न होता है—

अब आखिर का जो शेष पल मान रहे उसको तीस से गुणा कर अशुद्धोदय से भाग दे तो लब्धि लग्न के भुक्तांश वा भोग्यांश होंगे,

यदि भुक्तांश होतो अशुद्धराशि संख्या में घटावे, यदि लग्न के भोग्यांश हो तो, उसको शुद्ध राशि सख्या में जोड़ना यह सायन लग्न हुआ इसमें अयनांश घटावे तव निरयण लग्न होगा—

उदाहरण—

सूर्य स्पष्ट = ००।१२।५७।५० इसमें ग्रहलाघव मत से अयनांश २२।३८।०० जोड़ने से १।६।३५।५० इतना हुआ, अर्थात् एक राशि पूरा होकर दूसरे राशि का ६ अंश भुक्त होकर सातवें अंश का ३५ कलायें भुक्त होकर ३६ कला की ५० विकला भुक्त हुई अर्थात् वृषराशि का = ६।३५।० इतने अंशादि भुक्त हुआ। उसको ३० तीस अंश में घटाया तो २३।२४।१०॥ इतने वृष का भोग्य अंश हुये क्योंकि हर एक राशि में ३० अंश होते हैं इसलिये भुक्तांश को तीस अंश में घटाने से भोग्यांश शेष रहते हैं।

यहां काशी के उदयमान का प्रमाण

चन्द्राक्षिपक्षाः २२१ गुणवाणपक्षः वेदाभ्ररामाः३०३ नयनाब्धिरामा ३४२ वाणाब्धि रामाः ३४५ शररामरामा ३३५ क्रमोत्क्रमान्मेष तुलादिमानम्।

इसके अनुसार.

काशी का उदयमान

मेष	२२१	मीन
वृष	२५३	कुंभ
मिथुन	३०४	मकर
कर्क	३४२	धन
सिंह	३४५	वृश्चिक
कन्या	३३५	तुला

अब यहां इष्ट काल १८।२ है इतने पर वर्ष प्रवेश हुआ है, यह दिनमान से न्यून है इस लिए भोग्य प्रकार ही लाघव होगा, इस लिए यहां सायन सूर्य के भोग्यांशादि। (२३।२४।१०) से वृष के उदयमान को गुणा करना चाहिए, भोग्यांशादि तीन खण्ड हैं अतः उदयमान ही को तीन ३ स्थान में प्रत्येक

खण्ड से गुणा करने पर हुए । २५३।२५३।२५३।
२३। २४।॥१०

७५६ १०१२।२५३०
५०६। ५०६।

अर्थात् तीनों जगह के गुणनफल ५८१६।६०७२।२५३०

यहां तीसरे खण्ड को साठ से भाग देकर लब्धि को दूसरे में जोड़ना, शेष को अपने स्थान ही पर रखना, फिर उस लब्धियुक्त द्वितीय खण्ड को साठ से भाग देकर लब्धि को प्रथम स्थान में जोड़ना, शेष को अपने ही स्थान पर रखना, जैसे = ५८१६।६०७२।२५३०
१०१। ४२। ६०
५९२०।६११४। १० श.
६०
५४ शेष

अर्थात् । अब इसको तीस से भाग देना चाहिए पहले स्थान ५९२० में ३० से भाग दिया तो लब्धि १९७ आई शेष १० इसको साठ से गुणा किया ६०० द्वितीय खण्ड के शेष को जोड़ा तो ६५४ इसमें फिर तीस से भाग दिया तो लब्धि २१ आई । चा २४ इसको साठ से गुणा किया = १४४० तृतीय स्थान के तो = १४५० इतने हुए, इसमें फिर तीस से भाग देने पर लब्धि ४८ हुई । शेष १० बचा । यहां शेष का प्रयोजन नहीं केवल क्रम से तीन लब्धियां १९७।२१।४८ यह भोग्य पल विपल प्रतिविपल हैं अब इसको इष्ट घड़ी व पल में घटाना है यहां इष्ट घटी १८।२। घड़ी को साठ से गुना कर १०८० पल, पल जोड़कर पलात्मक इष्ट काल १०८२ हुआ । इसमें भोग्यपल विपल प्रतिविपल को घटाया तो शेष बचे १०८२ = ००।००॥ अब इसमें
१९७ = २१।४८

सायन सूर्य के अग्रिम राशियों के ८८४ = ३८।१२

उदयमान घटाना चाहिए सो यहां मिथुन का ३०४ कर्क का ३४२ घटाया तो शेष २३८।३८।१२ यह रहा इस से आगे सिंह का उदय नहीं घटता, इसलिये सिंह ही अशुद्ध हुआ। यहां अशुद्ध का अर्थ गलत नहीं समझना, अर्थात नहीं जो शुद्ध हो, (अर्थात) नहीं जो घटे वह अशुद्ध हुआ, अब सिंह के उदय के सामने अ. लिखिए। अब शेष २३८।३८।१२ को तीस से गुणा किया तो इतने हुए ७१४०।११४०।३६० यहां साठ से ज्यादा पल विपल नहीं होते इसलिए, तीसरे खण्ड को साठ से भाग देने पर $\frac{३६०}{६०}$ = ६ लब्धि हुई

६ को दूसरे खण्ड में जोड़ा तो दूसरा खंड $\frac{११४६}{६०}$, इसमें ६० साठ

का भाग दिया तो लब्धि १६ इतने को प्रथम खण्ड में जोड़ा ६ शेष को यथा स्थान रखा, तो क्रम से ७१५६।६।०० इतने हुए। अब इसको अशुद्धोदय से ३४५ भाग दिया तो $\frac{७१५६}{३४५}$ = २०

बीस लब्धि आई, शेष बचा, २५६. इसको साठ से गुणा किया और द्वितीय शेष ६ को जोड़ा तब १५५४६ इतने हुए। इसमें उसी अशुद्धोदय ३४५ का भाग दिया तो $\frac{१५५४६}{३४५}$ = ४५ लब्धि शेष २१ इसको

फिर साठ से गुणा किया, १२६० आगे तीसरे स्थान में शेष नहीं अतः $\frac{१२६०}{३४५}$ = ३ लब्धि अब क्रम से सब लब्धियां २०।४५।३० हुई ये

अंशादिक हैं इसको शुद्ध राशि संख्या में ४ जोड़ने पर ४।२०।४५।३ इतने हुये इसमें अयनांश २३।३८ घटाया तो निरयण लग्न मान राश्यादि हुआ।

४।२०।४२।३
२३।३८।००

स्पष्ट लग्न ३।२७।७।३

पलभा चर खण्डकानि चैकवृत्तेनाह

मेषादिगे सायनभाग सूर्ये दिनार्ध (जा) भा पलभाभवेत्सा।
त्रिष्ठा हतास्युर्दशभिभुजङ्गैर्दिग्भिश्चरार्धा निगुणोद्धृताऽन्त्या॥

अर्थ—सायन सूर्य मेष राशि में हो तब १२ अंगुल के शंकु की छाया दिनार्ध में तथा बारह बजे नापे जो हो उसका नाम पलभा होता है, उस छायाके मान को तीन स्थान पर रखे। १ एक जगह १० दश से गुणा करे दूसरी जगह ८ आठ से गुणा करे तीसरी जगह १० दश से गुणा करके ३ तीन का भाग दे इस तीन चरखण्डे बन जायेंगे उन तीनों चरखण्डों को लंकोदयमान में घटाने जोड़ने से स्वदेशीयमान होते हैं।

अथ अयनांश बतलाते हैं

"वेदाब्ध्यब्ध्यूनः खरसहृतः शकोऽयनांशः"

"शाके" शका में ४४४ घटाने से ६० का भाग देने पर अयनांश होता है।

लंकोदयानाह

लंकोदया विघटिका गजभानि गोङ्क-।
दस्रास्त्रिपक्षदहनाः क्रमगोत्क्रमस्थाः॥
हीनान्वितश्चरदलैः क्रमगोत्क्रमस्थैः।
मेषादितोघटतु उत्क्रमतस्तिमेस्युः॥

अर्थ—लंकोदय मान पलात्मक कहे गये हैं। गजभानि २७८ गोङ्कदस्र २९९ त्रिपक्षदहना ३२३ तीन लंकोदयमान हैं अपने स्वदेश

के मान करने के लिए पहली बताई हुई पलभा से तीन चरखण्डा बनावे, उन चरखण्डों को क्रम से पहले घटावे फिर तीनों को जोड़े इस प्रकार ६ राशियों के उदयमान हो जायेंगे तुला से जोड़े मकर से घटाने से पुनः विलोम करने से १२ बारह राशियोंके उदयमान होजायेंगे इस रीति से अपने देश के चार खण्डों द्वारा उदयमान करके लग्न बनाना चाहिये।

दशम लग्न साधनमाह

एवं लंकोदयैर्भुक्तं भोग्यं शोध्यं पलीकृतात् ।
पूर्वपश्चान्नताल्लग्नवत्तद्दशमं भवेत् ॥

अर्थ—जैसे प्रथम लग्न साधन किया है वैसे ही दशम लग्न भी लेकिन स्वोदय की जगह निरक्षोदय (लंकोदय) मान लेने चाहिये इष्ट घटी की जगह नत घटी लेनी चाहिए यदि पूर्व नत हो तो भुक्त प्रकार से पर नत हो तो भोग्य प्रकार से क्रिया करनी चाहिए और सब लग्न वत् समझना।

उदाहरण

६९९७।२।५०
३०

उदाहरण—सूर्य-००।१२।२७।५० अयनांश २३।२८ जोड़ने पर सायनार्क १।६।३५।५० यहां भुक्तांशः = ६।३५।५० इस को ३० तीस में घटाने में भोग्यांश २३।२४।१० हुआ यहां लंकोदय का प्रयोजन होता है।

यहां इष्टकाल नत घटी ही होती है सो परनत १।५७ इतना है, अब सायनार्क के राशि वृष है इसलिए वृषके लंकोदयमान २९९ को अलग अलग भोग्यांश २३।२४।१० खण्डों से गुणा किया तो ६८७७।१७६।२९९० इतने हुए अब अन्त से साठ से तष्टित किया हुआ ६९९७।२५० हुए इसको तीस से भाग देने पर

पलादिक लब्धि २२।१४।५१ इसको नत घटी के पलात्मक ११७ में घटाया तो नहीं घटता इसलिए यहां अब 'तत्कालेसायनार्कस्य' इस प्रकार से क्रिया नहीं बनती इस लिए "भुक्त' भोग्यं स्वेष्ट-कालान्न शुद्धयेत विशन्निघ्नात्स्वोदयाप्त' नवाद्य', हीनं युक्त' भास्करेतत्तनुः स्याद्राश्रौलग्नं भार्धयुक्ताद्रवेन्तु,, इस श्लोक के अनु-सार क्रिया करनी पड़ेगी यहां इष्टकाल ११७ को ३० से गुणा किया तो ३५१० इसमें वृष के लंकोदयमान से भाग दिया तो लब्धि १११४८।२१ यह अंशादिक हुई इसको यदि सायनसूर्य में जोड़ा तो ११६।१११६ इतने इसमें अयनांश २३।३८ को घटाया तो ०।१।४।३२।११ हुआ यहां सायनसूर्य में जोड़ने से पीछे अयनांश घटाना गौरव क्रिया होती है, इस लिए निरयण ही सूर्य ००।१२। ४०।५० में उक्त अंशादिक लब्धि को जोड़ दिया तो सीधे ही दशम-लग्न आ गया ००।२४।४२।११—दशम लग्न पर विशेष-यदि दिनार्ध के तुल्य इष्टकाल हो तो सूर्य समान ही दशमलग्न समझना यदि दिनमान तुल्य हो तो सूर्य में छै राशि जोड़ने से दशम लग्न सूर्य के तुल्य चतुर्थ लग्न होता है—

ससन्धिशेषभावानयनमाह

सषड्भं लग्नखेआया तुर्यौलग्नोनतुर्यतः,
षष्ठांऽशयुक्ततनुः सन्धिरग्नेषष्ठांशयोजनात् ।

त्रयः ससन्धयोभावाः षष्ठांशोनैक युक्तुखात्,
अग्रे त्रयःषडेवं ते भार्धयुक्ताः परेऽपिषट्,
खेटेभावसमे पूर्णं फलं सन्धि समेतुखम् ॥ इति ॥

भाषा—लग्न में छै राशि जोड़ने से सप्तमभाव होता है। दशम लग्न में ६ राशि जोड़ने से चतुर्थ भाव होता है अब चतुर्थ भाव में लग्न को घटा कर शेष का षष्ठांश बनाना उसको लग्न में जोड़ने से लग्न की सन्धि हुई, उसमें फिर षष्ठांश जोड़ने से धन भाव,

धन भाव में वही षष्ठांश जोड़ने से धन की सन्धि बनी फिर उसमें षष्ठांश जोड़ने से सहज भाव बना फिर उसमें षष्ठांश जोड़ने से सहज सन्धि होगी फिर षष्ठांश जोड़ने से चतुर्थ भाव हुआ—तनुधन सहज सुहृद्भाव बन गये।

अब उसी षष्ठांश को एक राशि में घटा कर शेष को चतुर्थ भाव में जोड़ा तो चतुर्थभाव की सन्धि हुई सन्धि में जोड़ने से पंचम भाव बना इसी तरह सप्तम भाव तक बन जायेंगे शेष ६ भावों में ६ राशि जोड़ने पर बारह भाव बन जायेंगे।

उदाहरण—

प्रथम लग्न—३।२७।२६।२ इस में छै राशि जोड़ा तो सप्तम भाव ९।२७।२९।२ हुआ और दशमलग्न ००।१४।४२।११ में छै राशि जोड़ा तो चतुर्थ भाव ६।१४।४२।११ हुआ अब ३।२७।२९।२ इस प्रथम लग्न को चतुर्थ भाव ६।१४।४२।११ में घटाया तो शेष बचा—
२।२७।१३।६ इसका षष्ठांश　　००।१४।३२।११

लग्न—३।२७।२९।२

४।१२।१।१३

जोड़ने से लग्न सन्धि = ४।१२।१।१३

फिर षष्ठांश जोड़ने से धन भाव—४।२६।३३।२७

पुनः षष्ठांश जोड़ने पर धन संधि—५।११।५।३८

पुनः जोड़ने पर सहज भाव = ५।२५।३७।४९

पुनः जोड़ने परसहज संधि—६।१०।१०।००

पुन षष्ठांश युक्त के बाद सुखभाव...६।२४।४२।११

यहां यह जोड़ा हुआ चतुर्थ भाव गणितागत चतुर्थ भाव से मिल गया ठीक है। अब षष्ठांश ००।१४।३२।११ को ३० अंश में घटाया शेष ००।१५।२७।४९ इस को जोड़ा—।

००।१५।२७।४६

६।२४।४२।११

चतुर्थभाव में जोड़ा तो सुख भाव की संधि ...७।१०।१०।००

फिर उस शेष को जोड़ने पर सुतभाव = ७ २५ ३७ ४८

फिर उस शेष को जोड़ने से सुतसंधि—८।१। ५।२८

फिर उस शेष को जोड़ने से रिपुभाव—८।२६।३३।२७

फिर उस शेष को जोड़ने से रिपुभाव सन्धि—९।१२।०१।१६

पुनः रिपुभाव जोड़ने से सप्तम भाव—९।२७।२६।५ बना

इन भावों में छै छै राशि जोड़ने पर १२ द्वादशभाव बन जायेंगे।

भावस्थग्रहफलम्

खेटे सन्धि द्वयान्तःस्थेफलं तद्भावजं भवेत्।

हीनेऽधिके द्विसन्धिभ्यांभावे पूर्वापर फलम्॥

भाषा—आरम्भ सन्धि और विरामसन्धि के बीच में ग्रह के रहने से उस भाव का फल देता है यदि आरम्भ सन्धि से ग्रह कम हो तो पूर्वभाव का फल या विराम सन्धि से (अधिक) ग्रह हो तो अगले भाव में रहने का फल देता है।

ग्रहाणांविंशोपकात्मक भावफलमाहः

ग्रह संध्यन्तरं कार्यं विंशत्या २० गुणितंभजेत्।

भावसन्ध्यन्तरेणाप्तं फलंविंशोपकः स्मृतः॥

अर्थ—ग्रह और आसन्नवर्ती सन्धि का अन्तर करके बीस से गुणा करे। भावसन्धि के अन्तर से भाग दे, लब्धि विंशोपक फल होगा।

अथ राशीश द्रेष्काणेशानाह

भौमोशनः सौम्यशशीन विदितसितारेज्यार्किमन्दाङ्गिरसोग्रहेश्वराः ।
आद्या कुजाद्या रवितोऽपिमध्यमाः सितात्तृतीयाक्रियतो दृकाणपाः ॥

अर्थ—मेष से क्रम से बारह राशियों के मंगल, शुक्र, बुध, चन्द्रमा, सूर्य बुध, शुक्र मंगल बृहस्पति शनि शनि बृहस्पति ये स्वामी होते हैं। जैसे मेष का मंगल वृष का शुक्र मिथुन का बुध कर्क का चन्द्रमा सिंह का सूर्य कन्या का बुध तुला का शुक्र वृश्चिक का मंगल धन का गुरु, मकर कुम्भ का शनि, मीन का बृहस्पति मालिक हैं—द्रेष्काण के पति बताते हैं हरेक राशि में तीस अंश होते हैं, उसके तीन विभाग करने से दश, दश, दश, के द्रेष्काण कहलाते हैं, वहां मेष से बारह राशियों के प्रथम द्रेष्काणों के स्वामी मंगल से लेकर मंगल, बुध, गुरु, शुक्र इत्यादि क्रम से होते हैं—द्वितीय द्रेष्काणों के स्वामी सूर्य से लेकर सूर्य, चन्द्र, कुज इत्यादि तृतीय द्रेष्काणों के स्वामी शुक्र से लेकर शुक्र, शनि, रवि, चन्द्र, मङ्गल इत्यादि इस क्रम से होते हैं—

राशि स्वामी चक्रम्

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
राशीशाः	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.

अथ द्रेष्काण चक्रम्

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
प्र.द्रे.स्वा. १०	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
द्वि.द्रे.स्वा २०	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.
तृ.द्रे स्वा. ३०	शु.	[illegible]	सू.	चं.	मं.	बु.	गु,	शु.	श.	सू.	चं.	मं.

चक्र से स्पष्ट समझना

ग्रहणांमुच्चनीचान्याह

सूर्यादितुङ्ग ं मजोक्षनक्र कन्या कुलीरान्त्व तुला क्वै: ष्सु: ।
दिग्भिगु णैर, ग्रमै: शर कैभं तैर्भसंख्यै:नख सम्मितैश्च ॥

अर्थ—मेष के १० दस अंश में सूर्य का वृष के ३ अंशों में
चन्द्रमा का मकर के २८ अंश में मंगल का,कन्या के १५ अंश में बुध
का, कर्क के ५ अंश में गुरुका, मीन के २७ अंश में शुक्र का, तुला
के २० अंशमें शनि का, परमोच्च, उच्च होता है ।

अथोच्च नीच चक्रम्

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
उच्च राशय:	००	१	९	५	३	११	६
अंशा:	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
नीच राशय:	६	७	३	११	९	५	००
अंशा:	१०	३	२८	१५	५	२७	२०

ग्रहाणांनीचस्थान मुच्चबलानयनं नवांश स्वामिनश्चाह

तत्सप्तमं नीचमनेनहीनो ग्रहोऽधिकश्चेद्रसभाद्विशोध्यः।
चक्रात्तदंशाङ्कनवो बलंस्यात् क्रियेण तौलीन्दु भतोनवांशाः ॥

अर्थ—अपने अपने उच्च से सातवें राश्यंश में ग्रहों के नीच होते हैं, जैसे सूर्यका उच्च मेष के दश अंश मे हैं, उसमे छः राशि जोड़ने से तुला के दश अंश में सूर्य का नीच होता है, इसे सब ग्रहों का समझना—जिस ग्रह का उच्चबल बनाना हो, उसके नीच को उस ग्रहके राश्यंश में घटाना, शेष यदि छै राशि से अधिक हो तो शेष को बारह राशि में घटाना इसका अंश बनाना अर्थात् राशि स्थान को तीस से गुना कर आगे के अंश में जोड़ना तो अंशादि हो जायगा अब इसको नौ का भाग देने पर लब्धि उस ग्रह का उच्चबल होता है—

"क्रियेणवौलीन्दुभतो नवांशाः"

अर्थ—मेषादि राशियों के क्रमसे, मेष मकर, तुला कर्क, इन राशियों के तीन आवृत्तिसे नवांशा होते हैं, जसे मेष का नवांशा मेष ही से वृष का नवांशा मकर से, मिथुन का नवांशा तुलासे, कर्क का कर्क ही से, फिर सिंह का मेष से, कन्या का मकर से, तुला का तुलासे वृश्चिक का नवांशा कर्क से, धन का मेषसे, मकर का नवांशा मकरसे, कुम्भ का तुला से, मीन का कर्क से होता है—

नवांशबोधकं चक्रम्

खण्डानि	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशयः
३।२०	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	प्र.नवांश
६।४०	वृ.	कु.	वृ.	सि.	वृ.	कु.	वृ.	सि.	वृ.	कु.	वृ.	सि.	द्वि.नवांश
१०।००	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	तृ.नवांश
१३।२०	कर्क	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	च.नवांश
१६।४०	सिं	वृ.	कु.	वृ.	सिं	वृ.	कु.	वृ.	सिं	वृ.	कु.	वृ.	प.नवांश
२०।००	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	ष.नवांश

२३।२०	तु.	क.	मे.	म.	तु,	क.	मे.	म.	तु,	क.	मे.	म.	स.नवांश
२६।४०	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं	वृ.	कु.	अ.नवांश
३०।००	ध.	क.	म.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	[illegible]	मीन	न.नवांश

षड्भिः श्लोकैर्मेषादि द्वादशराशिषु हद्देशानाह

मेषेऽङ्गतर्काष्ट शरेषु भागा, जीवास्फुजिज्ज्ञार शनैश्चराणाम् ।
युग्मे षडंगेषु नगाङ्क भागाः सौम्यास्फुजिज्जीव कुजार्कि हद्दाः ॥
वृषेष्ट नन्दांग शराऽनलांशाः शुक्रज्ञजीवार्कि कुजेशहद्दाः ।
कर्केऽद्रितर्काङ्क नागाब्धि भागा, कुजास्फुजिज्ज्ञेज्य शनैश्चराणाम् ॥
सिंहेऽङ्ग भूताद्रि रसाङ्गभागा, देवेज्य शुक्रार्कि बुधारहद्दाः ।
स्त्रियां नगांशाब्धि नगाग्निभागा सौम्योशनोजीव कुजार्किनाथाः ॥
तुले रसाष्टाद्रि नगाग्नि भागाः कोणज्ञ जीवास्फुजिदारनाथाः ।
कीटे नगाब्ध्यष्ट शरांग भागा भौमास्फुजिज्ज्ञेज्य शनैश्चराणाम् ॥
चापे रवीश्वब्धि पंचवेदा जीवास्फुजिज्ज्ञार शनैश्चराणाम् ।
मृगे नगाद्र्यष्ट युगाब्धुतीनां सौम्येज्यशुक्रार्कि कुजेशहद्दाः ॥
कुम्भे नगाङ्काद्रि शरेषु भागाः शुक्रज्ञ जीवार शनैश्चराणाम्
मीनेऽर्क वेदानल नन्द पक्षाः सितेज्य सौम्यार शनैश्चराणाम्

अर्थ—इस हद्देश वर्णक श्लोकों के अर्थ चक्र देखने से ही जल्दी समझ पड़ता है, इसलिये चक्र ही समझाने के लिये कुछ लिखते हैं, जैसे मेष में १ से ६ अंश तक बृहस्पति हद्देश है ७–१२ तक शुक्र १३–२० तक बुध २१–२५ तक मंगल २५–३० तक शनिहद्देश हैं, ऐसे सब राशि समझना।

हद्देश चक्रम्

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
अंशाः	६	८	६	७	६	७	६	७	१२	७	७	१२
ग्रहाः	गु.	शु.	बु.	मं.	गु.	बु.	श.	मं.	वृ.	बु	शु.	शु.
अंशाः	६	६	६	६	६	१०	८	४	५	७	६	४
ग्रहाः	शु.	बु.	शु.	शु.	शु.	शु.	बु.	शु.	शु.	वृ.	गु.	गु.
अंशाः	८	८	५	६	७	४	७	८	४	६	७	३
ग्रहाः	बु.	गु	गु.	बु.	श.	गु.	गु.	बु.	बु.	श.	बु	बु.
अंशाः	५	५	७	७	६	७	७	५	५	४	५	६
ग्रहाः	मं.	श.	मं.	मं.	बु.	मं.	शु	गु.	मं.	श.	मं.	मं.
अंशाः	५	३	६	४	६	२	२	६	४	४	५	२
ग्रहाः	श.	मं.	श	श	मं.	श	मं.	श	श	मं.	मं.	श.

पंचवर्गीयबल साधनार्थं ग्रहोच्चादि बल विभागानाह

त्रिंशत्स्वभे विंशतिरात्मतुङ्गे हद्देऽब्धिचन्द्रा दशकं दृकाणे ।
मुसल्लहे पंच लवाः प्रदिष्टा विंशोपका वेदलवैः प्रकल्प्याः ॥

भाषा—अपने राशि ग्रहों में ग्रह होने से तीस अंश बल होता है, अपने उच्च में बीस अंश बल अपनी हद्दा में पन्द्रह अंश, अपने द्रेष्काण में दश अंश अपने नवांशा में पांच अंश बल होता है, किसी

ग्रह का गृह, उच्च, हद्दा द्रेक्काण नवांश के बलों व बलों का योग कर चार से भाग दे लब्धि विंशोपक बल होगा।

स्वस्वाधिकारोक्त बलं सुहृद्भे पादोन मर्धं समभेऽरिभे ङ्घ्रिः।

एवं समानीय बलं तदैक्येवेदोद्धृते हीनबलः शरोनः ॥

भाषा—अपने गृह हद्दा द्रेकाण नवांश में जो जो बल कहा गया है, वह सबमित्र के गृही हद्दा द्रेकाण नवांश मे पौने हो कर होता है समगृह के गृह आदि में आधा होता है, शत्रु के गृह में चौथाई होता है, इस प्रकार सब स्थानों के बल ले कर योग कर चार से भाग देने से बल विंशोपक बल होता है, यदि पांच से थोड़ा होय तो ग्रह बल हीन होता है।

पञ्चान्तयो हीनवीर्यः स्या- दधिको मध्य उच्यते। दशाधिकोबली प्रोक्तः, पञ्चवर्गी बलंत्विदम् ॥	स्वगृहे	स्वहद्दायां	स्व द्रेक्काणे	स्वनवांशे
	३०।००	१५।००	१०।००	५।००
	मित्रगृहे	मित्रहद्दे	मित्रद्रेक्का	मित्रनवांशे
	२२।३०	११।१५	७।३०	३।४५
	सम गृहे	समहद्दे	समद्रेक्काणे	समनवां.
	१५।००	७।३०	५।००	२।३०
	शत्रुगृहे	शत्रुहद्दे	शत्रुद्रेक्काणे	शत्रुनवांशे
	७।३०	३।४५	२।४५	१।१५

स्वगृहे	उच्चे	हद्दे	द्रेक्काणे	नवांशे	शत्रुगृहे	शत्रुहद्दे	शत्रु द्रेक्काणे	शत्रु नवांशे
३०।००	२०।००	१५००	१०	५	७।३०	३।४५	२।४५	१।१५

वर्षे ताजिक मतेन मित्रसम शत्रु निर्णयः

मित्रं त्रिकोणत्रिभवस्थितश्चेद् द्वयर्यष्टरिष्फेषु समो ग्रहः स्यात् ।
केन्द्रेषु शत्रु कथितो मुनीन्द्रै वर्षादिविशेषफल निर्णया यः ॥

भाषा—जैसे जातकों में मित्र सम शत्रु का निर्णय लिखा है, वैसे ताजिक ग्रन्थ में नहीं यहां तो जिस ग्रह को जो ग्रह मित्र दृष्टि से देखता है, वह मित्र है, जो शत्रुदृष्टि से देखता हो, वह शत्रु होता है इन दोनों से भिन्न ग्रह सम होते हैं वहां ३।५।८।११ स्थानों में वर्तमान ग्रह मित्र दृष्टि से देखता है इसलिये मित्र होता है, १।४।७।१० इतने स्थानों में स्थित ग्रह शत्रु दृष्टि से देखता है, इसलिये शत्रु होते हैं, इन से भिन्न २। ६। ८। १२ स्थानों में स्थित ग्रह सम होते हैं, यह केवल वर्षेश निर्णयार्थ हैं।

मित्र स्थानानि ।३।५।८।११। समस्थानानि ।२।६।८।१२। शत्रु स्थानानि । १। ४। ७। १० ।

गेहं होरा त्र्याब्धि पञ्चाङ्ग सप्तवस्वङ्काशेशार्कभागाः सुधीभिः ।
विज्ञातव्या लग्न संस्थाः शुभानां वर्गाः श्रेष्ठाः पापवर्गास्त्वनिष्टाः

अर्थ—गृह होरा तृतीयांश (द्रेष्काण) चतुर्थांश पञ्चमांश षष्ठांश सप्तमांश अष्टमांश नवमांश दशमांश एकादशांश द्वादशांश इतने लग्न आदि भावों में तथा ग्रहों में भी समझना। यहां शुभ ग्रहों के वर्ग शुभ होते है। पाप ग्रहों के वर्ग अनिष्ट फल देते हैं। यदि सकल वर्गेश शुभ ग्रह ही हों तो पूर्ण शुभ फल यदि सकलवर्गेश अशुभ ग्रह ही हों तो पूर्ण अशुभ फल। यदि आधे से अधिक शुभ वर्ग हों तो शुभाधिक्य आधे से अधिक पाप ग्रह वर्ग हों तो अशुभाधिक्य बराबर होने से न तो शुभ न अशुभ मामूली फल देते हैं।

होरेश तृतीयांशेश चतुर्थांशेशानाह

ओजे रवीन्दोः समइन्दुरव्योर्होरेग्रहार्ध प्रमिते विचिन्त्ये।
द्रेक्काणपा स्वेपुनवर्क्षनाथास्तुर्यांशपः स्वर्क्षजकेन्द्रनाथाः॥

अर्थ—विषम राशियों में पहली होरा सूर्य की, दूसरी चन्द्रमा की सम राशि में पहली होरा चन्द्रमा की, दूसरी सूर्य की होती है। राशि का आधा अर्थात् १५ अंश की होरा होती है

अब द्रेष्काणेश कहते हैं

राशि के त्रिभाग को द्रेष्काण कहते हैं। जैसे हरएक राशियों में तीस अंश उसके तिहाई दश दश अंश हुये। ये द्रेष्काण कहलाते हैं।

उसमें १–१० तक प्रथम ११ से २० तक द्वितीय २१ से ३० तक तृतीय द्रेष्काण समझना। वहाँ जिस राशि में विचार करते हैं उसी का स्वामी ग्रह प्रथम द्रेष्काणेश तथा उसी राशि से पञ्चम राशि के स्वामी द्वितीय द्रेष्काण स्वामी तथा उस राशि से नवम राशि के स्वामी तृतीय द्रेष्काणेश होता है।

चतुर्थांशेश विचार लिखते हैं

जिस राशि में चतुर्थांश विचार करना हो उसका स्वामी प्रथम चतुर्थांशेश उसी राशि के चौथे राशि का स्वामी द्वितीय चतुर्थांशेश उस राशि से सप्तम राशि के स्वामी तृतीय चतुर्थांशेश उस राशि से दशमेश चतुर्थ चतुर्थांशेश होते हैं।

पञ्चमांशेश द्वादशांशेनाह

ओजर्क्षे पञ्चमांशेशाः कुजार्कीज्यज्ञ भार्गवाः
समभेव्यस्ययाज्ज्ञेया द्वादशांशाः स्वभात्स्मृता

अर्थ—विषम राशियों में प्रथम पञ्चमांशेश मंगल, द्वितीय पञ्चमां-

शेश शनि, तृतीय पञ्चमांशेश बृहस्पति, चतुर्थ पञ्चमांशेश बुध, पञ्चम पञ्चमांशेश शुक्र होते हैं। सम राशियों में उत्क्रम से जानना जैसे प्रथम पञ्चमांशेश शुक्र होते हैं, द्वितीय पञ्चमांशेश बुध, तृतीय पञ्चमांशेश गुरु, चतुर्थ पञ्चमांशेश श्नि, पञ्चम पञ्चमांशेश मगल होते हैं और हरएक राशियों में उसी से द्वादशांश समझना चाहिये। जैसे मेष में मेष से और वृष में वृष से—इत्यादि।

पंचमांश चक्रम्

विषमभं	मं.	श.	गु.	बु.	शु.
	१-६	७-१२	१३-१८	१९-२४	२५-३०
समभं	शु.	बु.	गु.	श.	मं.
	१-६	७-१२	१३-१८	१९-२४	२५-३०

द्वादशांश चक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	२।३०
मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	५।००
क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	७ ३०

सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं	म.	मे.	वृ.	मि.	क.	१०।००
क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	मे.	वृ.	म.	क.	सिं.	१२।३०
तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	१५।००
वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	१७।३०
ध.	म.	कुं.	मी.	मे	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	२०।००
म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि	क.	मि.	क.	तु.	वृ.	ध.	२२।३०
कुं.	मी.	मे;	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	२५।००
मी.	मे.	वृ.	सिं.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	२७।३०
												३०।००

अथ सप्तांशानाह

सप्तांशयास्त्वोज गृहे गणनीया निजेशतः ।
युग्मराशौतुविज्ञेयाः सप्तमर्क्षादि नायकाः ॥

अर्थ--राशि के सातवें भाग को सप्तमांश कहते हैं । विषम राशि में प्रथम अपनी ही राशि से गणना करे और सम राशि में अपनी

राशि से सातवीं राशि का पहिला सप्तमांश होता है। जैसे मेष में प्रथम मेष का, इसी तरह मिथुन में पहिला मिथुन का इत्यादि। वृष में वृष से सातवीं राशि वृश्चिक का प्रथम सप्तमांश होता है-इत्यादि समझना।

त्रिशांशमाह

कुज शनि जीवज्ञसिताः पंचेन्द्रिय वसु मुनीन्द्रियांशानाम्।
विषमेषु समर्क्षेपूत्क्रमेण त्रिशांशकाः कल्प्याः।

विषम राशियों में (मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन, कुम्भ) इनमें ५ अंश तक मंगल का (अर्थात् मेष का) फिर ५ से १० तक शनि का उसके बाद १८ अंश तक गुरु का, उसके बाद २५ अंश तक बुध का, उसके बाद ३० अंश तक शुक्र का त्रिशांश होता है। किन्तु सम राशियों में (वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन) इनमें विपरीत समझना—प्रथम शुक्र दूसरा बुध तीसरा गुरु चौथा शनि पांचवां
५ १० १८ २५ ३०
मंगल का त्रिशांश होता है।

अथ षडादि एकादशांशेशानाह

लवीकृतो व्योमचरोऽङ्गशैल वस्वङ्कदिग्रुद्रगुणः खरामैः।
भक्तोगतास्तर्क नगाष्टनन्द दिग्रुद्रभागाः कुयुताः क्रियात्स्युः॥

अर्थ—राश्यादिक ग्रहों के राशिस्थान को तीस से गुणाकर अगले अंश जोड़ना। अब उस अंशादिक ग्रह को सात जगह अलग अलग छः सात आठ नौ दश ग्यारह इन अङ्कों से गुण देना और तीस से भाग देना जो लब्धि हो वह गत षष्ठांश गत सप्तांशादि होंगे। उनमें १ जोड़ने से मेष से वर्तमान षष्ठांश सप्तमांश आदि होंगे।

वर्षेश निर्णयार्थं पञ्चाधिकारिण आह

जन्मलग्नपतिरब्दलग्नपो मुन्थहाधिप इतस्त्रिराशिपः ।
सूर्यराशिपतिरह्नि चन्द्रमाधीश्वरोनिशिविमृश्य पञ्चकम् ॥
बली य एषां तनुमीक्षमानः स वर्षपो लग्नमनीक्षमाणः ।
नैवाब्दपो दृष्टश्चतिरेकतःस्याद्बलस्य साम्ये विदुरेवमाद्याः ॥

अर्थ—जन्मकालिक लग्न का स्वामी, वर्षकालिक लग्न का स्वामी, मुंथहा का स्वामी, त्रिराशीश दिन में वर्ष प्रवेश होने से सूर्य जिस राशि में हो उसका स्वामी रात्रि में वर्ष प्रवेश होने से चन्द्रमा जिस राशि में हो उसका स्वामी इन पांचों को विचार कर उसमें जो सबसे अधिक बली हो और वर्ष लग्न को भी देखता हो, वही वर्षेश होता है। जो वर्ष को नहीं देखता हो वह सर्वाधिक बलवान् होने पर भी वर्षेश नहीं होता है। यदि उन पंचाधिकारियों में सब या चार या तीन या दो दो भी सम बली हों तो जिनकी दृष्टि लग्न पर विशेष हो वह वर्षेश होता है। "दृष्टि वर्ष लग्न के ताजिक के अनुसार बता दिया गया है" और अन्य आचार्य जन्म लग्नादिक में जो दृष्टि कही है यह भी उद्धृत करते हैं।

रव्यादीनां स्थानविशेषे दृष्टयः

पादेक्षणं भवति सोदरमानराश्यो-
रर्धं त्रिकोण युगलोऽखिल खेचराणाम् ।
पादोनदृष्टि निचयश्चतुरस्र युग्मे,
सम्पूर्णदृग्बल मनङ्गगृहे वदन्ति ॥

अर्थ—सभीग्रह अपने ३ स्थान से ३।१० को एक चरण से दोनों त्रिकोण (५।६) को अर्ध (दो चरण से) ४।८ को तीन चरण से देखते हैं, सातवें को चारों चरण से देखते हैं, अतः सातवें में सम्पूर्ण दृग् बल इनका रहता है।

"रव्यादीनां दृष्टि विशेषे बलित्वम्"

शनिरतिबलशाली पाददृगवीर्यं योगे,
सुरकुल पति मंत्री कोण दृष्टौ शुभः स्यात् ।
त्रितय चरण दृष्ट्या भूकुमारः समर्थः,
सकल गगन वासाः सप्तमे दृग् बलाढ्यः ॥

अर्थ--एक चरण दृष्टि से शनिबली होता है अर्थात् ३ तीसरे १० दसवें भावों में शनि की पूर्ण दृष्टि होती है । गुरु कोण दृष्टि ।५।९। में शुभ होता है इन भावों को ५।९ पूर्णदृष्टि से देखता है, मङ्गल तीन चरण दृष्टि से बली है, यानी ४ थे और आठवें भावों को पूर्ण देखता है, सभी ग्रह ७ वें भाव में पूर्ण दृग्बली होते हैं, यहां भावों की गिनती अपने २ स्थान से करनी चाहिए ।

दृष्टिसाम्ये व्यवस्थामाह

उक्तञ्च-पूर्णं पश्यति रविजस्तृतीय दशमं त्रिकोणमपि जीवः ।
चतुसभूमिसुतो द्यूनं चसिताक शशिबुधाः क्रमशः ॥
दृगादि साम्येऽप्यथ निर्बलत्वे वर्षाधिपः स्यान्मुथहेश्वरस्तु ।
पञ्चापि चेन्नो तनु मीक्षमाणा वीर्याधिकोऽब्दस्यविभुर्विचिन्त्यः ॥

अर्थ--यदि पांचों अधिकारी गृहों के बल तथा लग्न के ऊपर दृष्टि में समान हो या सब निर्बल होंतो मुथहाका स्वामी गृह ही वर्षेश होता है अगर पञ्चाधिकारी ग्रहों में कोई भी लग्न को नहीं देखे तो उन पांचों में जो सब से अधिक बली हो वही वर्षेश जानना ।

त्रैराशिक स्वामिन आह.

त्रिराशिपाः सूर्यसिताकिंशुक्रा दिने निशीज्येन्दु बुधक्षमाजाः ।
मेषाच्चतुर्णां हरिभाद्विलोमे नित्यंपरेष्वार्किकुजेज्यचन्द्राः ॥

अर्थ--दिन में वर्ष प्रवेश हो तो मेष का सूर्य वृष का शुक्र मिथुन का शनि, कर्क का शुक्र, रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो मेष का, गुरु वृष

का चन्द्रमा मिथुन का बुध कर्क का मंगल त्रिराशीश होते हैं ।सिंहादि चार राशियों में दिन में वर्ष प्रवेश होने से मेषादि चार राशियों के रात्रि के त्रिराशीश के क्रम से त्रिराशीश होते हैं । मेषादि चार राशियों के जो दिन के त्रिराशीश वे सिंहादि चार राशियों के रात्रि में होते हैं शेष धन, मकर, कुम्भ, मीन, इन राशियों के दिन या रात्रि में क्रम से शनि, मंगल, गुरु, और चन्द्रमा त्रिराशीश होते हैं ।

चक्र से स्पष्ट समझना

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु.	चं.	दिने
गु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.	रात्रौ

मुथहा साधनम्

स्वजन्मलग्नात्प्रतिवर्षमेकैक राशिभोगानमुथहा भ्रमोऽतः ।
स्वजन्म लग्नं रवि तष्टयातशरद्युतं साभमुखेन्थिहा स्यात् ॥

जन्मकाल में एक वर्ष तक जन्मलग्न ही में मुथहा रहती है दूसरे वर्ष में जन्म लग्न से दूसरे स्थान में,तीसरे स्थान में इस क्रम से प्रत्येक वर्ष में एक एक राशि भोग से मथुहा का भ्रमण होता है, इस लिए जन्म लग्न में राशि स्थान में गत वर्ष में जोड़कर १२ से भाग दे, तो शेष तुल्य राशि और अंशादिक तो लग्न के अंशादिवत् इस प्रकार इष्ट वर्ष में मुथहा होती है ।

अन्यच्च प्रत्यहं शरलिप्ताभिर्वर्धते साऽनुपाततः ।
साधंमंशद्वयं मास इत्याहु केऽपि सूरयः ॥

भाषा—हर एक सौर दिन में ५ कलायें हर एक मास में अढ़ाई अंश अनुपात से मुथहा बढ़ती चलती हैं।

ग्रह स्वरूप वर्णनमाह

दृष्टि स्यान्नव पञ्चमे बलवती प्रत्यक्षतः स्नेहदा।
पादोनाऽखिल कार्य साधनकरी मेलापकाख्योच्यते ॥
गुप्तस्नेह करी तृतीय भवने कार्यस्यसंसिद्धिदा।
अंशोना कथिता तृतीयभवने षड्भागदृष्टिर्भवेत् ॥

अर्थ—जिस ग्रह की दृष्टि विचारनी है उसी ग्रह से नवें पांचवें स्थान में प्रत्यक्ष प्रेम देने वाली दृष्टि होती है, वह पौने अंश अर्थात् ००।४५ इतनी होती है वह सब कामों के साधन करने वाली मेलापक दृष्टि कहलाती है, और तीसरे स्थान में भी जो दृष्टि होती है सो भी कार्य की सिद्धि देनेवाली गुप्त स्नेहकरी है अंशोन $१-\frac{१}{३}=\frac{२}{३}\quad\frac{२\times६०}{३}=\frac{१२०}{४३}=४०$ चालीस कला होती हैं। एकादश स्थान में जो दृष्टि होती है वह भी अच्छी है, और षड्भाग तुल्य $\frac{१}{६}=\frac{६०}{६}=१०$ दश कला प्रमित होती है, अर्थात् किसी ग्रह से पञ्चम नवम तृतीय एकादश स्थानों की दृष्टियां अच्छी होती हैं, उसमें पञ्चम नवम, सर्वोत्तम; उससे न्यून तृतीय उससे भी न्यून एकादश स्थान की दृष्टि है।

मुद्दादशा साधन प्रकार

जन्मर्क्ष संख्या सहिता गताब्दाः द्व्यूनिता नन्दहृताऽवशेषात्।
आचंकुराजीशबुकेशुपूर्वाः मुद्दादशाकिल वर्षवेशे ॥

अर्थ—जन्म नक्षत्र जो कोई हो, अश्विनीसे जन्म नक्षत्र को गिनकर जो संख्या हो उसको जोड़ने पर जो हो, उसमें दो घटाकर नव ९

का भाग देने से जो शेष बचेगा, उसमें रवि चन्द्र कुज राहु, जीव शनि, बुध, केतु, शुक्र इन ग्रहों की क्रम से दशेश समझना।

उदाहरण—

जैसे किसी का जन्म नक्षत्र रोहिणी है, उसकी संख्या ४ इसमें गत वर्ष १५ जोड़ देने पर, हुआ १९ इसमें २ घटा कर, $१९-२ = \frac{१७}{९}$ नौ से भाग दिया, यहां लब्धि का काम नहीं है। शेष ८ यह बचा, रवि से गिनने पर केतु की दशा हुई, यहां १ एक वर्ष में ही नव ग्रहों की दशा पूरी होनी चाहिये। एक वर्ष में सौर दिन ३६० होते हैं, और उन ग्रहों के दशा वर्षों के योग १२० वर्ष , अर्थात् महादशा वर्ष से तिगुना १ सौर वर्ष के दिन हैं, इस लिये त्रिगुणित वर्ष संख्या तुल्य उन ग्रहोंके दिनात्मक दशा हुई।

अथ ग्रहाणांमुद्दा दशादि चक्रम्

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	रा.	जी.	श.	बु.	के.	शु.
दशा दिना.	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	६०

हर्षस्थानान्याह

नन्द ९ त्रि ३ षट् ६ लग्न १ भवर्त्त ११ पुत्र ५व्ययद्व्रंपदं स्वभोऽचे।
त्रिभं त्रिभं लग्नभतः क्रमेण स्त्रीणां नृणां रात्रिदिने चतेषाम् ॥

हर्ष स्थानचक्रम्

ग्रहाः	सू.	चं	मं	बु.	गु.	शु.	श.
हर्षस्थानानि	९	३	६	१	११	५	१२

अर्थ—सूर्यादि ग्रहों के क्रम से ९।३।६।१।११।५।१२ इतने हर्षस्थान - होते हैं और २ गृही और उच्च स्थान भी हर्ष स्थान होता है तथा लग्न से तीन स्थान स्त्री गृहों के हर्षपद चार से छः तक पुरुष गृहों के हर्ष पद, फिर, सात से ९ तक स्त्रीगृहों के हर्ष पद १० से १२ तक पुरुष गृहों के हर्ष पद हैं--

स्त्री ग्रहों के हर्ष स्थान लग्न से = १।२।३।७ ८।९

पुरुष ग्रहों के हर्ष स्थान ४।५।६।१०।११।१२ स्त्री ग्रह रात्री में हर्षित होते हैं पुरुष ग्रह दिन में हर्ष पद में होते हैं । १ प्रथम हर्षपद नन्देति, २ स्वग्रहहर्षपद, ३ उच्च हर्षपद, ४ त्रिभं त्रिभं ५ रात्रि दिन = इनका योग बल करना = हर्ष में ५ बल होता है ।

—मास प्रवेशे घटिकाद्यानयनमाह—

मासार्कस्य तदासन्नपंक्तिस्थेन सहान्तरम् ।
कालीकृत्वार्क गत्याप्त दिनाद्येन युतोनितम् ॥
तत्पंक्तिस्थं वारपूर्वं मासार्के ऽधिक हीनके ।
तद्वाराद्ये मासवेशो ह्यब्दवेशोऽप्येवमेवच ॥

अर्थ--जिस मास का मास प्रवेश बनाना होय, उस मास का, तथा उसके समीपवर्ती पंक्ति (वल्ली) के सूर्य इन दोनों के अन्तर करके कला बनाना उसको, सूर्य की गति से भाग देना, जो लब्धि दिनादिक होगा, सो यदि पंक्तिस्थ, सूर्य से मासार्क न्यून हो, तो पंक्तिस्थ वारादि में उस दिनादिक को घटाना तो, मास प्रवेश कालिक

दिनादिक इष्टकाल होगा ऐसे ही दिन प्रवेश भी समझना चाहिए ।

—उदाहरणमाह—

जैसे किसी का वर्ष प्रवेश कालिक सूर्य ५।२७।२१।२ इस में राशि स्थान में ५ जोड़ने से छटे मास प्रवेश का सूर्य हुआ। १०।२७।२१।२ अब इसको देखता हूं तो फाल्गुन शुक्ल दशमो शनि के मिश्रमान कालिक सूर्य से आसन्न पड़ता है। इसलिए पंक्तिस्थ सूर्य १०।२४।५१।२ और मासार्क १०।२७।।२१।२ इन दोनों का अन्तर किया, तो—२।३० = इसको कलात्मक किया = १५० यहां रवि गति से भाग दिया तो लब्धि दिनादि, २।३० यहां पंक्ति काल से मास प्रवेश बनाना है, और पंक्तिस्थ सूर्य से मासार्क अधिक है, इसलिए पंक्ति काल दिनादि, समय हुआ।

यथा—२।३० यहांदिन स्थान में सात से ज्यादा होने से सात से

७।४४।३२

१०।१४।३२ भाग देने पर दिनादि ३।१४।३२ अर्थात् फाल्गुन शुक्ला त्रयोदशो मंगलवार को १४ घड़ी ३२ पल पर छटे मास का प्रवेश हुआ, ऐसे दिन प्रवेश भी निकालना,

—वर्षमध्ये त्रिपताकि चक्रम्—

ध्वर्व (चक्रं)

रेखात्रयं तिर्यगधोर्ध्व संस्थमन्योन्यविद्धाग्रगमेक कोणात् ।
स्मृतं बुधैस्तत् त्रिपताकि चक्रं प्रङ्माध्यरेखाऽग्रगवर्षलग्नात् ।।
न्यसेद्वचक्रं किलतत्र सैकांयाताब्द संख्याविभजेन्नभोगैः ।
शेषोन्मितेजन्मग चन्द्रराशेस्तुल्ये च राशौविलिखेच्छशङ्कम् ।।
परेचतुर्भाजितशेष तुल्येस्थाने स्वराशौ खचरास्तु लेख्याः ।
स्वभानुविद्धे हिमगौतु कष्टं तापोऽर्कविद्धे ह्यगिनात्मजेन ।।
महीजविद्धे तु शरीरपोड़ा शुभैश्चविद्धे जयसौख्यलाभः ।
शुभाशुभव्योमग वीर्यतोऽत्र फलञ्च वर्षस्य वदेत् सुधीमान् ।।

अथ—तीन रेखा सीधी तीन टेढ़ी करना और परस्पर ईशान कोण से रेखा का वेध करना, इसको पण्डित लोग त्रिपताकी चक्र कहते हैं इसके पूर्व के मध्य रेखा पर वर्ष लग्न का न्यास करना, फिर गत वर्ष में एक और जोड़ देना, इसमें नौ का ९ भाग देना, शेष जो अङ्क रहे उसके अनुसार जन्म कालिक स्थान से चन्द्रमा लिखना, और ग्रहों में चार का भाग देकर, शेष रहे जो जन्म स्थानमें लिखना, और राहुकेतु लग्न स्थान से पीछे लिखना. त्रिपताकी चक्र में चन्द्रमा और राहु से वेध हो तो अरिष्ट जानना, और सूर्यसे चन्द्रमा वेध हो तो ताप जानना और शनैश्चर का चन्द्रमा से वेध हो तो रोग जानना, मंगल से चन्द्रमा का वेध हो तो, शरीर, पीड़ा जानना, और चन्द्रमा से शुभ ग्रह का वेध हो तो जय,सुख और लाभ जानिये।
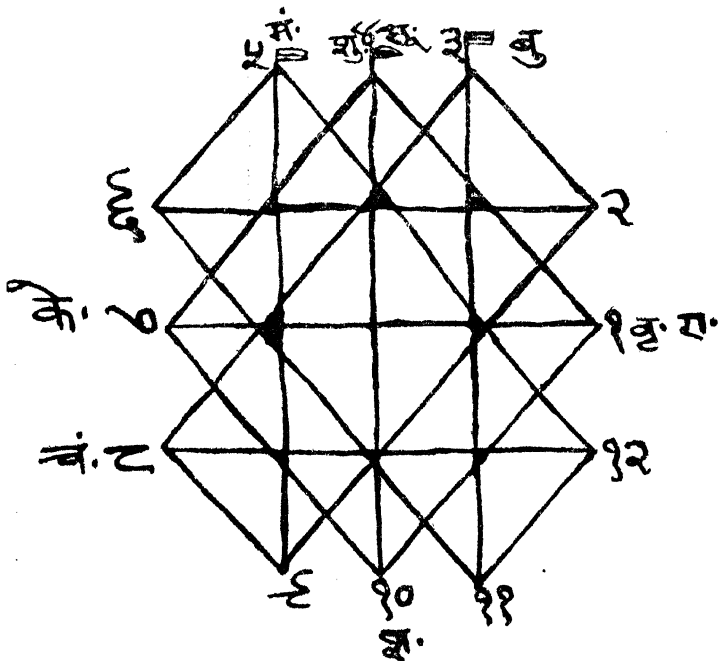
उदाहरण—यहां गत वर्ष १५ में १ जोड़ने पर = १५ + १ = १६ इसमें नव ९ का भाग दिया तो $\frac{१६}{९}$ = १ लब्धि शेष ७ बचा यहां जन्म कुण्डली की आवश्यकता पड़ती है, इसलिये नीचे दे दी गई है। देखिये चन्द्रमा जन्म काल में वृष राशि में है, अब उससे शेष तुल्य स्थान वृश्चिक राशि में चन्द्रमा पड़ा यहां पहले वर्ण पताकी चक्र लिख कर पूर्व भाग की जो तीन रेखाये हैं इन में बीच वाली जो रेखाका छोर है वहां वर्ण लग्न ४ चार लिखिये, वहां से क्रम से बारहों राशियों का निवेश करें—
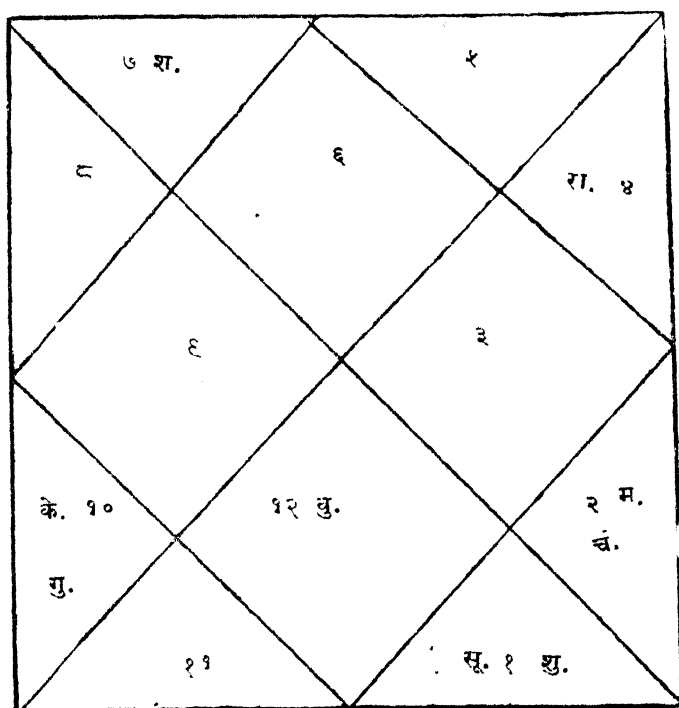
अब जहां वृश्चिक पड़ी है, वहां पर चन्द्रमा को लिखे, और ग्रहों का निवेशन प्रकार फिर गत वर्ष में जोड़ने पर । १२ + १ = १६ हुआ इसमें ४ चार से भाग दिया शेष बचा = ० इसलिये शेष रखलिया = ४ = यहां चन्द्रमा को छोड़ कर, और ग्रहों को अपने स्थान से शुरु कर चार चार घर आगे चलाइये, जैसे, सूर्य मेष में हैं तो कर्क में; मंगल वृष में है तो सिंह में लिखिये, बुध मीन में है तो मिथुन में बृहस्पति मकर में है तो मेष में, शुक्र मेष में तो कर्क में लिखिये, शनि तुला में है तो मकर में लिखिये, राहु कर्क में है, वो इससे पीछे ४ गिनिये तो मेष में राहु, केतु, मकर में है तो उसको वहां से चार घर पीछे तुला में लिखिये ।

अथ लग्नस्थ मुन्थहायाः फलम्

शत्रुक्षयं मान सुताश्च लाभं प्रताप वृद्धि नृपतेः प्रसादम् ।
शरीर पुष्टिंविविधोत्तमांश्च ददातिवित्तं मुथहा तनुस्था ।

धनस्थ मुन्थाहायाः फलम्

उत्साहतोऽर्थागमनं यशश्च, स्वबन्धु सम्मान नृपाश्रयाश्च
मिष्टान्नभोगोबलपुष्टि सौख्य स्यादर्थभावे मुथहायदाऽब्दे ॥

सहजस्थ मुन्थाहायाः फलम्

पराक्रमद्वित्तयशः सुखानि, स्यादर्थ सौख्यं द्विजदेवपूजाः ।
सैचोपकारस्तु पुष्टि कीर्ति नृपाश्रयश्चेन्मुथहा तृतीये ॥

सुखभावस्थ मुन्थाहायाः फलम्

यदीन्थिहा पंचमगाब्दवेशे सद्बुद्धि सौख्यात्मज वित्तलाभः ।
प्रतापवृद्धिर्विविधा विलासादेव द्विजाच नृपतेः प्रसादः ॥

अथाऽरि भावस्थ मुन्थहायाःफलम्

कृशत्वमंगेपुरिपूदयश्च भयंरुजस्तस्करतो नृपाद्वा ।
कार्यार्थ नाशो मुथहारिगा चेद् बुद्धि वृद्धिः स्वकृतेऽनुतापः

सप्तम भावस्थ मुन्थहायाःफलम्

कलत्रबन्धु व्यसनारभीतिरुत्साहभंगो धनधर्म नाशः ।
द्यूनोपगाचेन्मुथहातनौस्याद्रुजामनोमोह विरुद्धचेष्टः ॥

अष्टम भावस्थ मुन्थहायाःफलम्

भयंरिपोस्तस्करतो विनाशो धर्मार्थयोर्व्यसनामयश्चय ।
मृत्युस्थिताचेन्मुथहानराणां बलक्षयः स्याद्गमनंसुदूरे ॥

नवम भावस्थ मुन्थहायाःफलम्

स्वामित्वमर्थोपगमो नृपेभ्यो धर्मोत्सवः पुत्रकलत्रसौख्यम् ।
देवद्विजार्चा परमंयशश्च भाग्योदयो भाग्यगतेन्थिहायाम् ॥

दशम भावस्थ मुन्थहायाःफलम्

नृप प्रसादं स्वजनोपकारं सत्कर्मसिद्धिं द्विजदेवभक्तिम् ।
यशोऽभिवृद्धिं विविधार्थलाभं दत्तेऽम्बरस्था मुथहा पदाप्तिम् ॥

अथायस्थ मुन्थहायाःफलम्

यदीन्थिहा लाभगता विलास सौभाग्य नैरुज्य मनः प्रसादाः ।
भवन्ति राजाश्रयतो धनानि सन्मित्र पुत्राभिमताहयश्च ॥

व्यय भावस्थ मुन्थहायाः फलम्

व्ययोऽधिको दुष्टजनैश्च संगो रुजातनौ विक्रमतोऽर्थ सिद्धिः ।
धर्मार्थ हानिर्मुथहा व्ययस्था यदातदा स्याज्जनतोऽपिवैरम् ॥

तनुभाव मुन्था

वर्ष लग्न में यदि मुन्था हो तो शत्रु का क्षय, मान, सुत और घोड़े का लाभ, पुत्र की वृद्धि, राजा की प्रसन्नता, शरीर में पुष्टता आदि अनेक प्रकार के उद्यम और धन को देती है।

द्वितीयभाव मुन्था

दूसरे स्थान में मुन्था हो तो उत्साह से धन की प्राप्ति, कीर्ति,

अपने बन्धुओं में सम्मान, राजा का आश्रय, मिष्टान्न, भोजन, वस्त्र, पुष्टि तथा सुख करे।

तृतीयभाव मुन्था

तीसरे स्थान में मुन्था हो तो पराक्रम से धन, यश और सुख प्राप्त हो तथा मातृ सुख हो, ब्राह्मण तथा देवता का पूजन करे, सर्वो-पकार से शरीर पुष्ट और कांति तथा नृपाश्रय हो।

चतुर्थभाव मुन्था

चौथे स्थान में मुन्था हो तो शरीर पीड़ा, शत्रु भय, स्ववर्ग से वैर, मन सन्ताप, उद्यम रहित और जनापवाद करावे, रोग वृद्धि तथा दुःख होता है।

पंचमभाव मुन्था

यदि मुन्था पञ्चम स्थान में हो तो उत्तम बुद्धि हो, सुख, पुत्र और धन का लाभ हो, प्रताप की वृद्धि हो, नाना प्रकार के विलास हों, देवता ब्राह्मण की पूजा करे तो राजा की प्रसन्नता हो।

छटेभाव मुन्था

मुन्था छटे भाव में हो तो शरीर के लिये कृशता हो, शत्रु का उदय हो, रोग और चोर तथा राजा से भय हो, कर्म और अर्थ का नाश करे, दुर्बुद्धि की वृद्धि करे तथा स्वकीय कृत में सन्ताप हो।

सातवें मुन्था

सप्तम स्थान में मुन्था हो तो स्त्री से, बन्धु से, व्यसन से और शत्रु से भय हो और उत्साह भंग तथा धर्म का नाश होता है। मोह और विपरीत चेष्टा होती हैं।

आठवें मुंथा

अष्टम स्थान में मुन्था हो तो शत्रु भय, चोर भय, धर्म और

अर्थ का नाश, दुष्ट व्यसन, रोग, बल क्षय और दूर देश में गमन हो।

नवमें मुंथा

मुन्था नवमे स्थान में हो तो राजा से धन की प्राप्ति हो, धर्मोत्सव हो, पुत्र स्त्री से सुख हो, देव ब्राह्मण का पूजन करावे, परम यश और भाग्योदय करे।

दशवें मुंथा

दशम स्थान में मुन्था हो तो राजा प्रसन्न हो, स्वजन से उपकार हो, उत्तम कर्म की सिद्धि हो, ब्राह्मण तथा देवता की भक्ति हो, यश की वृद्धि हो, नाना प्रकार के द्रव्य का लाभ और श्रेष्ट पद का लाभ हो

ग्यारहवें मुंथा

लाभ स्थान में मुन्था हो तो विलास, सौभाग्य, नीरोगता और मन को प्रसन्न करे। राजा के आश्रय से धन मिले और उत्तम मित्र तथा पुत्र की इच्छा प्राप्त हो।

बारहवें मुंथा

बारहवें स्थान में मुन्था हो तो खर्च बहुत करावे और दुष्ट जनों से संग हो तथा शरीर में रोग हो और पराक्रम से भी कार्य सिद्ध न हो। धर्म अर्थ की हानि तथा सज्जनों से वैर हो।

अथ सूर्यस्य वर्षेशत्व फलं—तत्र पूर्ण बलिनो फलम्

सूर्येऽब्दपे बलिनि राज्यसुखात्मजार्थ
लाभः कुलोचितविभुः परिवारसौख्यम्॥
पुष्टं यशो गृह सुखं विविधा प्रतिष्ठा।
शत्रु विनश्यति फलं जनिखेट युक्त्याः॥

अर्थ—पूर्ण बली सूर्य वर्षेश होने से राज्य सुख, पुत्र, धन लाभ वंश के अनुसार समुचित अधिकार, परिजन, सुख, पूर्ण यश, गृह सुख

अनेक प्रकार की प्रतिष्ठा, शत्रु नाश, ये फल होते हैं। यहां जन्म काल के बल समझकर फल विषय में तारतम्य समझना।

पूर्ण बलचंद्रस्य वर्षेश फलमाह

वीर्यान्विते शशिनि वित्तकलत्र पुत्र मित्रालयस्य विविधं सुखमाहुरार्याः।
स्रगान्ध मौक्तिक दुकूल सुखानुभूति लाभःकुलोचितपदस्य नृपैःसखित्वंम्

अर्थ—पूर्ण बली चन्द्रमा यदि वर्षेश हो तो धन, स्त्री, पुत्र, घर मकान के अनेक प्रकार का सुख कहना। माला सुगन्धित द्रव्य, मोती वस्त्र सुखों का अनुभव हो। अपने कुलोचित पद का लाभ हो तथा राजाओं से दोस्ती हो।

पूर्ण बल भौमस्य वर्षेश फलमाह

भौमेऽब्दपे बलिनि कीर्तिजयारिनाशः सेनापतित्वं रण नायकता प्रदिष्ठा।
लाभः कुलोचितधनस्य नमस्यताच लोकेपुमित्रसुतवित्तकलत्रसौख्यम्॥

अर्थ—पूर्ण बली मंगल वर्षेश होने से कीर्ति, जय, शत्रु का नाश, सेनापति, संग्राम में प्रधान और कुलोचित, धन संपत्ति मिले। लोगों में मान्य पूज्य होना और पुत्र, मित्र तथा स्त्री का सुख होता है

पूर्ण बल बुधस्य वर्षेश फलमाह

सौम्येऽब्दपे बलवति प्रतिवाद लेख्यः,
सच्छास्त्र सद्व्यवहृतौ विजयोऽर्थ लाभः।
ज्ञानं कला गणितवैद्यभवं गुरुत्वं,
राजाश्रयेण नृपता नृपमंत्रितावा॥

अर्थ—पूर्ण बलवान् बुध वर्षेश होने से, विवाद, लेख, कागज पत्र के बावत में, अच्छे शास्त्रों के व्यवहार, में यदि वकील हो तो जिरह वहस में जय होती है, धन लाभ होता है, नाना प्रकार की कलाओं में गणित में वैद्यक में ज्ञान उत्पन्न होता है, राजा के आश्रय से गौरव होता है, और राजा, या राजमन्त्री, मिनिस्टर होता है—

अथगुरोत्तम बलिनोर्वर्षेशफलमाह

जीवेऽब्दपे बलयुते परिवार सौख्यं धर्मोगुण ग्रहिलता धनकीर्ति पुत्राः
विश्वास्यताजगतिसम्मतिवक्रमाप्तिलाभोनिधेर्नृपतिगौरवमत्यरिघ्नम् ॥

अर्थ—पूर्णबली, बृहस्पति वर्षेश होने से, परिवार का सुख, धर्म गुणग्रहण, प्रेम धन यश, पुत्र ये सब होते हैं, संसार में विश्वासपात्र अच्छी बुद्धि अच्छे पराक्रमकी, प्राप्ति, गाड़े हुए धन का लाभ, शत्रु के नाश करने वाला राजाका सम्मान लाभ होते हैं—

पूर्णबल शुक्रस्यवर्षेशफलमाह

शुक्रेऽब्दपेबलिनि नीरुजता विलास सच्छास्त्ररत्नमधुराशनभोगतोषाः।
क्षेमप्रतापविजया वनिताविलासो हास्यंनृपाश्रय वशेनधनंसुखंच ॥

अर्थ—पूर्णबली शुक्रवर्षेश होने से नीरोग रहना, क्रीड़ा अच्छे शास्त्र ग्रन्थों में प्रेम, रत्न जवाहिरों का लाभ मिष्टान्न भोजन भोग सन्तोष कल्याण मंगल प्रताप विजय स्त्रीसुख हंसी खुशी राजा के आश्रय से धन लाभ और सुख होता है—

पूर्णबलस्यशनेर्वर्षेश फलमाह

मन्देऽब्दपे बलिनिनूतनभूमिवेश्म,
क्षेत्राप्तिरर्थ निचयो, यवनावनीशात् ॥
आरामनिर्मिति जलाशय, सौख्यमंगं।
पुष्टि कुलोचितपदाप्ति गुणागुणित्वम् ॥

अर्थ—पूर्ण बलीशनि वर्षेश होने से नवीन जमीन घर खेती बाड़ियों में लाभम्लेच्छ राजा से धन समूहों के लाभ हो, फुलवाड़ी बगीचा बनाना, जलाशय का सुख शरीर की पुष्टि वंश के अनुसार, स्थानों का लाभ अपने गणों में मुखिया हो।

अथ ग्रहाणां भावफलमाह

१ सूर्यार मन्दास्तनुगा ज्वरार्ति धनक्षयंपापयुगिन्दुरित्थम्।
शुभान्वितः पुष्टतनुश्च सौख्यं जीवश्शुक्रा धनधान्य लाभम् ॥

२ चन्द्रज्ञजीवास्फुजितोधनस्था, धनागमं राजा सुखंचदद्य:।
पापाधनस्था, धनहानिदाः स्युर्नृपाद्भयं कार्यं विघातमार्किः॥

३ दुश्चिक्यगाखलखगाःधनधर्मराज्य,लाभप्रदाबलयुताःक्षितिलाभदाःस्युः
सौम्याः सुखर्थं सुतलाभ यशोविलास लाभायहर्षमतुलंकिलतत्रचन्द्रः

४ चन्द्रः सुखेखल युतोव्यसनंरुजंच, पुष्टः शुभेनसहितः सुखमातनोति।
सौम्याःसुखंविविधमत्रखलासुखार्थं नाशंरुजं व्यसनमप्यतुलंभयं च॥

५ पुत्रवित्तसुखसञ्चयं शुभाः पुत्रगाभृगुसुत र्कोऽतिहर्षदः।
पुत्रवित्तधनहानिकारकास्तस्करामय कलिप्रदाः खलाः॥

६ षष्ठे पापावित्तलाभं सुखाप्तिं भौमोऽत्यन्तं हर्षदः शत्रुनाशम्।
सौम्याभीतिं वित्तनाशंकलिंच चन्द्रोरोगंपापयुक्तः करोति॥

७ सपापः शशि सप्तमे व्याधिभीतिं खला त्रीविनाशंकलिं भृत्यभीतिम्
शुभाकुर्वतेवित्तलाभं सुखाप्तिं यशोमान राज्योदयं बन्धुसौख्यम्॥

चन्द्रोऽष्टमे निधनदःखलखेदयुक्तःपापाश्चतत्र मृतिमृतितुल्य फलाविचिन्त्याः
सौम्याः स्वधातु वशतोरुजमर्थहानिमानक्षयं मुथशिले ऽशुभजंशुभं च॥

९ तपसिसोदरभीपशुपीडनं खलखगेऽति मुदोरविरत्रचेत्।
शुभखगाधनधर्मविवृद्धिदाः खलखगेच शुभाऽन्यपरेजगुः॥

१० गगनगो रविजः पशुवित्तहारत्रिकुजो व्यवसाय पराक्रमैः।
धनसुखानि परेच धनागमजा, वनिपसंग सुखानिवितन्वते॥

११ लाभेधनोपचय सौख्य यशोऽभिवृद्धि सन्मित्र संगबलपुष्टिकरास्तुसर्वे
क्रूराः बलेन रहिता सुतवित्तबुद्धि नाशं शुभास्तुतनुतां स्वफलस्यकुर्युः

१२ पापाव्यय व्ययेनेत्रंरुजंविवादं हानिर्धनानां नृपतस्करादेः।
सौम्या व्यये सद्व्यवहारमार्गे कुर्वन्ति हर्षं विवृद्धिमत्र।

इनका अर्थ चक्र से समझना।

अथ भाव फल चक्रम्

भाव	सू.	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श. रा. के.
१	ज्वरागमः धनक्षयः	पुष्टतनु सुखम्	ज्वरागमः धनक्षयः	धन राज्य लाभः	धन राज्य लाभः	धनराज्य लाभ	ज्वरागम धनक्षयः
२	धन हानि दः	धनागम राजसुखं	धन हानि	धनागम राज सुखं	धनागम राज सुखं	धनागम राज सुखं	धनहानि कार्य. हानि राजभय
३	धन धर्म राज्य प्रदः	अतुल हर्षद	धन धर्म राज्य लाभः	सुखार्थ सुत- लाभ यशोमा- न विलासदः	सुखार्थ सुत. लाभ यशोमा. न विलासदः	सुखार्थ सुत. लाभ यशो मा न विलासदः	धन धर्म रा य लाभ
४	सुखार्थनाशः रोग भयदः	सुखं प्राप्तिः	सुखार्थनाश रोग भयद	सुख प्राप्ति	सुख प्राप्ति	सुख प्राप्ति	सुखार्थ नाशः रोग भयदः
५	पुत्र धन नाश कलिप्रदः चौरभय	पुत्र धन सुख प्रदः	पुत्रधन नाश कलिप्रद चौर भयम्	पुत्र धन सुख प्रदः	पुत्र धन सुखप्रदः	पुत्र धन सुख प्रदः	पुत्रधन नाश कलिप्रदः चौरभयं
६	धन लाभ सुख प्राप्ति	भय धन नाश कलिप्रदः	अत्यन्त हर्षदः शत्रु नाश	भय धन नाश कलिप्रदः	भय धन नाश कलिप्रदः	भयधन नाश कलिप्रदः	धन लाभ सुख प्राप्ति

७	स्त्री नाश कलिप्रदः मृत्युभयम्	वित्तलाभसुखाप्ति यशोमान भाग्यो दय व सुसौख्यं	स्त्री नाश कलिप्रदः मृत्युभयं	वित्तलाभ सु खाप्तियशोमा न भाग्योदय	वित्तलाभ सु- खाप्ति यशोमा न भाग्योदय	वित्तलाभ सु- खाप्ति यशोमा न भाग्योदय	स्त्री नाश कलि प्रदः मृत्युभयम्
८	मृत्यु तुल्य कष्ट	रोगप्रदः अर्थ हानि मानक्षयः	मृत्यु तुल्य कष्ट	रोग प्रदः अर्थ हानि मानक्षयः	रोगप्रदः अर्थ हानि मानक्षयः	रोगप्रदः अर्थ हानि मानक्षयः	मृत्युः तुल्य कष्ट
९	अत्या नन्ददः	धन धर्म वृद्धिः	भ्रातृ भयं पशु पीडनं	धनधर्म वृद्धिः	धन धर्म वृद्धिः	धन धर्म वृद्धिः	अत्यानन्ददः
१०	घातः	धन सुख प्राप्ति	घातः	धन सुख प्राप्तिः	धन सुख प्राप्तिः	धन सुख प्राप्ति	घातः
११	धनदः अत्यन्तसुखं यशोवृद्धिद	धनदः अत्यन्तसुखं यशो वृद्धिदः	धनदः अत्यन्त सुखं यशो वृद्धि	धनदः अत्यन्त सुखं यशोवृद्धि	धनदः अत्यन्त सुखं यशोवृद्धि	धनदः अत्यन्त सुखं यशो वृद्धि	धनदः अत्यन्त सुखं यशो वृद्धिः
१२	नेत्ररुजं विवादः राज चौराद्धनहानि	शुभ व्यवहार कार्य	नेत्ररुजं विवादः राज- चौराद्धनहानि	शुभ व्यव- हारकार्य	शुभ व्यव- हार कार्य	शुभ व्यव- हार कार्य	नेत्ररुजं विवादः राजचौराद्धन हानिः

विंशोत्तरीदशा प्रकार:

नवर्क्षेष्वग्नि भाद्येषु त्रिरावृत्तेष्वधः स्थिताः
रवीन्दु भौमराह्वीज्य शनिज्ञ शिखिभार्गवाः

रसादिशोऽद्रयोऽष्टेन्दु मिताभूयानवेन्दवः
सप्तेन्द्रोऽद्रयोविंशद्दशा वर्षण्यनु क्रमात्

अर्थ—कृतिका आदि नव नक्षत्र तीन आवृत्ति से स्थापित करके क्रम से दशा जानिए। पहली दशा सूर्य की ६, दूसरी चन्द्रमा की १० वर्ष तीसरी मंगल की ७ वर्ष चौथी राहु की अठारह वर्ष, पांचवी बृहस्पति की १६ वर्ष, छटी शनिश्चर की १६ वर्ष, सातवीं बुध की १७ वर्ष, आठवीं केतु की ७ वर्ष, नवमीं शुक्र की २० वर्ष, का प्रमाण समझना, भुक्त भोग्य जन्म की दशा में पूर्वोक्त जान लेना।

दशाभुक्त भोग्य प्रकार:

अथोभस्य भुक्ताघटी स्वैर्दशाब्दैः
निहन्यात्तथा सर्वतारा विभक्ता
भवेद्वर्ष पूर्वैर्हि, भुक्ता दशायां
स्ववर्षे च पात्या भवेद्भोग संज्ञा

शेषादर्क गुणामासाः शेषास्त्रिंशद गुणादिवा
शेषात्षष्टि-गुणानाड्यः शेषात्षष्टि गुणाःपलाः

अर्थ—जन्म दशा के वर्ष से भयात की घटी आदि गुणे, उसमें भभोग का भाग दे, जो लब्ध मिले, उसे दशाका भुक्त वर्ष जाने, शेषाङ्क को बारह से गुणा करके, भभोग का भाग दे, जो लब्धदशा के भुक्त महीने होते हैं। फिर शेषाङ्क को तीस से गुणा करे भभोग का भाग दे, लब्ध को दशाके भुक्त दिन जानिये, शेषाङ्क को साठ से गुणा करे, भभोग का भाग दे, लब्ध की दशा को भुक्तघटी जानिये। फिर शेषाङ्क को साठ से गुणा करके भभोग का भाग देने पर लब्धपलादि

होते हैं, फिर यही भुक्त वर्ष, आदि दशा के वर्ष प्रमाण में घटादेने से भोग्य वर्षादि होते हैं।

उदाहरण—संवत् १९०१ शाके १८७६ फाल्गुन कृष्ण द्वितीयायां चन्द्रेष्टं ५३।५२ हस्त नक्षत्रे भभोग=५८।१९, भयातं ३३।२६ विंशोत्तरी मध्ये चन्द्र दशायां जन्म, तत्प्रमाणं वर्ष १० गणितागत भुक्त वर्षादि ५।८।२६।५१।२६ भोग्य वर्षादि ४।३।३।००।३४

अथान्तरदशा प्रकार:

दशा दशाहता कार्या दशमानेनभाजिता।
यल्लब्धाऽन्तर्दशा ज्ञेया फलं वर्षादिकं भवेत्॥

दशा को दशा से गुणे, उसमें दशाका जो मान अर्थात् जो अङ्क सब दशाओं के, प्रमाण का हो, उससे भाग दे, जो लब्ध मिले, उसे अन्तर्दशा का वर्ष जानिये, फिर शेषाङ्क को बारह से गुणा करके, उसमें सर्व दशा प्रमाण का भाग लेने से लब्ध को अन्तर्दशा के महीने जानिये फिर शेषाङ्क को तीस से गुणा करके उसमें दशामान का भाग देने से लब्ध को अन्तर्दशा के दिन जानिये।

उदाहरण—सूर्य की दशा का ६ वर्ष हैं, इसको ६ से गुणा तो ६ × ६ = ३६ हुआ इसमें सर्व दशामान का = १२० भाग देने पर $\frac{३६}{१२०}$ ० लब्धि वर्ष मिली शेष ३६ को १२ से गुणा करो तो

३६ × १२ = $\frac{४३२}{१२०}$ हुआ इसमें परमायु १२० का भाग दिया तो लब्धि = ३ मास मिली शेष ७२ को ३० तीस से गुणा तो

७२ × ३० = २१६० हुआ इसमें $\frac{२१६०}{१२०}$ भाग दिया तो लब्धि १८

दिन मिली सूर्य की दशा में सूर्य का अन्तर, वर्षादि ०।३।१८ हुआ इसी प्रकार सूर्य की दशा में चन्द्रमा का अन्तर निकालना है तो सूर्य की दशा का वर्ष प्रमाण ६ को चन्द्रमा की दशा के वर्ष प्रमाण १० से गुणा ६० हुआ, इसमे परमायु का भाग दिया तो, लब्धि वर्षादि ०।६।० मिली इसी प्रकार सब ग्रहों की दशा में समस्त ग्रहों की अन्तर दशा बनावे।

प्रत्यन्तर बनाने की विधि

अन्तर के वर्ष मासादिकों को दिन बनावे उसको जिस ग्रह की प्रत्यन्तर दशा निकालनीहो, उसके, वर्ष प्रमाण के, आधे से गुणा करके फिर इसमें ६० का भाग देने से, लब्ध दिन होता है शेष घटी होती हैं।

उदाहरण—सूर्य का ३ मास १८ दिन अन्तर है इसका दिन किया तो १०८ हुआ, इसको सूर्य के दशा वर्ष प्रमाण के आधे से ३ से गुणा किया तो ३२४ हुआ, इसमें ६० का भाग दिया तो ५ दिन लब्धि मिली = शेष २४ घटी रही यही सूर्य के अन्तर में सूर्य का प्रत्यन्तर हुआ, सूर्य में सूर्य का प्रत्यन्तर = ०।५।२४ और सूर्य में चन्द्रमा का अन्तर ६ मास है, इसका दिन किया तो १८० हुआ, इसमें ३ का (सूर्य की महादशा प्रमाण के आधे का) गुणा तो ५४० हुआ $\frac{५४०}{६०}$ साठ का भाग दिया तो लब्धि ९ दिन मिली, यही सूर्य के अन्तर में चन्द्रमा का प्रत्यन्तर बना = ०।९।० इसी प्रकार अन्य ग्रहों का भी बनाना।

सूर्य की दशा में रवि आदि सकल ग्रहों की अन्तरदशा

सू.	चं.	मं.	रा.	जी.	श.	बु.	के.	शु.	यो.	ध्रु.
०	०	०	०	०	०	०	०	१	६	००
३	६	४	१०	९	११	१०	४	०	०	००
१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०	१०	१८

चन्द्रमा की दशा में रवि आदि सकल ग्रहों की अन्तरदशा

च.	मं.	रा.	जी.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	यो.	ध्रु.
०	०	१	१	१	१	०	१	०	१०	०
१०	७	६	४	७	५	७	८	६	००	१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०

मंगल की दशा में मंगलादि सकल ग्रहों की अन्तरदशा

मं.	रा.	जी.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	यो.	ध्रु.
०	१	०	१	०	०	१	०	०	७	०
४	०	११	१	११	४	२	४	७	०	०
२७	१८	६	९	२७	२७	००	६	०	०	२१

राहु की दशा में अन्तरदशा

रा.	जी.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	यो.	ध्रु.
१ ८ १२	२ ४ २४	२ १० ६	२ ६ १८	१ ० १८	३ ० ०	० १० २४	१ ६ ०	१ ० १८	१८ ०० ००	० १ २४

बृहस्पति की दशा में सकल अन्तर दशा

गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	यो.	ध्रु.
२ १ १८	२ ६ १२	२ ३ ६	० ११ ६	२ ८ ००	० ६ १८	१ ४ ००	० ११ ६	२ ४ २४	१६ ०० ००	 १ १८

शनि की दशा में अन्तर

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	जी.	यो.	ध्रु.
३ ० ३	२ ८ ६	१ १ ६	३ २ ०	० ११ १२	१ ७ ००	१ १ ६	२ १० ६	२ ६ १२	१६ ०० ००	० १ २७

बुध की दशा में अन्तर

बु	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	जी.	श.	यो.	ध्रु.
२ ४ २७	० ११ २७	२ १० ००	०० १० ६	१ ५ ०	० ११ २७	२ ६ १८	२ ३ ६	२ ८ ६	१७ ०० ००	० १ २१

केतु की दशा में अन्तर दशा

के.	[illegible].	सू.	चं.	मं.	रा,	जी.	श.	बु.	यो.	भु.
०	१	००	०	०	१	०	१	०	७	०
४	२	४	७	४	०	११	१	११	०	०
२७	००	६	००	२७	१८	६	६	२७	०	२१

शुक्र की दशा में अन्तर

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	जी.	श.	बु.	के.	यो.	भु
३	१	१	१	३	२	३	२	१	२०	०
४	०	८	२	०	८	२	१०	२		२
०	०	०	०	०	०	०	०	०		०

त्रिंशोत्तरा दशा मध्ये सूर्यदशाफलम्

देशान्तरं च निजबन्धु वियोग दुःख ।
मुद्वेगरोगभय चौर भवा च पीड़ा ॥
पूर्वस्थितस्य निखिलस्य धनस्य नाशो ।
भानोर्दशा जनमकाल दशा भवन्ति ॥

अर्थ—देशान्तर वास भाई का वियोग, दुःख मन को उद्वेग-चिन्ता रोग, भय, चौर पीड़ा और सञ्चित धनका नाश करे ।

चन्द्रदशाद फलम्

हेमादिभूतिवर वाहनयान लाभः ।
शत्रुप्रताप बल वृद्धि परम्परा च ॥
इष्टान्न दान शयनासन भोजनानि ।
नूनं सदा शशिदशा गमने भवन्ति ॥

अर्थ--सुवर्णादि ऐश्वर्य का लाभ औरघोड़ा हाथी, और पालकी इत्यादि श्रेष्ठ वाहनका लाभ शत्रु पराजय, बलकी वृद्धि और नाना प्रकार के रस अन्नदान शयन स्थान, आसन उत्तम, भोजन, यह सब चन्द्रमाकी महादशा में प्राप्त होते हैं।

भौमदशाफलम्

भूपालचौरभय वह्नि कृताच पीड़ा।
सर्वाङ्ग रोगभय दुःख सुदुःखिताच ॥
चिन्ता ज्वरश्च बहुकष्ट दरिद्र युक्तः।
स्यात्सर्वदा कुजदशा जनने जनानाम् ॥

अर्थ—राजा और चोरों से भय, और अग्नि से, पीड़ा, सारे शरीर में रोग भय सदा दुःखी, अनेक प्रकार की चिन्ता ज्वर बहुत कष्ट दारिद्र्य यह फल मंगल की दशा में जानना-

राहु दशा फलम्

दीनोनरो भवति बुद्धिविहीन चिन्ता।
सर्वाङ्गरोगभय दुःख सदुःखिता च ॥
पापानि बन्ध बहु कष्ट दरिद्र युक्त।
राहोर्दशा जननकाल दशा भवन्ति ॥

अर्थ—मनुष्य बुद्धि हीन, दीन हो और चिन्ता युक्त, सर्वाङ्ग रोगी, भय, बहुत दुःखी, पाप कर्म से बन्धन, बहुत कष्ट और दरिद्रता। यह राहु का फल है।

गुरु दशा फलमाह

राज्याधिकार परिवर्धित चित्तवृत्तिं।
धर्माधिकार परिपालन सिद्धि बुद्धिम् ॥
सद्विप्रदोऽपि धनधान्य समृद्धिता च।
स्याद्देवता गुरुदशा गमने भवन्ति ॥

अर्थ—राज्याधिकार और चित्त स्वस्थ, धर्म में उत्तम प्रकार की बुद्धि, शरीर की आरोग्यता, सत विचारवान, धनधान्य की वृद्धि। यह फल बृहस्पति दशा में होता है।

शनि दशा फलमाह

मिथ्यापवाद वध बन्धनमर्थ हानि।
मित्रेच बन्धु वचनेषु च युद्ध बुद्धिः॥
सिद्धं च कार्यमपि यत्र सदाविनष्टं।
स्यात्सर्वदा शनिदशा गमने भवन्ति।

अर्थ—मिथ्या अपवाद, दूसरे का हनन, बन्धन द्रव्य का नाश, मित्र तथा बन्धुओं से कलह की बुद्धि और सिद्ध कार्य भी नष्ट होवें। यह शनि की दशा का फल समझना।

बुध दशा फलम्

दिव्याङ्गनामदन सङ्गम केलि सौख्यम्।
नानाविधैः समभिरागमनोऽभिरामैः॥
हेमादिरत्न विभवाप्म कोशधान्यं।
स्यात्सर्वदा बुधदशा गमने भवन्ति॥

अर्थ—सुन्दर स्त्री सुख और अनेक प्रकार के भोग विलास, सुवर्ण और रत्नादि की प्राप्ति विभवयुक्त खजाना और धान्य। यह फल बुध की दशा का फल समझना।

केतु दशा फलम्

भार्यावियोग जनितं च शरीरदुःखं।
द्रव्यस्य हानिरति कष्ट परम्परा च॥
रोगाश्च बन्धुकलहश्च विदेशता च।
केतोर्दशा जनन काल दशा भवन्ति॥

अर्थ—स्त्री वियोग से शरीर को दुःख, द्रव्य की हानि, बहुत कष्ट

रोग, बन्धुओं में कलह और विदेश वास। यह केतु दशा का फल है।

शुक्र दशा फलम्

आराम वृद्धि परि सर्व शरीर वृद्धिं।
श्वेतातपत्र धनधान्य समाकुलञ्च ॥
आयुःशरीर सुतपौत्र सुखंनराणां।
द्रव्यञ्च भार्गव दशाऽऽगमने भवन्ति ॥

अर्थ—बगीचा इत्यादि स्थान की प्राप्ति, शरीर पुष्टि, श्वेतछत्र की प्राप्ति, धन धान्य की बृद्धि, आयु और पुत्र पौत्रों की बृद्धि और द्रव्य प्राप्ति। यह फल शुक्र की दशा का समझना।

योगिनी दशा प्रकारः

स्वकीयं च भंरुद्रनेत्रैयु तंतद् विधायाष्टभिर्भागमाहार्यशेषात
क्रमान्मङ्गलादिर्दशा शून्यशेषं तदा संकटा प्राणसन्देह कर्त्री

अर्थ—अश्विनी आदि जन्म नक्षत्र में तीन जोड़कर आठ का भाग दे। जो शेष हो उसे मंगल आदि दशा जाने। शून्य बचे तो संकटा वह प्राण को सन्देह करने वाली है।

दशाक्रम ज्ञानमाह

अभून्मंगला पिंगला धान्यका च
तथा भ्रामरी भद्रिका चोल्किका च
तथा सिद्धिदा सङ्कटाख्या शिवस्तु
शिवार्थे पुरा योगिनीस्युक्तवांश्च

अर्थ—मंगल १, पिंगला २, धान्य ३, भ्रामरी ४, भद्रिका ५, उल्का ६, सिद्धा ७, और संकटा ८। ये आठ योगिनी दशा पहले पार्वती जी ने शिवजी के प्रति कही है।

दशा स्वामि ज्ञानम्

अथासामधीशाः क्रमान्मंगलातो
भवेच्चन्द्रभानू गुरुभूमिसूनुः
तथा सौम्यमन्दौ भृगुः सिंहिकायाः
सुतः सङ्कटायास्तदन्ते च केतुः

अर्थ—मंगला आदि दशाओं के स्वामी लिखते हैं—क्रम से मङ्गला का स्वामी चन्द्रमा, पिङ्गला का स्वामी सूर्य, धान्या का स्वामी गुरु, भ्रामरी का मङ्गल, भद्रिका का बुध, उल्का का शनैश्चर सिद्धा का शुक्र और संकटा का स्वामी राहु तथा केतु हैं।

अथ दशाचक्रम्

मं.	पिं.	धा.	भ्र.	भ.	उ.	सि.	सं.	दशा.
चं.	सू.	वृ.	मं.	बु.	श.	शु.	रा. के.	स्वामी
१	२	३	४	५	६	७	८	वर्ष प्रमाण
००	००	००	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृग.	
आ.	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा.	पू. फा.	उ.फा.	हस्त	नक्षत्र
चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मूल.	पू.षा	उ. षा.	नक्षत्र

श्र.	ध.	शत.	पू. भा.	उ. भा.	रे	×	×	नक्षत्र

अथ योगिनी दशा फलम्

दुःख शोक कुलरोग वृद्धिता व्याग्रता च कलहः स्वजनैश्च
अन्त्यभाग फलदा कथिताऽसौ पिंगला च विदुषां सुखदादौ
वैरिणा विवदनं विनाशनं वाहनस्य बहुरत्न लाभदा
कामिनी सुत गृहाद्विलासदा मंगला सकल मंगलोदया

अर्थ— शत्रु से विवाद, वाहनादि विनाश, बहुत रत्न लाभ, स्त्री पुत्र और गृह द्वारा विलास और सकल मंगलोदय हो । यह मङ्गल दशा का फल है

पिंगला दशा फलम्

दुःख शोक कुलरोग वृद्धिता व्याग्रता च कलहः स्वजनैश्च
अन्त्यभागे फलदा कथिताऽसौ पिंगला च विदुषां सुखदादौ

अर्थ—दुःख, शोक और कुलरोग की वृद्धि, व्याग्रता और स्वजनों से कलह हो परन्तु अन्त्य भाग में फल जानिये और आदि में सुख होता है । यह पिंगला का फल है ।

धान्या दशा फलमाह

धनधान्य वृद्धि धरानाथमान्यं, सदा युद्धभूमौ जयंधैर्यवन्तम् ।
कलत्राङ्गनानां सुखं चित्र वस्त्रै युतंधान्य का धातु बृद्धिं करोति ॥

अर्थ—धन धान्य बृद्धि राजाओं में मान, और युद्ध में जय करे धैर्य करे स्त्री को सुख करे, और चित्र विचित्र वस्त्रों से युक्त करे तथा धातु की बृद्धि करे, यह फल धान्या दशा का समझना ।

भ्रामरी दशा फलम्

विदेशे भ्रमणं हानिमुद्वेगता च, कलत्राङ्गपीडा सुखैर्वर्जितं च।
ऋणं व्याधि वृद्धि तथा भूप कोपं दशा भ्रामरी भोगभङ्गं करोति ॥

अर्थ—विदेश में भ्रमण करे हानि हो उद्वेग हो स्त्री को पीड़ा हो ऋण तथा व्याधि वृद्धि हो तथा राजा कोप करे यह फल भ्रामरी का है।

भद्रिका दशा फलम्

धनानां विवृद्धि गुणानां प्रकाशं, समीचीन वस्त्रागमं राजमानम्।
अलंकार दिव्याङ्गना भोग सौख्यं, दशाभद्रिका भद्रकाय करोति ॥

अर्थ—धन की वृद्धि, और गुण का प्रकाश करे, समीचीन वस्त्रों का आगम हो राज मान हो, अलंकार अर्थात् भूषण तथा दिव्य स्त्रियों का आगम हो, और भोग सुख हो, भद्रिका सदा कल्याण करे।

उल्का दशा फलम्

जनानां विवादं ज्वराणां प्रकोपं धनादिष्ट दारादिकानांवियोगम्।
स्वगोत्रे विवादं सुहृद बन्धु वैरं दशा चोल्किकाऽनर्थ कर्त्री सदैव ॥

अर्थ – जनों से विवाद करे, ज्वरों का कोप हो, धन वा इष्ट तथा स्त्री आदिकों से वियोग करे, और अपने गोत्र में विवाद करे, मित्र से वैर करे, और सदा अनर्थ करे यह उल्का का फल जानिये।

सिद्धा दशा फलम्

राज्ञोऽधिकारं स्वजनादि सौख्यं, धनादि लाभं गुण कीर्ति सिद्धिम्।
वामादि लाभं सुत वृद्धि सौख्यं विद्यां च सिद्धा प्रकरोति पुंसाम् ॥

अर्थ—राज्य का अधिकार हो, स्वजनादिकों से सुख हो, धनादि का लाभ हो गुण कीर्ति और सिद्धि हो, तथा स्त्री लाभ हो, सुत वृद्धि का सुख हो, और विद्या सिद्धि हो, यह फल सिद्धादशा का है।

सङ्कटा दशा फलम्

जनानां विवादं ज्वराणां प्रकोपं, कलात्रादिकष्टं पशूनांविनाशम् ।
गृहे स्वल्प वासं प्रवासाभिलाषं, दशा संकटा सङ्कटं राज पश्चात् ॥

अर्थ—जनों से विवाद हो ज्वरों का कोप हो, कलत्रादिकों को कष्ट हो, घर में थोड़ा वास हो और विदेश की बहुत इच्छा हो और राजा से संकट हो, यह संकटा दशा का फल होता है ।

जातका ध्यायः

अथ द्वादश भाव ज्ञान माह

तनुधनञ्च भ्राता च सुहृत्पुत्रो रिपुः स्त्रियः ।
मृत्युश्च धर्मः कर्माप्तो व्ययोभावाः प्रकीर्तिताः ॥

अर्थ— तनु, धनु, भ्रातृ, मित्र पुत्र, शत्रु, स्त्री, मृत्यु, धर्म, कर्म, आय व्यय ये बारह भाव कहे जाते हैं ।

चतुर्थ पंचम नवमानां संज्ञा

पाताल हिबुक वेश्म सुख बन्धु सञ्ज्ञाश्चतुर्थभावस्य ।
भाव पञ्चमे त्रिकोणं नवमं त्रित्रिकोणञ्च ॥

अर्थ—चतुर्थ, चौथे स्थान को पाताल हिबुक वेश्म (घर के सम्पूर्ण पर्याय वाची शब्द) सुख और बन्धु नाम हैं, एवं नववें और पांचवें इन दोनों स्थानों को त्रिकोण और केवल नवम को त्रि त्रि कोण कहते हैं ।

तृतीय पंचम सप्तमाष्टम द्वादशानां संज्ञा

धीः पंचमं तृतीयं दुश्चिक्यं सप्तमं तु जामित्रम् ।
द्यूनं द्यूनं च तद्वच्छिद्रमष्टमं द्वादशं रिःफम् ॥

अर्थ—पञ्चम को धी, (बुद्धि वाची शब्द) तृतीय को दुश्चिक्य,

सप्तम को यामित्र, धून धुन, आठवें भाव को छिद्र द्वादश भाव को रिष्फ कहते हैं।

केन्द्रादि संज्ञा

केन्द्र चतुष्टय कण्टक लग्नाऽस्त दशम चतुर्थानाम्।
संज्ञा परतः पणफरमापोक्लीमं च तत्परतः॥

अर्थ—लग्न सातवां दशवां और चौथा इन स्थानों को केन्द्र चतुष्टय कण्टक कहते हैं, केन्द्र के बाद, द्वितीय पञ्चम अष्टम एकादश को पणफर कहते हैं, तीसरा छटवां नवमां बारह वां को आपोक्लिम कहते हैं।

उपचय वर्गोत्तम लक्षणम्

त्रिषडेकादशदशमान्युपचयभावान्यतोऽन्यथोऽन्यानि।
वर्गोत्तमा नवांशाश्चरादिषु प्रथम मध्यान्त्याः॥

अर्थ—तीसरा छटवां और ग्यारह वां इन स्थानों को उपचय स्थान कहते हैं इससे अन्य (जन्म द्वितीय चतुर्थ पञ्चम सप्तम अष्टम नवम द्वादश) इन स्थानों को अपचय कहते हैं, चरादि राशियों में प्रथम, मध्य, पंचम, और अंत्य क्रम से वर्गोत्तम नवमांश कहे गये हैं अर्थात् चर राशि में प्रथम नवमांश, स्थिर राशियों में मध्यम (पंचम) नवमांश और द्विस्वभाव राशियों में (अन्तिम नवम नवमांश) वर्गोत्तम होता है।

राशीनां दिन रात्रि बल शीर्षोदयत्व पृष्ठोदयत्वम

मेषाद्याश्चत्वारः सधन्वि मकराः क्षपा बलाज्ञेयाः।
पृष्ठोदया विमिथुनाः शिरसान्ये ह्युभयतो मीनाः॥

अर्थ—मेष वृष मिथुन कर्क धनु और मकर ये राशियां रात्रि बली होती है, अर्थात् रात्रि संज्ञक हैं, मिथुन को छोड़ कर वे ही (मेष वृष, कर्क, धनु, मकर,) राशियां पृष्ठोदय संज्ञक हैं शेष (मिथुन सिंह

कन्या तुला वृश्चिक कुम्भ) शीर्षोदय संज्ञक है मीन उभयोदय पृष्ठोदय शीर्षोदय) संज्ञक है।

ग्रहाणां बलाबलाध्याय:

आत्मा रविः शीत करस्तु चेतः सत्वंधराजः शशिजोऽथनाणी।
ज्ञानं सुखं चेन्द्र गुरुर्मदश्च शुक्रः शनिः कालनरस्य दुःखम्॥
आत्मादयोगगनगैर्बलिभि बलवत्तरा।
दुर्बलै दुर्बला ज्ञेया विपरीतः शुभस्मृतः॥
राजा रविः शशधरश्च बुधः कुमारः।
सेनापतिः क्षितिसुतः सचिवौसितेज्यौ॥
मृत्युस्तथा तरणिजः सबला ग्रहाश्च।
कुर्वन्ति जन्म समयेनिजमेवरूपम्॥

अर्थ—काल पुरुष का सूर्य आत्मा, चन्द्रमा, मन मंगल सत्व, बुध वाणी ज्ञान, बृहस्पति सुख, शुक्र वीर्य; और शनि दुःख है-सूर्यादि ग्रहः बलवान हो, इस मनुष्य का आत्मा, इत्यादि बलवान होते ह, २ जैसे सूय बलवान हो तो, उस मनुष्य की आत्मा चन्द्रमा हो तो मन बलवान होता है, इत्यादि अन्य ग्रहों को समझना शनि में विपरीत समझना शनि निर्बल हो तो दुःख की हानि सबल हो तो दुःख की वृद्धि करता है ३ रवि और चन्द्रमा, राजा बुध राज कुमार, मङ्गल सेनापति, बृहस्पति, शुक्र ये दोनों मन्त्री और शनि भृत्य (नौकर) है, जन्म समय जो ग्रह बलवान हो वह अपने सदृश रूप को बनाता है।

प्राच्यादि स्वामिनः

भानुः शुक्रः क्षमा पुत्रः सैंहिकेयः शनिःशशी
सोम्यस्त्रिदश मन्त्री च प्राच्यादि दिगधीश्वरा

अर्थ—पूर्वादि दिशाओं के सूर्यादि ग्रह क्रम से स्वामी होते हैं पूर्व के सूर्य अग्नि कोण के स्वामी शुक्र, दक्षिण के स्वामी मंगल नैऋत्य

के स्वामी राहु, पश्चिम दिशा के स्वामी शनि, वायव्य के चन्द्रमा और उत्तर दिशा का स्वामी बुध, ईशान कोण के स्वामी गुरु होते हैं।

चन्द्र बलमाह

मासेतु शुक्ल प्रतिपत्प्रवृत्ते राहो शशी मध्यवलोदशाहे
श्रेष्ठो द्वितीयोऽल्प वलस्तृतीये सौम्यैस्तु दृष्टो बलवान सदैव

अर्थ—शुक्ल प्रतिपदा से लेकर १० दिन पर्यन्त अल्पवली २० दिन पर्यन्त मध्य बली २० से ३०तीस तक पूर्णवली चन्द्रमा होता है सौम्य ग्रहों के साथ सदाबली माना जाता है, अथवा दृष्ट हो "पापो ग्रहों के साथ पापी होता है, मंगल शनि सूर्य इन के साथ बुध बृहस्पति शुक्र इनके साथ सौम्य कहलाता है चन्द्रमा।

आधाने मैथुन ज्ञानम्

आधानेऽस्त गृहे यत्तस्त्रीलो मैथुने पुमान् भवति
सायासमधुत वीक्षिते विदग्धं शुभैरस्ते

अर्थ—गर्भाधान के समय अथवा प्रश्न के समय जो लग्न उदय हो उससे सप्तम भाव में गत राशि का जैसा स्वभाव के तरह मनुष्य मैथुन में प्रवृत होता है, जैसे प्रश्न लग्न से सप्तम में मेष राशि हो तो मनुष्य मेष के सदृश मैथुन करता है वृष हो तो वृष के सदृश मैथुन करता है। सप्तम राशि यदि पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो मनुष्य का मैथुन प्रयास खेद युक्त होता है, सप्तम यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो प्रेम पूर्वक हाव भाव कटाक्ष युक्त हासविलास सीत्कार युक्त हुआ।

दीप ज्ञानं

सौरांशेकमांशे वाचन्द्रः सौरान्वितोऽथ हिवुकेवा
शांतो दीपो जन्मन्याधाने प्रश्न कालेवा

अर्थ—जन्म समय अथवा गर्भाधान समय में वा प्रश्न काल में यदि १ शनि के नवमांश अर्थात् मकर या कुंभ के नवमांश में चन्द्रमा

हो, २ अथवा जलचर राशि कर्क या मीन के नवमांस में चन्द्रमा हो हो ३ या चन्द्रमा किसी स्थान में स्थित होकर, शनि से युक्त हो, अथवा ४ चन्द्रमा (जन्म आधान प्रश्न लग्न से चतुर्थ स्थान में स्थित हो, इन चारों योगों में से कोई योग हो तो दीपक शांत रहता है अन्धकार में जन्म तथा (मैथुनादि) और उपरोक्त चारों योगों में यदि चन्द्रमा सूर्य से युक्त हो तो दीपक जलते हुये, अर्थात् उजाले में जन्म कहना।

सूतिकाल ज्ञानमाह

उदयति मृदुभांशे सप्तमस्थे चमन्दे
यदि भवतिनिषेकः सूतिरब्दत्रयेण
शशिनितु विधिरेष द्वादशाऽब्दे प्रकुर्या
न्निगदित मिह चिन्त्यं सूतिकालेऽपियोगाः

अर्थ—लग्न में शनि का नवमांश हो, और आधान लग्नसे सप्तम भाव में शनि बैठा हो, ऐसी स्थिति में गर्भाधान हो तो तीन वर्ष के बाद प्रसव होता है एवं यदि लग्न में कर्क का नवमांश हो और सप्तम भाव में चन्द्रमा बैठा हो तो १२ वर्ष में प्रसव होता है।

गर्भ सम्भवा सम्भव ज्ञानम्

बल युक्तौ स्वगृहांशेर्ष्वकसितावुपचयर्क्षगौपुंसाम्।
स्त्रीणां वा चन्द्रौ यदा तदा गर्भ सम्भवोभवति॥

अर्थ—आधान काल में सूर्य और शुक्र ये दोनों ग्रह अपने राशि या नवमांश में होकर पुरुष के, जन्म लग्न या जन्मराशि से उपचय (३।६।१०।११) स्थान में पड़े हो और बल युक्त हों अथवा मंगल और चन्द्रमा अपने २ राशि या नवमांश में होकर, स्त्री के जन्म राशि से उपचय (३।६।१०।११) स्थान में बैठे हों और बलवान हों तो गर्भाधान की संभावना होती है।

गर्भसुत-कन्या ज्ञानम्

विषमर्क्षे विषमांशे संस्थिताश्च गुरुशशांकलग्नार्काः ।
पुंजन्मकराः समभेषु योषितां समनवांशगताः ॥

अर्थ—विषम (मेष, मिथुन, सिंह, तुला, कुम्भ,) राशियों में अथवा विषम राशि के नवमांश में बृहस्पति, चन्द्रमा, लग्न, और सूर्य ये चारों ग्रह बैठे हों तो पुत्र का जन्म कहना, यदि सम (वृष कर्क कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन,) राशियों में अथवा समराशियों के नवमांश में बृहस्पति चन्द्रमा लग्न और सूर्य पड़े हों तो, स्त्री का, जन्म देने वाले होते हैं ।

यमल सम्भव ज्ञानम्

बलिनो विषमेऽर्क गुरु नरं स्त्रियं समग्रहे कुजेन्दु सिताः ।
यमले द्विशरीरांशेष्विन्दुज दृष्टया स्वपक्षसभो ॥

अर्थ—सूर्य और बृहस्पति, बल युक्त होकर, विषम, (मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुम्भ.) राशि में बैठे हों, तो गर्भ में पुत्र कहना, मंगल चन्द्रमा शुक्र ये तीनों ग्रह, यदि समराशि में पड़े तो गर्भ में कन्या है, ऐसा कहना, सूर्य बृहस्पति, मंगल, चन्द्रमा, और शुक्र ये ग्रह द्विस्वभाव (मिथुन कन्या, धनु, मीन,) राशिया, द्विस्वभाव राशि के नव मांश में पड़े हों, और बुध से देखे जाते हैं। तो अपने पक्ष के यमल पैदा करते हैं, अर्थात् पुरुष (मिथुन-धनु) के नवमांश, में सूर्य बृहस्पति स्थित हों, और उनको बुध देखता हो तो दोनों यमल पुत्र होते हैं, कन्या, मीन, राशिमें या, उनके नवमांश में मंगल चन्द्रमा शुक्र पड़े हों किसी स्थान में स्थित बुध से देखे जाते हों तो यमल कन्यायें ऐसा कहना, उक्त पांचों ग्रहों में कुछ ग्रह राशि नवमांश में हो और कुछ ग्रह समराशि नवमांश में बैठे हों और बुध से देखे जाते हों तो गर्भ में एक पुत्र और १ कन्या कहना ।

जातक स्वरूप ज्ञान माह

पूर्वं विलग्ने यादृङ्-नवभागास्तादृशी भवति मूर्तिः ।
योवा ग्रहो बलिष्ठस्तत्काले तादृशी वाच्या ॥

अर्थ—जन्म कालिक लग्न में जैसा नवमांश हो, वैसी आकृति मनुष्य की होती है, अथवा जन्म समय जो ग्रह बलिष्ठ हो, उसके सदृश मनुष्य की मूर्ति होती है।

जातस्यपितुः परोक्षोऽपरोक्षो वा जन्म ज्ञान माह

चन्द्रे लग्नमपश्यति मध्येवा शुक्र सौम्ययोश्चन्द्रे ।
जन्म परोक्षस्य पितुर्यमोदये वा कुजे वाऽस्ते ॥

अर्थ—१ चन्द्रमा लग्न को न देखता हो (२) या चन्द्रमा शुक्र और बुध के बीच में स्थित हो, (३) वाशनिश्चर लग्न में बैठा हो, (४) अथवा मंगल लग्न से सप्तम भाव में बैठा हो, तो पिता के परोक्ष में (परदेश इत्यादि जाने पर) बालक का जन्म होता है।

सूतिका गृहद्वार ज्ञानं दीपज्ञानंच

द्वारं वास्तुनिकेन्द्रोपगाद् ग्रहादसति वाविलग्नर्क्षात्
दीपोऽर्कादुदयाद्वर्तिरिन्दुतः स्नेहनिर्देशः

अर्थ—जन्म समय में जन्म लग्न से केन्द्र में जो ग्रह बैठा हो, वह जिस दिशा का स्वामी हो, उसी दिशा में सूतिका, गृह का द्वार होता है। यदि बहुत से ग्रह केन्द्र में बैठे हों तो उन ग्रहों में जो सब से बलवान हो उसकी दशा और सूतिका गृह का दरवाजा होता है, किसी आचार्य के मत से लग्न में जो द्वादशांश हो, उस राशि की दिशा में सूतिका गृह का द्वार होता है, यदि केन्द्र में कोई गृह न हो तो, जन्म लग्न की राशि की दिशा के तरफ सौरी का घर का द्वार होता है, सूर्य से दीपक का ज्ञान करना, जैसे यदि सूर्य चरराशि में हो तो दीपक भी चर (हाथ

में) रहता है। सूर्य स्थिर राशि में हो तो दीपक स्थिर रखा हुआ समझना, एवं द्विस्वभाव राशि में हो तो दीपक एक स्थान से उठाकर दूसरी जगह पर रखा गया कहना, लग्न से बत्ती का ज्ञान करना, लग्न का, आरम्भ हो तो दीपक में पूरी वर्ती समझना, एवं लग्न का अन्त हो तो, वर्ती पूरी जली जानना, बीच में अनुपात से समझना, चन्द्रमा से तेल का ज्ञान समझना, जैसे चन्द्रमा के राशि का प्रारम्भ हो तो दीप में पूर्ण तेल समझना, राशि का अन्त हो, तो थोड़ा तेल हो तो बीच में अनुपात से समझना चाहिए।

सूतिका खटवा ज्ञानमाह

षट्त्रिनवान्त्याः पादाः खटवाङ्गाऽयन्तराल वनानि
विन तल्प यमलर्क्षैः क्रूरैस्तत्तुल्यमुपघातः

अर्थ—जन्म लग्न से षष्ठ तृतीय, नवम, द्वादश, राशि खट्वा (चारपाई) के पावा होते हैं, जिस लग्नमें जन्म हो, वह लग्न (राशि) जिस दिशा की उस दिशा में शय्या का शिर होता है, जन्म लग्न से तृतीय राशि शिर होने का दक्षिण पावा, द्वादश राशि शिरहोने का बांया पावा जानना, एवं षष्ठ राशि शैया के पैतान का दक्षिण पावा, नवम राशि पैताने का बायां पावा समझना, और (६।३।६।१२)इन राशियों के बीच की (लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, पञ्चम, सप्तम, अष्टम दशम, एकादश, में) राशियां चारपाई के अंग हैं अर्थात् लग्न और द्वितीय, राशि चारपाई का, शिर, चतुर्थ, पञ्चम राशि दक्षिण भाग, (दाहिनी पाटी) सप्तम अष्टम, पैताने की (पाटी) तथा दशम, एकादश, स्थान बायें तरफ की पाटी, समझना, द्विस्वभाव राशि (मिथुन कन्या धनु, मीन, राशि, जिस भाग में पड़े हों, चारपाई का वह भाग, नत; ऊंचा नीचा होता है।

जिस अङ्ग (राशि में) क्रूर ग्रह वर्तमान हो, शय्या के उस अङ्ग में उपघात (टूटने इत्यादि का चिन्ह) होता है (यदि सूर्य बैठे हो तो

वह अङ्ग कमजोर होता है, जिस अङ्ग में मङ्गल पड़े हो, वह अङ्ग जला हुआ हो, एवं शनि, स्थित, हो तो वह अङ्ग जीर्ण पुराना होता है,) यहां इतना विशेष है कि यदि द्विस्वभाव, राशियां शुभग्रह या अपने स्वामी से युत हो तो चारपाई का भाग उंचा नीचा नहीं होता, एवं क्रूर ग्रह अपनी, राशि, अपने उच्च, अपने मूलत्रिकोण अपने मित्र ग्रह की राशि में पड़ा हो तो शय्या का भाग उपघात नहीं होता।

परजातस्य ज्ञानम्

पापयुतोऽर्कः सेन्दुःपश्यति,होरां न चन्द्रमपि जीवः
पश्यति सार्कनेन्दुं यदि जीवो परैर्जातः

अर्थ—(१) सूर्य पाप ग्रह, और चन्द्रमा से युक्त होकर किसी स्थान में बैठा हो, (२) लग्न तथा चन्द्रमा को बृहस्पति न देखता हो, (३) सूर्य से युक्त चन्द्रमा को गुरु न देखता हो तो बालक दूसरे पिता से पदा समझना।

नालवेष्टितादि ज्ञानमाह

छागसिंह वृषैर्लग्ने तत्स्थे सौरेऽथवाकुजे
राश्यंस सदृशेगात्रे जायते नालवेष्टितः

अर्थ—मेष,सिंह, वृष, जन्मलग्न हो और उसमें (लग्न में) शनि या मंगल बैठा हो, तो उस लग्न जिस राशि का नवमांश हो, उस राशि के अङ्ग में जन्म लेने वाला बालक नालवेष्टित होता है

उपसूतिका ज्ञानम्

शशि लग्नान्तर संस्थग्रह तुल्याः सूतिकाश्च वक्तव्याः
उदगर्धेऽभ्यन्तरगा वाह्याश्चक्रस्य दृश्येऽर्धे

अर्थ—चन्द्रमा और लग्न के बीच में जितने ग्रह हों उतने ही उपसूतिका सूतिका की सहायक स्त्रियां होती हैं जो ग्रह अपने वर्गोत्तम अपनी राशि, अपने द्रेष्काण अपने नवमांश में बैठा हो तो, उपसूति-

कामों की संख्या द्विगुणित होती है, जो ग्रह वक्री याउच्चस्थ हो तो त्रिगुणित संख्या प्राप्त हो, सूतिका, उपसूतिका जातिवय वर्ण स्वरूप इत्यादि उन ग्रहों के सदृश होता है, लग्न और चन्द्रमा के मध्यवर्ती ग्रहों में से जितने ग्रह अदृश्य चक्रार्ध में पड़े हों उतनी उपसूतिकायें घर के अन्दर और जितने ग्रहदृश्य चक्रार्ध में हों उतनी स्त्रियां सूतिकागार के बाहर समझना।

शुभ योगः

मूर्तौ शुक्र बुधौयस्य केन्द्रे चैव वृहस्पतिः
दशमेऽङ्गारको यस्य सज्ञेयः कुल दीपकः

अर्थ---जिसके जन्म लग्न में शुक्र, बुध, केन्द्र प्रथम चतुर्थ सप्तम दशम, इन स्थानों में गुरु हो, और दशवें स्थान में मंगल हो तो बालक कुलदीपक होता है।

अशुभयोगः

नैव शुक्रो बुधो नैवनास्ति केन्द्रे वृहस्पतिः
दशमेऽङ्गार को नैव सजातः किं करिष्यति

अर्थ जिस बालक के लग्न में शुक्र, बुध अथवा केन्द्र में बृहस्पति किंवा दशवें मंगल नहीं है उसका जन्म व्यर्थ है।

माता पिता भयप्रद योगः

षष्ठे च द्वादशे स्थाने यदा पापग्रहो भवेत्
तदा मातृभयं विद्याच्चतुर्थे दषमे पितुः

अर्थ—जो छटे किंवा, बारहवें स्थान में पाप ग्रह हों तो माता को अशुभ, किंवा, चौथे अथवा दशवें स्थान में पाप ग्रह होवें तो, पिता को अशुभ समझना।

पिता नाश योगः

लग्न स्थाने यदासौरिः षष्ठे भवति चन्द्रमाः
कुजस्तु सप्तम स्थाने पिता तस्य न जीवति

अर्थ—जिसके जन्म लग्न में शनैश्चर, और छटवें स्थान में चन्द्रमा सातवें स्थान में मङ्गल हो, उस बालक का पिता न जीवे।

माता नाश योगः

रसातलस्थौ यदि भानु चन्द्रौ शनिः स्मरस्थो मरणायमातुः
यदा यदा क्रूरखगो विलग्नादरातिगः सोदरनाशहेतुः

अर्थ—यदि सूर्य चन्द्रमा चतुर्थ स्थान में स्थित हों और शनि सप्तम में हो तो माता की मृत्यु कहे, यदि लग्न से छटे स्थान में क्रूर ग्रह हो तो भाई के नाश का कारण होता है।

सगर्भा मृत्यु योग

सभानुजे शीतकरे विलग्नाद् दिवाकरे रिःफ गृहोपयाते
धरासुते वन्धु गतेतदानीं विपद्यते तजननी सगर्भा

अर्थ—शनि के साथ, चन्द्रमा, और सूर्य बारहवें में हों, मङ्गल चौथे में हो तो उसकी माता गर्भ के साथ मरे।

अथाष्टम वर्ष मृत्युयोगः

भौमक्षेत्रे यदाजीवः षष्ठाष्ठासुच चन्द्रमाः
वर्षेऽष्ठमेऽपि मृत्युर्वै ईश्वरो रक्षितायदि

अर्थ—मङ्गल के घर में गुरु और छटे, आठवें, चन्द्रमा हो तो, आठवें वर्ष ईश्वर रक्षित भी बालक मृत्यु को प्राप्त हो।

दारिद्र्य योगः

क्रूरश्चतुर्षु केन्द्रेषु तथा क्रूरौ धनेऽपिवा
दारिद्र योगं जानीयात्स्व वंशस्य क्षयंकरः

अर्थ--क्रूर ग्रह चारों केन्द्र १।४।७।१० स्थान में हो, और धन स्थान में क्रूर ग्रह बैठा हो, तो दारिद्र योग जानिए।

मृत्यु योगः

चतुर्थे च यदा राहु षष्ठे चन्द्रोऽष्टमेपिच
सद्यएव भवेन्मृत्युः शंकरोयदि रक्षति

अर्थ--जिसके चौथे स्थान में राहु और छटे अथवा आठवें स्थान में चन्द्रमा हो तो, बालक यदि महादेव जी भी रक्षा करें तो भी शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो जावे।

द्वितीय प्रकारेण मृत्युः योगः

क्षीण चन्द्रो व्ययस्थाने पाप लग्ने स्मरेऽष्टमे
शुभैश्चरहिते केन्द्रे शीघ्रं नश्यति बालकः

अर्थ--क्षीण चन्द्र बारहवें स्थान में हो अथवा पापग्रह के स्थान में हो अथवा सातवें तथा आठवें हो और शुभग्रह केन्द्र में न हो तो जन्म होते ही बालक की मृत्यु जानना।

जाति भ्रंशकारक योगः

धन स्थाने यदा सौरिः सैंहिकेयोधरात्मजः
गुरु शुक्रौ सप्तमेच स्वष्टमे चन्द्रभास्करौ
ब्राह्मणस्य पदेचापि वेश्यासु चसदारति
प्राप्ते विंशतिमे वर्षेच्छ भवतिनान्यथा

अर्थ—जिस बालक के दूसरे घर में शनिश्चर राहु और मङ्गल हो सातवें घर में गुरु, और शुक्र हों, आठवें घर में चन्द्रमा और सूर्य हों तो यदि ब्राह्मण जाति में भी जन्म पावें तो भी वेश्या प्रसंगी हो, और बीस वर्ष की अवस्था में म्लेच्छ होता है।

लग्नेशकृतारिष्ट भंगयोगः

लग्नाधिपोऽति बलवान शुभैरदृष्टः, केन्द्रस्थितैःशुभखगैरवलोक्यमानः
मृत्युं विधूय विदधाति सदीर्घमायुः सार्धंगुणैर्बहुभिरूर्जितया चलक्ष्मया

जन्म लग्न का स्वामी, अत्यन्त बलवान होकर, पाप ग्रहों की दृष्टि से रहित और केन्द्र में (१।४।७।१०) पड़े हुए शुभ ग्रहों की दृष्टि से युक्त हो तो मृत्यु को नष्ट करके अनेक गुणों से युक्त बड़ी सम्पत्ति के साथ अत्यन्त दीर्घायु देता है।

राहुकृतारिष्ट भंग

राहु स्त्रिषष्ठलाभे लग्नात्सौम्यैर्निरीक्षितः सद्यः
नाशयति सर्वं दुरितं मारुत इवतूलसंघातम्

अर्थ—जन्म लग्न से तीसरे छठे ग्यारहवें राहु बैठा हो, और शुभ ग्रहों से देखा जाता हो तो रुई के समूह को प्रबल वायु की तरह सब कष्टों का नाश करता है।

पञ्चमे च निशानाथस्त्रिकोणे यदिवाक्पतिः
दशमेच रुद्रासूनुः परमायुः सजीवतिः

अर्थ—लग्न से पांचवें स्थान में चन्द्रमा त्रिकोण में गुरु और दशवें मङ्गल हो तो एक सौ बीस १२० वर्ष की दीर्घायु जानिये।

अंगहीनयोगः

लग्नाद्दशमश्चन्द्रः सप्तमस्थो धरासुतः
द्वितीय स्थानगोभानुः अङ्ग हीनोभवेन्नरः

अर्थ—चन्द्रमा लग्न से दशवें में हो, मङ्गल सप्तम में हो, सूर्य दूसरे भाव में हो तो मनुष्य अंग हीन होवे।

अंध योगः

रवि शशियुते सिंहे लग्ने कुजशनि निरीक्षिते
नयन रहितः सौम्यासौम्यैः सबुदबुद्लोचन
व्ययगृहगतश्चन्द्रो वामं हिनस्त्यपरं रवि
नंशुभगदिता योगा याप्या भवानि शुभेक्षिताः

अर्थ—सिंह लग्न में सूर्य और चन्द्र हों, उन्हें मङ्गल शनि देखते हों तो वह बालक नेत्र रहित हो, यदि शुभ ग्रह और पाप ग्रह दोनों देखते हों, तो बुद बुद नेत्र हों, व्यय में चन्द्रमा हो तो वाम नेत्र की हानि करे और सूर्य हो तो दक्षिण नेत्र की हानि करे, अशुभ ग्रहों के देखने से यह योग होते हैं शुभ ग्रह देखने से न्यून योग होते हैं।

राज्य योगः

धर्म कर्माधिनेतारावन्योन्याश्रय संस्थितौ
राज योगा वेति प्रोक्तौ विख्यातो विजयीभवेत्

अर्थ—नवें स्थान का स्वामी दशवें का स्वामी नवें हो, तो राज्य योग होता है।

अन्य राजयोगः

नीचङ्गतो जन्मनियो ग्रह स्यामेंद्राशि नाथोऽपि तदुच्चनाथः
सचन्द्र लग्नाद्यदि केन्द्रवर्ती राजाभवेद्धार्मिक चक्रवर्ती

अर्थ—जिसके जन्म के समय जो ग्रह; नीच राशि में प्राप्त हो, उस नीच राशि का स्वामी, या उस ग्रह के उच्च स्थान का स्वामी, लग्न से वा चन्द्रमा से केन्द्र में स्थित हो तो वह धर्मात्मा और चक्रवर्ती राजा होता है।

अन्ययतम्

त्रिभिः स्वस्थैर्भवेन्मन्त्री त्रिभिरुच्चैर्नराधिपः ।
त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासस्त्रिभि रस्तंगतैर्जडः ॥

अर्थ—तीन ग्रह अपने घर के हों तो मन्त्री, तीन ग्रह उच्च के हों तो राजा, तीन ग्रह नीच के हो तो दास और तीन ग्रह अस्तगत हों तो जड़ हो ।

मारकेश ज्ञानम्

अष्टमं ह्यायुषः स्थानमष्टमादष्टमं च यत् ।
तयोरपि व्ययस्थानं मारक स्थान मुच्यते ॥

अर्थ - जन्म लग्न से आठवां स्थान व अष्टम स्थान से आथवां स्थान आयुष्य का स्थान कहा जाता है, इन दोनों स्थानों का बारहवां स्थान अर्थात् लग्न से सप्तम और द्वितीय स्थान मारक स्थान कहा जाता है, इनकी दशा व अन्तर्दशा, विशोत्तरी में मृत्यु वा मृत्युभय जानना, तथा अष्टमेश की दशा में मृत्यु सम्भव जानना ।

कफ	वात	पित्त
चन्द्र	शनि	रवि
बुध	चन्द्र	मंगल
शुक्र	शुक्र	गुरु
शनि	राहु	
गुरु	केतु	

ज्योतिष् शास्त्र में तिथि, वार, नक्षत्र आदि, तथा योग सब वर्णन किये हुए हैं अतः इन्हें उचित समझ कर ग्रहों से रोग निश्चय करना लिखते हैं—अमुक वार, तिथि, नक्षत्र अथवा योग पर यदि कोई रोग उत्पन्न हुआ तो साध्यासाध्य तथा कितने दिवस पश्चात् अच्छा हो जायगा आदि का वर्णन करते हैं । मारक दशा अन्तरदशा

बहुत काल तक रहती है उससे अमुक मास में कष्ट अधिक है, इसे समझने के लिये शास्त्रकारों ने जिस दिन रोग की उत्पत्ति हो उसी से साध्यासाध्य विचारना कहा है। जिस नक्षत्र में रोग उत्पन्न हुआ है उस नक्षत्र पर पाप ग्रह का वेध हो तो शीघ्र अच्छा नहीं होता उसमें यदि शुभ ग्रह या चन्द्र हो या जन्म की राशि या लग्न या लग्नेश उसमें हो तो पीड़ा ज्यादा होती है। यदि जन्म लग्न से मारकेश, व्ययेश अष्टमेश का पाप ग्रह से कठिन वेध हो तो मृत्यु निश्चय जानो। यदि वह नक्षत्र शुभ ग्रह से दृष्ट न हो या जिस समय रोग हुआ उस समय लग्न में बली शुभग्रह हो तो अच्छा हो जायगा।

चन्द्र गुरु का यदि जीव योग हो तो केन्द्रवर्ती ग्रह बली हो तो अच्छा हो। पुश्नलग्न तथा रोग उत्पन्न लग्न में गुरु चन्द्र कारक योग हो पाप दृष्ट न हो और बली केन्द्रवर्ती लग्न शुभ दृष्ट हो तो सन्निपात भी अच्छा हो जाता है और इसी लग्न में मारक या अष्टम में पाप ग्रह हों तथा छटे बारहवें भाव में शुभ ग्रह हों तो मृत्यु निश्चय जानो। यदि लग्नेश तथा चन्द्र भी निर्बल केन्द्र त्रिकोण रहित स्थान में हो तो मृत्यु जानो।

वेध का रोग में अवश्य निश्चय करना चाहिये। यदि नक्षत्र वेधन हो तो मुहूर्त के बाद तबियत अच्छी हो जायगी।

सर्वतो भद्रादि ग्रन्थों में सविस्तार वेध वर्णन हैं तिथिवेध नामाक्षरवेध, स्वरवेध, राशिवेध, नक्षत्रवेध यह पांच मुख्य वेध बताये हैं। रोग का साध्यासाध्य विचारने के लिये नक्षत्रवेध मुख्य लिया है। जन्मनक्षत्र नामनक्षत्र रोगोत्पत्तिनक्षत्र तथा नामराशि व जन्मराशि

से ही रोग का साध्यासाध्य जाना जा सकता है। शुभ ग्रह का वेध शुभ माना है और वक्रग्रह और हो तो अति शुभ माना है। पापग्रह वक्रग्रह हो तो उसका अति कष्टदायक मृत्युकारी माना है। शुभग्रह पापग्रह से युक्त हो तो उसे भी अशुभ कहा है। बुध पापग्रह से युक्त हो तो पापी होता है। कृष्ण पक्ष का चन्द्रमा हो के वेध करे तो अति अशुभ होता है यहां तक कि तत्क्षण मृत्युकारक हो जाता है। नक्षत्रों में एक को भी पापग्रह न वेधे तो कुछ शुभफल करते हैं। अथवा शुभग्रह जन्म के म.केश व्ययेश या अष्टमेश न हों तो भी शुभफलदायक हैं। यह मेरी अनु- भव सिद्ध है।

रोग काले भवेद्वेधः क्रूर खेचर सम्भवः ।
वक्रगत्या भवेन्मृत्युः शीघ्रगत्वारुजान्वितः ॥

यदि रोग के समय क्रूर ग्रह का वेध वक्री गति से हो तो रोगी की मृत्यु निश्चय जानो। शुभग्रह बलवान का योग होतो पीड़ा शीघ्र गति से ग्रह हो तो रोग बना रहता है।

आदित्ये ज्वरपीडास्या भौमश्च प्राण रोगह ।
अपस्मार भयं राहौ मंदे शूल विनिर्दिशेत् ॥

वेध कर्ता यदि रवि हो तो ज्वर से पीड़ा शरीर में दाह शोथ वेध पीड़ा उद्वेग मतिभ्रम क्षयरोग पित्त-प्रकोप से कै रोग की पीड़ा होती है। मंगल हो तो प्राणरोग रक्तविकार फोड़ा-फुन्सी खुजली पेट में गुल्म शरीर में पीड़ा उन्मादि पेट में रोग यकृत प्लीहा होवे। यदि शनि हो तो वायु का फिसाद शूल शरीर का नसों द्वारा जकड़ा जाना। त्रिदोषादि सर्दी विकार होते हैं। राहु केतु हो तो अपस्मार जोड़ों में दर्द मृगी रोग हो। चन्द्र हो तो जलोदर आदि रोग हो।

राशि वेधो भवेद्रोगो मन्दाग्नी वातकोपनं ।
श्लेष्मा न जायते तत्र अन्तर नाड़ी व्यथाभवेत् ॥

यदि नामराशि या व जन्मराशि का वेध क्रूरग्रह से हो तो अनेक प्रकार के रोग होते हैं। मन्दाग्नि, जल अग्नि या चोट-भय अपघात क्रोध प्रकोप कफ का विकार अण्डकोष की बीमारी ज्वरादि त्रिदोष का कष्ट होता है।

कौन-कौन से ग्रह ज्वरादि में क्या-क्या करते हैं

यदि जुकाम या सरदी का ज्वर हो तो गोचर का चन्द्रमा ४।८।१२ में शुभ युक्त तथा नक्षत्र वेध रहित हो व लग्नेश गोचर में अच्छा न हो तो जुकाम तीन दिन में अच्छा हो जाता है। यदि इस चन्द्रमा पर मंगल की दृष्टि हो व एक नक्षत्र पर ही पापग्रह का वेध हो तो जुकाम बिगड़ जाता है, शीघ्र अच्छा नहीं होता। यदि मंगल या सूर्य्य को वेध हो तो जुकाम सूख जाता है और अधिक दिनों तक परेशानी उठानी पड़ती है। शनि का वेध हो तो सर्दी बढ़ती है और ज्वर जल्दी नहीं छूटता। इसी प्रकार तारतम्य से जानना चाहिये वेधकर्ता ग्रह पर बलवान शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो शीघ्र अच्छा हो जाता है। मुद्दती ज्वरों में साध्य सन्निपात के ग्रह होते हैं। शुभग्रह का औषयोग ही से जल्द अच्छा होता है। विषम ज्वर में ७।११।१४।२१ दिनों तक मियाद होती है। कभी-कभी १–२ मास भी लग जाते हैं। खाली विषम ज्वर में शनि की पीड़ा गोचर में रवि, मंगल, गुरु बुरे हों तो शीत ज्वर भी एक दिन के बाद तथा चतुर्थी कहा जाता है।

इसमें रवि या शनि गोचर में शुभ न हों या जन्म लग्न से मारक

स्थान के राशि में हो या लग्न की राशि में या आठवें स्थान की राशि में एक या दो नक्षत्रवेध हों तो उसी समय ज्वर चढ़ जाता है। जन्म में वर्ष में मारक की दशा हो या मार्केश सम्बन्धी ग्रह की दशा हो और मुंथा ६।८।१२ बारहवें स्थान में पापग्रह युक्त हों परन्तु मुन्थेश बली न हो तो यह ज्वर २०-२५ दिन तक चलता है और जो मार्केश की दशा न हो तो जल्दी अच्छा हो जाता है। शनि चन्द्र का जब जब जैसा योग आवेगा वैसी ही वैसी कठिन जूड़ी आवेगी, रोग कफ बात बढ़ जायगा। शुभ दृष्ट होने से जल्दी छुट जायगा। अजीर्ण ज्वर में वेध हो खाली गोचर में मंगल नेष्ट हो तो अपचन से मामूली दो दिन ज्वर आके अच्छा हो जाता है।

मोतीझाला में एक या दो नक्षत्र का वेध होता है। बुध पापाक्रान्त होवे और मंगल की पीड़ा होती है। बुध के होने से मोती के समान सब शरीर पर दाने पड़ जाते हैं। पापी बुध मारकेश अष्टमेश रोगेश का सम्बन्धी हो तो मुद्दती ज्वर मोती झाला में परिणत हो जाता है। शनि बुध राहु केतु के कारण दाने शरीर पर दिखाई देते हैं।

बुध के स्थान में यदि मंगल हो तो माता का निकास होता है। मंगल के कारण फोड़े समान दाने उठते हैं इसी योग से मंथर ज्वर भी होता है। आयु न पूरी हो और शुभ ग्रह का योग हो तो रोग में नाम से भी अवश्य विचार करना चाहिये। सन्निपात तेरह प्रकार के हैं। 'षट साध्या सप्तमारकाः' अर्थात् ६ सन्निपात साध्य व सात मारकेश हैं वैद्यों ने लक्षण से और तथा ज्योतिषियों ने ग्रहों से निश्चय किया है। साध्य सन्निपात दो नक्षत्र के वेध से होता है। जन्म में मार्केश दशा व वर्ष में मुंथा ६।८।१२ में हो ग्रह वर्ष में

खराब हो तो भी त्रिदोष हो के बच जाता है। जन्म में मध्यम या दीर्घायु योग हो और उस अवधि से पूर्व रोग हो तो निश्चय बच जाता है। उसको साध्य निमोनियां कहते हैं। कफ बात का जोर रहता है वर्ष में चन्द्र गुरु का सम्बन्ध युक्त वा दृष्ट हो लग्न या लग्नेश वा चन्द्र को गुरु देखे तो जीव योग होता जो मरने नहीं देता परन्तु कष्ट भोग कर बचा देता है। बालारिष्ट में शनि चन्द्र प्रधान होते हैं। इसमें पस्ली पेट रोग मुद्दती बोखार मोती झाला वलाप भूत किसी स्त्री ने कुछ किया हो बालकों या उसके माता को या नजर पेट के आदि रोग में बालारिष्ट होता है। त्रिदोष भी इनके २ सम्बन्ध से एक दम रोग पैदा होता है। सरदी एकदम पकड़ लेती है। बलवान गुरुलग्न में हो तो पापग्रह लग्नचन्द्र को न देखता हो तो अवश्य बचा लेता है। शुक्र या बुध लग्न में हो तो कम बचता है।

प्रसूतीरोग के ग्रह कारक

वैद्य लोग, प्रसूत के बाद बुखार आने लगता है तब, उसके लक्षण मिलाते हैं तब प्रसूति निश्चय करते हैं ज्योतिष में ग्रह द्वारा तुरत निश्चय हो जाता है जैसे बालक हुआ उसकी कुंडली व नाली और देखलिया इसके माता को प्रसूतिका रोग होने को सम्भव है या नहीं: (इसके अलावा और रोग तपेदिक रोगस्वता के ग्रह से से या पति के ग्रह से हो सकते हैं लेकिन प्रसूति रोग संतान द्वारा ही उपस्थित होता है। साध्यासाध्य माता पिताके तकदीर से हो सकता है। अगर

प्रसूति न होती तो रोग कहांसे उपस्थित होता कुंडली में देखना चाहिये। चतुर्थ स्थान माता का है वो स्थान किस पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट है। क्रूर ग्रहसे युक्त या दृष्ठ है क्रूर ग्रहसे युक्त हो शुभ दृष्ट न हो उसी समय ग्रह महादशा या अंतर्दशा प्रत्यन्तरदशा होतो रोग उपस्थित होने का सम्भव है। माता का लग्नेश रोगेश को देखके पंचमेश को भी देखता में पंचमके सन्बन्ध से गर्भ में लड़का हो या नहो, तो, भी जिस स्त्री को लड़काहुआ भी नहीं है तो वह स्त्री लड़का होने की कोशिश करती हैं। तो वैसे दवाई द्वारा और भी क्रिया स्त्रियाँ करती हैं पुत्र के वास्ते उसकी तबियत बिगड़ जाती है। ऐसे बहुत अनुभव है। इसलिये पंचमेशको अवश्य देखना चाहिये। पाप ग्रह का योग प्रसूति में मुख्य पूर्वरूप में दो ग्रह सूर्य शनि सूर्यसे बुखार आने लगता है। और शनि से देह में पीड़ा होती है कमर में पेट में नसों के द्वारा वायु बिगड़ता है। सूर्यके साथी मंगल भी हो तो बुखार पैठ जाता है खांसी सूखी उपस्थित हो जाती है। शनि के साथी राहु केतु हैं। यही चतुर्थ स्थान में बालक के पीडा कारक होतो अवश्य सूती रोग बढ़ता है। जैसे योग ज्यादा पीड़ा करता हो वैसे रोग बुखार सब जाता है। त्वचा मांस रुधिर गत ज्वर हो तब तक अच्छा होता है रुधिर का मंगल (मास राहु केतु) सूर्य खराब होतो हड्डी में बुखार बैठ जाता है।

शनि शुक्र खराब पीड़ा कारक क्रूर हो वेधी हो तब शुक्रगत

ज्वर हो जाता है। इसको वैद्य शास्त्र असाध्य कहते हैं लेकिन गोचर में शनि शुक्र खराब न होतो बचने की उम्मेद होती है। जन्मादि में खराब हो गोचर में भी खराब हो तो बच सकती नहीं माता पिता की कुंडली से इस तरह ग्रह खराब हों तो (दूसरा प्रकार बचनेका) जैसे बालकके माता स्थान में पाप ग्रह योग होने से प्रसूती रोग उत्पन्न होते हैं। वैसे ही माता के पंचम स्थान में पाप ग्रह योग होने से प्रसूती रोग उत्पन्न होते हैं। वैसे ही माता के पंचम स्थान में पापग्रह क्रूरका योग हो तो उसी प्रसूती के बखत उनकी दशा अनार पुत्यन्तर में गोचर में किसी से भी हो तो माता को मामूली कष्ट होके बच सकती है तपे दिक क्षय में भी इसी तरह योग पास २ हैं। यह कारणसे कार्य उपस्थित होता है आगन्तुक ज्वर में लग्नेश व्ययेश देख लेना पड़ता है। कारण वो हुआ लग्नेश रोगेश सब रोग में देखे जाते हैं पहिले कार्येश अब देखना पड़ता है जिसके द्वारा रोग उपस्थित हुआ। शत्रु द्वारा आदि जिस बालकके चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह शुक्र बुध है। पापरहित गुरु दृष्ट होतो उसके जन्म होने के पहिले माता बीमार होतो वो जन्म होने ही से वो बीमारी सब चली जाती है वे माता रोग से मुक्त हो जाती है कभी रोग न होगा जब तक दूसरा गर्भ नहीं आवेगा।

वैद्यक शास्त्र का मत है प्रसूति होने के बाद कई रोग शान्त हो जाते हैं इसका मुख्य कारण यही है। जो बालक होता है। उसके ग्रह माता के वास्ते सुख कारक अच्छे होते हैं। इससे माता के रोग अच्छे हो जाते हैं। आगन्तुक ज्वर अपघात-से होता है। जैसे गिरने से-चोट से-शास्त्र अग्नि से-जलमें डूबनेसे पापरीक्षा देने में मेहनत से होते हैं।

यह सब बातें षष्ठेश व्ययेश से होती हैं। यदि लग्नेश सम्बन्ध करे तो चन्द्रमा नेष्ट होतो अपघातक नक्षत्र का वेध होतो ु होती है। अथवा जैसा जैसा कम योग हों वैसी वैसी कम पीड़ा कहना।

भूत ज्वर शनि से विचारना। भूत की व वायुकी नाड़ी सदृश चलती है। भूत तथा वायुके कारक शनि राहु केतु हैं। जो भूत नहीं मानते उन्हें वायु का उन्माद कहना। काम ज्वर का विचारे शुक्रसे होता है। शुक्र पापी नेष्ट जैसा हो और उस नक्षत्र को वेध करे तो काम ज्वर पैदा होता है।

असाध्य सन्निपात

पर लिखे हुए ग्रहों के योग हों परन्तु जीव योग न हो तीनों नक्षत्रों मराशि जन्मराशि का बेध हो बली शुभ ग्रहों का योग न हो गोचर नि अष्टमेश व्ययेश मार्केश नेष्ट हों व आयु पूरी हो गई हो तो ग्रह बलवान हो उसी के धातु रोग से मृत्यु होती है।

पूर्ण चन्द्र शनि के कारण त्रिदोष होता है जिसमें वात कफ प्रधान ता है शनि व रवि में शत्रुता है इस कारण पित्त यकायक दबकर बुखार उतर जाता है। व वात शनि कफ का जोर हो जाता है। शनि चन्द्र से पसीना छूट कर मृत्यु का समय आ जाता है।

इंजीनियर के ग्रह कारक

इलेक्टरी इंजीनियर इलेक्टरी का अग्नितत्त्व है सूर्य मंगल ग्रह हैं इलेक्टरी में प्रकाश सहित अग्नितत्त्व है सूर्य में प्रकाश होते अग्नि तत्त्व है। मंगल में पृथ्वी भी है इलेक्टरी का पृथ्वी से सम्बन्ध है। इससे यह दोनों ग्रह कारक हो के केन्द्र में हो तो इस योग वाला

अच्छा इंजीनियर होता है बाकी ग्रह पूर्वक के समान समझना (२) मकान सड़क पुल वगैरह की इंजीनियर चन्द्र, शनि, मंगल यह कारक हो के केन्द्र में हो तो इस योग वाला मकान सड़क वगैरह का इंजीनियर होता है। बाकी पूर्वोक्त योग (३) जो जंगल खाते का इंजीनियर या जंगल का बड़ा आफिसर चन्द्र, शनि यह दोनों ग्रह हैं। कारण कि वनस्पति का मालिक चन्द्रमा है। जब तक गीली लकड़ी है उसमें रस है उसका मालिक चन्द्र है। इसीलिये उत्तर दिशा का मालिक चन्द्र कहलाता है। उत्तर दिशा में नाना प्रकार का जंगल है। सूखे लकड़ी का शनी मालिक है सूखे लकड़ी के सहतीर दरवाजा मेज या टेबुल आदि बनते हैं उसमें पालिस तेल आदि देते हैं व उसका रूप अच्छा होता है। शनि चन्द्र ये दो ग्रह मुख्य हैं तो कारक होके केन्द्र त्रिकोण में हो तो जंगल का इंजीनियर होता है।

वकील बालिस्टर के योग के ग्रह

राज्य स्थान शुभ युत दृष्ट हो तो पराक्रमेश शष्टेश तथा गुरु कारक बलवान चाहिये दशम स्थान शुभ होने से राज्य में इज्जत होती है। पराक्रमेश अच्छा होने से वकील का दबाव सब पर होता है, शुभ स्थान बलवान होने से मुकद्दमे में दुश्मन का नाश होता है। गुरु अच्छा होने से बुद्धि व वक्तृत्व शक्ति बहस करने में अच्छी होती है। यह चार मुख्य ग्रह हैं। यह अच्छे होने से वकील आदि की जीविका अच्छी चलती है इससे कम योग हो तो कम धन मिलेगा तथा छोटे वकील मुख्तार होंगे।

सन्निपात किस-किस ग्रह से होते हैं

तेरह सन्निपात होते हैं उनमें ६ साध्य और ७ असाध्य सो सूर्य,

चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र ये ग्रह हुये प्रति ग्रह का एक साध्य सन्निपात और दूसरा असाध्य सन्निपात ६ दूना बारह हो गये। एक-एक अच्छा, एक-एक बुरा। तेरहवाँ सन्निपात शनि, राहु, केतु, का होता है। शनि प्रबल जहाँ हो वहाँ साध्य कम रहता है जब २ सूर्य आदि ६ ग्रह मारक हो के बलवान शुभग्रह से सम्बन्ध करते हों तो वह सन्निपात साध्य हो जाता है। (२) जब सूर्य आदि ६ ग्रह मारक हो के क्रूर ग्रह से सम्बन्ध करके कुयोग में शनि, मंगल वार का ज्वर पैदा होता है तब वह सन्निपात असाध्य हो जाता है। कुयोग शनि, मंगल और बुरे नक्षत्र मिलकर जो कुयोग होता है उसमें भी ज्वर आ जाय तो जल्दी अच्छा नहीं होता, तकलीफ होती है। सूर्य मंगल का कुयोग न हो तो आग्रसन होता है वह अच्छा जल्दी होता है।

यद्यपि ग्रहों के योगोंद्वारा अनेक रोगों के अनेक भेद बन जाते हैं तो वास्तव में शान्त विचार से गम्भीर गवेषणा से ग्रहों के द्वारा उत्पन्न हुए रोग और उनकी दैविक और लौकिक चिकित्सा इस विषय में ही काफी स्वतन्त्र ग्रन्थ बन जायेगा। प्रस्तुत पुस्तक में हमने अपने प्रिय पाठकों के लाभार्थ थोड़ा-थोड़ा सब विषयों पर प्रकाश डालने की कोशिश की है। वैसे—

नान्तोऽस्ति निगमाम्बोधेर्यतोऽतः पृथुता भयात्
संक्षिप्तं बाल मोदाय विज्ञानं दर्शितं मया ॥१॥

इति मेरठ मण्डलान्तर्गत कण्डेरा ग्राम निवासिना प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद पं श्री बलदेव सहाय शर्म पौत्रेण पण्डित बहोरी लाल शर्म

पुत्रेण ज्योतिषाचार्येण श्री पं० विशुद्धानन्द शर्मणा गौड़ेन विरचितम्
ज्योति विज्ञानं समाप्तम् ।

ग्रन्थकार परिचयः

काश्यां स्वकीयगुणवर्धित चारुकीर्ते .
मिश्रभिधेय बलदेव गुरोः सकाशात्
लब्ध्वा मया गणित शास्त्रप्रधानविद्या
हृद्याभवेद्धि विदुषां श्रुतिसद्य एव ॥१॥

यस्याद्भुतै गुणगणैर्गणना सुयोगै ।
र्गीर्वाणमा विबुध वन्दितवन्द्य भावा ॥
सा भारती विजयते सुचिरं प्रसन्ना ।
सोऽयं गुरुर्विजयतां 'बलदेव मिश्रः' ।२।

पितामहो होम विधानविज्ञो
वेदान्तदान्तोऽपिचिरं रसज्ञः
विशिष्ट शिष्यै प्रथितोरुकर्मा
लेभे यशः श्री बलदेव शर्मा ॥३॥

सुवासः (कण्डेरा) लसति मय राष्ट्रजिविहितः
कुलेधर्मज्ञाना म जनि बलदेवोऽमरसयः
ततो जातास्तस्य पुथित यशसः पञ्चतनयमाः
द्वितीयस्तन्मध्ये विमलगुण युक्तोममपिता ।४।

'बहोरी लाल पुत्रेण तातयादोय जीविना
मयाऽलेखि विज्ञानं श्री विशुद्धानन्द शर्मणा ।

॥ समाप्त ॥